स्मारिका
2025
उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा
अमित स्मृतियाँ

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, 2025

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के तत्वाधान तथा श्री राजन स्वामी जी के नेतृत्व में आयोजित उत्तर भारत जागनी यात्रा, २०२५ मूलतः एक व्यापक आध्यात्मिक एवं वैचारिक अभियान था, जिसका उद्देश्य निजानन्द दर्शन के प्रकाश से समाज में ज्ञान, आत्मचेतना, धार्मिक समन्वय तथा मानवीय एकता की भावना को पुनर्जीवित करना था। शेरपुर से प्रारम्भ होकर लगभग 60 दिनों तक चली यह यात्रा उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड सहित अनेक क्षेत्रों के लगभग 60 स्थानों तक पहुँची और विविध सामाजिक वर्गों को अपने साथ जोड़ा। यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर धर्म, अध्यात्म, ब्रह्मज्ञान, क्षर-अक्षर-अक्षरातीत, प्रेम-लक्षणा भक्ति, मानव जीवन की सार्थकता तथा एक परमात्मा के प्रति निष्ठा जैसे विषयों पर तारतम वाणी आधारित गहन किन्तु सरल संवाद हुए। इस यात्रा की विशेषता यह रही कि इसमें केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक विरोधाभासों को कम करने, समुदायों को एक सूत्र में बाँधने और बौद्धिक जिज्ञासा को तर्कपूर्ण आध्यात्मिक विमर्श से सम्बोधित करने का प्रयास भी किया गया। पूज्य स्वामी जी के नेतृत्व, अनुशासन, सादगी और सतत कर्मशीलता ने यात्रा को जीवन्त दिशा दी, जबकि आचार्यों, विद्यार्थियों, सेवादारों, मीडिया टीम और स्थानीय सुन्दरसाथ के सामूहिक सहयोग ने इसे जन-आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया। यात्रा का प्रभाव प्रत्यक्ष सभाओं तक सीमित नहीं रहा; साहित्य, संवाद, संगीत तथा सोशल मीडिया के माध्यम से इसके विचार व्यापक समाज तक पहुँचे और आध्यात्मिक संप्रेषण का आधुनिक स्वरूप सामने आया। समग्र रूप से यह यात्रा निजानन्द दर्शन के प्रचार प्रसार का हेतु तो बनी ही लेकिन साथ ही सेवा, समर्पण, वैचारिक जागृति और आध्यात्मिक एकात्मता का ऐसा अनुभव बनी, जिसने सहभागी सुन्दरसाथ, जिज्ञासु जन और सभी जनमानस को केवल धार्मिक प्रेरणा ही नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि में परिवर्तन का सन्देश दिया।

सम्पादक की कलम से -
जागो और जगाओ - एक कालजयी पुकार

'तुम भूलोगी तो हम तुम्हें याद दिलाएँगे, और हम भूलें तो तुम हमें जगाना।'

यह वह अमर वचन है जो ब्रह्मात्माओं और परमधाम के बीच के अटूट सम्बन्ध की साक्षी रहा है। इसी वचन की लाज रखते हुए, इसी पुकार को साकार करते हुए, वर्ष 2025 में पूज्य श्री राजन स्वामी जी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई '60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा'- जिसके अनुभव, भाव और स्मृतियाँ इस स्मारिका के पृष्ठ-पृष्ठ पर जीवंत हैं।

जागनी केवल एक शब्द नहीं, यह हमारी परम्परा की आत्मा है। श्री प्राणनाथ जी ने स्वयं गाँव-गाँव और नगर-नगर भ्रमण करते हुए सोई हुई आत्माओं को जगाने का जो कार्य आरम्भ किया था, वही धारा कभी क्षीण होकर, कभी पुनः प्रखर होकर आज तक अविरल रुप से प्रवाहित है। छठे दिन की जागनी लीला में अनेक परमहंसों से होती हुई यह धरोहर परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी तथा सरकार श्री के बाद अब पूज्य श्री राजन स्वामी जी के हाथों में है जो जागनी की मशाल को लेकर अज्ञानता के घने अन्धकार को चीरते हुए निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

18 अक्टूबर 2025 को धाम चबूतरा, शेरपुर की पावन धरती से जिस यात्रा का शुभारम्भ हुआ, वह उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और उत्तराखण्ड के गाँव-गाँव, नगर-नगर होते हुए 21-22 दिसम्बर को श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना में जाकर विराम को प्राप्त हुई। इन साठ दिनों में केवल भूगोल की दूरियाँ ही नहीं तय हुईं, बल्कि हज़ारों हृदयों में सोई आत्म-चेतना को झकझोरने का, ब्रह्मज्ञान का दीप जलाने का महान कार्य सम्पन्न हुआ।

इस स्मारिका में संकलित अनुभव इस बात के साक्षी हैं कि यह यात्रा किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि एक समूचे परिवार की यात्रा थी। कहीं माताओं-बहनों ने घर-द्वार सजाकर स्वागत किया, कहीं विद्यार्थियों ने वाणी-गायन से वातावरण को भक्तिमय बनाया, कहीं सीमित साधनों के बावजूद सुन्दरसाथ ने तन-मन-धन से सेवा की, तो ज्ञानपीठ की मीडिया-टीम ने रात-रात भर परिश्रम कर इस ज्ञान सरिता को यूट्यूब और फेसबुक के माध्यम से घर-घर तक पहुँचाया।

इस स्मारिका के हर पृष्ठ में एक ही स्वर गूँजता है 'स्वयं जागो,और औरों को जगाओ'। यह यात्रा किसी समापन का नहीं, बल्कि एक निरन्तर चलने वाले जागनी अभियान के एक महत्वपूर्ण पड़ाव का प्रतीक है। धाम में किया गया हमारा कौल यही है — यदि कोई भूले तो दूसरा उसे जगाए। इसलिए पहले स्वयं जागृत होकर औरों को भी जगाना ही हमारा वास्तविक उत्तरदायित्व है।

हम हृदय से आभारी हैं उन समस्त प्रचारकों, आचार्यों, संगीतकारों, वाहन-सेवकों, रिकॉर्डिंग एवं मंच व्यवस्था में लगे सेवाभावी साथियों के, जिन्होंने दिन-रात एक करके इस यात्रा को सफल बनाया। हम आभारी हैं उन सभी सुन्दरसाथ के, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में तन, मन और धन से इस पावन कार्य में सहयोग दिया और अपने अनुभवों को शब्दों में पिरोकर इस स्मारिका को समृद्ध किया।

अन्त में, हमारी विनम्र प्रार्थना है कि धामधनी अक्षरातीत की कृपा की छत्रछाया में जागनी की ज्योति संसार के कोने-कोने तक पहुँचती रहे। जब तक हर आत्मा अपने परमात्मा से मिलन नहीं कर लेती, तब तक यह यात्रा जारी रहेगी, रहनी चाहिए।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

धर्मगुरु दिनेश पण्डित जी

"सुध तो नहीं कछु साथ को, पर तो भी अपने सजन।"

धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार।
जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार।।

इन्द्रावती जी के हृदय धाम में जब युगल स्वरुप विराजमान हुए, उनके मन में जागनी की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। वह तो कहती हैं कि "ए बानी देते मेरा जीव निकसे" लेकिन साथ में यह भी कहती हैं कि "न केहेवाए माया माहें आ वाणी, पण साथ माटो केहेवाणी।" प्रत्येक ब्रह्मात्मा का यह लक्षण है कि वह सबसे पहले राज जी में डूबना चाहती है लेकिन "सुध तो नहीं कछु साथ को, पर तो भी अपने सजन।" कहते हुए सुन्दरसाथ के प्रति अपने कर्तव्य को भी नहीं भूलती है।

राजन स्वामी जी को इस संसार में सबसे प्रिय कार्य है अपनी साधना करना लेकिन जब सुन्दरसाथ और समाज की परिस्थिति को देखते हैं तो अपने मन को दृढ़ करके मैदान में भी उतरते हैं और उनकी इसी दृढ़ता का परिणाम है एक के बाद एक की गयी "जागनी यात्रा"। जिस सुन्दरता और भव्यता के साथ उत्तर भारत की जागनी यात्रा का आयोजन और समापन किया गया, उसके लिये राजन स्वामी जी तथा उनकी टीम बधाई के पात्र हैं।

मैं धर्मगुरु होने के नाते सभी को आशिर्वाद देता हूं तथा एक सुन्दरसाथ के सम्बन्ध से सच्चे हृदय से राज जी से प्रार्थना करता हूँ कि आप जागनी यात्रा में शामिल सभी सुन्दरसाथ पर अपनी कृपा बनाये रखें तथा भविष्य में भी इसी प्रकार की सेवा करने के लिये बल प्रदान करें।

महामति कहे जो होवे धाम की,
सो पेहेचान के लीजो लाहा।

अनिरुद्ध शर्मा (दादाभाई पुजारी जी)
श्री 5 पद्मावती पुरी धाम, पन्ना

जाग दौड़ कीजे सब अंगों,

इन्द्रावती जी वाणी में कहती हैं, ''पिउ जगाए मोहें एकली, मैं जगाऊं बांधे जुत्थ।'' और इस वचन को पूरा करने के लिये उन्होंने अपनी ओर से कोई कसर नहीं रखी। पैदल यात्राएं की, भिक्षा से गुजारा किया। सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, अपमान आदि सब सहन किया। जागनी की सेवा इतनी आसान नहीं है और सेवा के रास्ते में आने वाली कठिनाईयों के कारण ही कहते हैं कि

परमधाम में सेवा का लाभ इसलिये नहीं मिलेगा क्योंकि वहां कठिनाईयां नहीं हैं।
वैसे तो इन्द्रावती जी की तरह ही हरेक सुन्दरसाथ तारतम लेते समय राज जी को वचन देता है कि''ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टि को,तो मैं अंगना नार।'' लेकिन कोई विरला ही इसको दिल से अपनाता है।

> *महामति कहे जो होवे धाम की,*
> *सो पेहेचान के लीजो लाहा।*

परमधाम में सेवा का लाभ इसलिये नहीं मिलेगा क्योंकि वहां एकदिली है और सभी एक दूसरे को रीझाते हैं।
वैसे तो इन्द्रावती जी की तरह ही हर सुन्दरसाथ तारतम लेते समय राज जी को वचन देता है कि''ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टि को,तो मैं अंगना नार।'' लेकिन कोई विरला ही इसको दिल से अपनाता है।
श्री राजन स्वामी जी ने इस वचन की लाज रखने का प्रयास किया और सन् 2005 में ज्ञानपीठ की स्थापना की। इसका लाभ यह हुआ कि धीरे-धीरे जागनी की इस सेवा के लिये प्रचारकों, संगीतकारों, मिडियाकर्मियों और अन्य सेवादारों का एक अच्छा संगठन बन गया।

> *धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार ।*
> *जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार ।।*

हमें बहुत खुशी है कि राजन स्वामी जी एक के बाद एक जागनी यात्राएं कर रहे हैं और इसी क्रम में उन्होंने इस वर्ष उत्तर भारत की जागनी यात्रा की। इसी प्रकार के प्रयासों से ही ज्ञान का प्रकाश फैलता है। यह कर्तव्य केवल राजन स्वामी जी का नहीं अपितु प्रत्येक प्रचारक, महात्मा, गादीपति, आचार्य और साधारण से साधारण सुन्दरसाथ का है कि वह ''तुम सतगुरु दीपक भये, कियो जो आप समान'' की लाज रखे।

हमने जिनसे भी तारतम लिया है, उनका कर्ज उतारने का तरीका ही यही है कि जो हमने लिया है, उसे दूसरों तक पहुंचायें। हमें इस बात की भी बहुत खुशी है कि राजन स्वामी जी ने जागनी यात्रा के समापन के लिये पन्ना जी को चुना।
हम गुम्मट वाले धाम धनी से प्रार्थना करते हैं कि राजन स्वामी जी और उनकी पूरी टीम जिन्होंने दिन-रात एक करके इस जागनी यात्रा को सफल बनाने में अपना योगदान दिया, उन पर अपनी मेहर बनाये रखें और हमेशा जागनी में दौड़ाते रहें।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़ ।

किरण बाला
श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल, वड़ोदरा

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 एक अनुभव

त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदू धरम ।

भारतभूमि को आध्यात्मिक साधना और मोक्ष की भूमि कहा गया है। इसी धरती पर श्री राम और श्री कृष्ण जैसे महापुरुषों की लीलाएँ हुई। परन्तु यदि ऐसी पावन भूमि पर मनुष्य कर्मकाण्ड, मत-मतान्तर और बाहरी आडम्बरों में उलझकर आत्मज्ञान से दूर हो जाय तो जागनी की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी का उद्देश्य जन-जन को आत्म-जागृति और परमात्मा की पहचान की ओर ले जाना है। इसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से जागनी अभियान को व्यापक स्वरूप दिया। वाणी में कहा गया है-

> *जो मेरी सुध दयो औरों को, तित चले तुमारा हुकम ।*

परमधाम में किया गया हमारा कौल भी यही है कि मैं भूलूँ तो तुम जगाना, तुम भूलो तो मैं जगाऊँ। इसी भाव से पहले गुजरात में 105 कार्यक्रमों की जागनी यात्रा हुई जिसने अनेक सुन्दरसाथ को आत्म-जागृति और अक्षरातीत की पहचान की ओर प्रेरित किया।

इसके बाद 60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा का संकल्प लिया गया। यात्रा का शुभारम्भ शेरपुर धाम से परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद और सरकार श्री की प्रेरणा से हुआ। सरसावा के सुन्दरसाथ, ज्ञानपीठ के आचार्यगण, विद्यार्थी, संगीतकार और अनेक सेवाभावी साथियों ने तन, मन और धन से इसे सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पूज्य स्वामी जी की सेवा, निरन्तर यात्राएँ, घण्टों की चर्चाएँ और सुन्दरसाथ के प्रश्नों का समाधान इस अभियान की विशेषता रहे।

उनकी चर्चाओं का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं बल्कि मनुष्य को संसार के मोह से ऊपर उठाकर अपने अखण्ड घर और प्रियतम की पहचान कराना रहा।

इतनी व्यस्त यात्रा के बीच स्वामी जी ने 'भ्रमोच्छेदनम्' ग्रन्थ की रचना भी की, जिसमें समाज में प्रचलित अनेक भ्रान्तियों और प्रश्नों पर प्रमाण एवं तर्क के आधार पर विचार प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रन्थ समाज के लिये उपयोगी सन्दर्भ के रूप में सामने आया।

यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर सुन्दरसाथ ने अद्भुत श्रद्धा और सेवा का परिचय दिया। कई स्थानों पर सीमित साधनों के बावजूद घर-घर जाकर प्रचार किया गया और सुन्दरसाथ का प्रेमपूर्वक स्वागत हुआ।

यात्रा का एक अत्यन्त भावपूर्ण पड़ाव बलिया जिले का 'सिसोटार', पूज्य श्री राजन स्वामी जी की जन्मभूमि, रहा। वहाँ उन्हें देखने के लिये बड़ी संख्या में ग्रामवासी उमड़े। मुख्य पण्डाल भर जाने पर बाहर भी LED स्क्रीन की व्यवस्था करनी पड़ी। स्वामी जी के पुराने शिक्षकों ने भी उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने उन्हें सांसारिक शिक्षा दी थी, अब वे उनसे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।

अन्तिम चरण में यात्रा बनारस होते हुए पन्ना पहुँची। दो दिवसीय कार्यक्रम में वाणी-गायन, चर्चा, चितवनी और यात्रा-अनुभव साझा किये गये। इसी अवसर पर 'भ्रमोच्छेदनम्' का विमोचन भी हुआ। पन्ना के विद्वानों, धर्मोपदेशकों, ट्रस्टीगण और सुन्दरसाथ की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की।

यात्रा समाप्त होते समय वातावरण में समापन से अधिक अगली जागनी यात्रा की प्रतीक्षा दिखायी दे रही थी। सबके मन में एक ही प्रश्न था- अब अगली यात्रा कब होगी?

यह यात्रा हमें पुनः स्मरण कराती है कि केवल स्वयं जागना पर्याप्त नहीं, हमें उस वचन को निभाते हुए दूसरों को भी जगाना है और ब्रह्मवाणी के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाना है।

🙏 प्रणाम जी 🙏

"क्यों न जागो, देख ए सुकन"

संपूर्ण तारतम वाणी उस परमात्मा की प्रेम-पाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो हम सब किसी सूक्ष्म प्रेम-कथा के पात्र हों, और वह दिव्य प्रेमी-नायक हर दिन हमारे लिए संदेश भेज रहा हो। पर विडम्बना यही है—नेत्र होते हुए भी हम उसके भाव नहीं पढ़ पाते, कान होते हुए भी उसकी पुकार नहीं सुनते। उसके वचनों की आहट रोज़ हमारे द्वार पर दस्तक देती है, पर भीतर की निद्रा इतनी गहन है कि हम हल्की-सी करवट भी नहीं लेते।

ज्योति निजानन्दी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 अनुभव

धामधनी अक्षरातीत की वाणी जन-जन तक पहुँचे, हृदयों में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश हो और अज्ञान का अन्धकार दूर हो, इसी उद्देश्य से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के संस्थापक पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने वर्ष 2022-23 में गुजरात में 105 दिवसीय जागनी यात्रा की। उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए 'सुख शीतल करूँ संसार' के भाव से वर्ष 2025 में 60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ हुआ।

परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की कृपा और धामधनी की मेहर से यात्रा शेरपुर से प्रारम्भ होकर उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से होती हुई श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना पहुँची। प्रत्येक स्थान पर सुन्दरसाथ ने अत्यन्त उत्साह, प्रेम और समर्पण के साथ तन, मन और धन से सेवा की। पूज्य स्वामी जी तथा समस्त मण्डली का पुष्पमालाओं और 'श्री प्राणनाथ प्यारे की जय' के उद्घोष से भावपूर्ण स्वागत किया गया।

इस यात्रा में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों, आचार्यों, संगीतकारों, वाहन-सेवकों, रिकार्डिंग एवं मंच व्यवस्था में लगे सेवाभावी साथियों का योगदान विशेष रूप से सराहनीय रहा। सभी ने एक परिवार की तरह निष्ठापूर्वक सेवा की।

यात्रा का अत्यन्त भावपूर्ण पड़ाव बलिया जिले के सिसोटार ग्राम, पूज्य श्री राजन स्वामी जी की जन्मभूमि, में रहा। 18 वर्ष की अल्पायु में घर-परिवार छोड़कर पूर्णब्रह्म की खोज में निकलने वाले उसी बालक को वर्षों बाद अपने बीच देखकर ग्रामवासियों की आँखों में अपार प्रेम और भाव उमड़ पड़ा। विशाल पण्डाल के साथ बाहर भी स्क्रीन लगाई गयीं ताकि अधिक से अधिक लोग ब्रह्मज्ञान का लाभ ले सकें। स्वामी जी की माताजी की आँखों से बहते आनन्द के आँसू उस क्षण की भावुकता को शब्दों से कहीं अधिक व्यक्त कर रहे थे।

यात्रा का अन्तिम पड़ाव श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना स्थित श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र रहा। यहाँ विभिन्न विद्वानों, धामी परिवारों और समाज के प्रतिनिधियों ने यात्रा की प्रशंसा करते हुए भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों को निरन्तर आगे बढ़ाने का आग्रह किया। विशेष बात यह रही कि लगातार यात्रा, प्रवचन और व्यस्तताओं के बीच पूज्य स्वामी जी ने मात्र 35 दिनों में 'भ्रमोच्छेदनम्' ग्रन्थ की रचना कर समाज को एक महत्वपूर्ण उपहार दिया। यह ग्रन्थ समाज में व्याप्त अनेक भ्रान्तियों और आध्यात्मिक संशयों के समाधान का सार्थक प्रयास है। इसका विमोचन पन्ना में विद्वतजनों एवं धामी समाज की उपस्थिति में हुआ।

इस यात्रा का समापन वास्तव में अन्त नहीं बल्कि जागनी अभियान का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। धाम में किया गया हमारा कौल यही है कि यदि कोई भूले तो दूसरा उसे जगाये इसलिये पहले स्वयं जागृत होकर दूसरों को भी जगाना ही हमारा वास्तविक उत्तरदायित्व है।

> *इत परीछा प्रगट,उठावें अपना भार।*
> *बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद भरतार।।*

यही इस जागनी यात्रा का वास्तविक सन्देश है- स्वयं जागें, दूसरों को जगाएँ और ब्रह्मवाणी के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाएँ।

🙏 *प्रणाम जी* 🙏

आचार्य सुभाष जी

*एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।
इश्क याही सों आवही, याही सों होइए सनमुख ।।*

आत्मिक जागृति से समाज-जागृति की ओर

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

मानव जीवन केवल भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिये नहीं मिला है। मनुष्य के भीतर एक दिव्य चेतना विद्यमान है, जो उसे सत्य, ज्ञान, प्रेम, करुणा और आत्मबोध की ओर प्रेरित करती है। इसी चेतना के जागरण को हम 'आत्मिक जागृति' कह सकते हैं।आत्मिक जागृति का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड अथवा बाहरी आडम्बर नहीं बल्कि अपने वास्तविक स्वरूप, जीवन के उद्देश्य और अपने कर्तव्यों को समझना है। जब मनुष्य के भीतर ज्ञान का दीप प्रज्वलित होता है, तभी विवेक, आत्मसंयम, नैतिकता और सेवा की भावना विकसित होती है। यही परिवर्तन व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज तक पहुँचता है।

आज समाज में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ, अन्धविश्वास, नैतिक पतन और आध्यात्मिक रिक्तता दिखायी देती है। इनका स्थायी समाधान केवल बाहरी व्यवस्थाओं से सम्भव नहीं है। वास्तविक परिवर्तन तब आता है जब मनुष्य की सोच, संस्कार और जीवन दृष्टि बदलती है। इसीलिये ज्ञान-चर्चा, आत्मचिन्तन और जागनी जैसे अभियानों की आवश्यकता है।

ज्ञान ही जागृति का सबसे प्रभावी साधन है। ज्ञान मनुष्य को केवल सुनी-सुनायी बातों का अनुसरण करने के बजाय प्रश्न करना, विचार करना और सत्य की खोज करना सिखाता है। ज्ञान से विवेक उत्पन्न होता है और विवेक हमें सत्य-असत्य का निर्णय करने की क्षमता देता है।

श्री ब्रह्मवाणी का कथन है- जागनी का वास्तविक भाव मनुष्य को उसके आत्मिक स्वरूप और निज सुख की स्मृति कराना है।समाज की उन्नति के लिये केवल पुरुषों का जागृत होना पर्याप्त नहीं है।

*याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे ।
तारतम सब सुख देवहीं, विध-विध अलेखे ।।*

स्त्री और पुरुष दोनों को ज्ञान, आत्मचिन्तन और आध्यात्मिक उन्नति के समान अवसर मिलने चाहिये। इसी प्रकार बच्चों और युवाओं को केवल रोजगारपरक शिक्षा देना पर्याप्त नहीं, उन्हें सत्य, करुणा, अनुशासन, सेवा, आत्मसंयम और श्रेष्ठ संस्कार भी देने होंगे। बच्चे उपदेश से अधिक हमारे आचरण से सीखते हैं, इसलिये परिवार और समाज को स्वयं उनके सामने उदाहरण बनना होगा। धर्म का वास्तविक अर्थ केवल अनुष्ठान नहीं बल्कि जीवन में सत्य, प्रेम, सेवा, आत्मानुशासन और उत्तरदायित्व को धारण करना है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मत, मन्त्र और प्रतिष्ठा के विवादों से ऊपर उठकर यह विचार किया जाय कि श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान और एक परमात्मा की पहचान का सन्देश जन-जन तक कैसे पहुँचे।

मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ है। यह केवल खाने, सोने, धन कमाने, परिवार चलाने अथवा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये नहीं मिला है। इसकी वास्तविक सार्थकता स्वयं को जानने, अपनी चेतना को जागृत करने और परमात्मा की ओर बढ़ने में है।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के तत्त्वावधान में आयोजित जागनी यात्रा ने गाँव-गाँव और नगर-नगर पहुँचकर इसी आत्मिक चेतना को जगाने का प्रयास किया। ज्ञानपीठ के आचार्यगण, संगीत एवं वाणी सेवक और विभिन्न स्थानों के सुन्दरसाथ ने अपने समय, श्रम और साधनों से इस कार्य में सहयोग दिया।

इस जागनी का उद्देश्य किसी एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहना चाहिये। ऐसे ज्ञानपरक आयोजन निरन्तर होते रहें, जहाँ जिज्ञासु प्रश्न कर सकें, ब्रह्मवाणी का मन्थन कर सकें और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य पर विचार कर सकें।

आज आवश्यकता किसी बाहरी क्रान्ति से अधिक 'आन्तरिक जागरण' की है।

जब व्यक्ति जागेगा तो परिवार जागेगा, परिवार जागेगा तो समाज जागेगा और समाज जागेगा तो मानवता में नयी चेतना का संचार होगा।

अज्ञान से ज्ञान की ओर, विभाजन से एकता की ओर और बाहरी आडम्बर से आत्मिक जागृति की ओर बढ़ना ही जागनी का वास्तविक उद्देश्य है।

प्रणाम जी ।

🙏 *प्रणाम जी* 🙏

आचार्य शशांक जी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

जागनी कार्य
परमधाम की पुकार और ब्रह्मात्माओं का जागरण

बिहारी जी के रोकने और अनेक बाधाओं के बावजूद श्रीजी नौतनपुरी से जागनी कार्य के लिये निकल पड़े। वे जानते थे कि यह मार्ग सरल नहीं है, फिर भी अपनी आत्माओं को संसार के दु:ख और अज्ञान से जगाने के लिये उन्होंने कठिन यात्राएँ की। पन्ना जी पहुँचते-पहुँचते लगभग पाँच हजार सुन्दरसाथ ने उन्हें अपने धामधनी के रूप में पहचाना और स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर दिया।

इसके बाद भी अनेक परमहंसों ने अपने-अपने समय में जागनी की इस ज्योति को आगे बढ़ाया और ब्रह्मात्माओं को परमधाम की पहचान करायी।

आज उसी समर्पण की झलक पूज्य श्री राजन स्वामी जी के जागनी कार्य में दिखायी देती है। गुजरात में सौ दिनों से अधिक की यात्रा के बाद उत्तर भारत में लगभग साठ दिनों तक निरन्तर जागनी कार्यक्रम हुए। सम्मान हो या विरोध दोनों परिस्थितियों में उनका संकल्प और समभाव विशेष रूप से प्रेरणादायी रहा।

उत्तर भारत की यात्रा में भी अनेक कठिनाइयाँ आयी, परन्तु वे जागनी कार्य को रोक नहीं सकीं। सीमित साधनों के बावजूद सुन्दरसाथ का प्रेम, उत्साह और समर्पण अद्भुत रहा। सभी ने अपने सामर्थ्य के अनुसार तन, मन और धन से सेवा कर इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग दिया।

इस यात्रा का सबसे सुन्दर अनुभव सुन्दरसाथ के बीच का आत्मिक अपनापन रहा। पहली बार मिलने पर भी ऐसा अनुभव होता था मानो हम पहले से एक-दूसरे को जानते हों। यह प्रेम और निकटता परमधाम के उसी पुराने आत्मिक सम्बन्ध की स्मृति जगाती है।

पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में रहना और विभिन्न स्थानों के सुन्दरसाथ से मिलना अपने आप में एक सौभाग्य है। अलग-अलग स्थानों पर जन्मी आत्माएँ जब धामधनी के कार्य के लिये एकत्र होती हैं तब यह केवल सामान्य मिलन नहीं बल्कि आत्मिक सम्बन्धों के पुनर्जागरण जैसा अनुभव होता है।

अब हमारा दायित्व है कि हम अपने-अपने स्थान पर श्री तारतम वाणी का अध्ययन करें, स्वयं जागें और जागनी कार्य में सक्रिय रूप से जुड़ें। साथ ही पूज्य श्री राजन स्वामी जी के इस अभियान में तन, मन और धन से सहयोग दें, ताकि ब्रह्मवाणी का प्रकाश विश्वभर में पहुँचे और अधिक से अधिक आत्माएँ श्री राज-श्यामा जी की पहचान कर अपने निजधाम की ओर अग्रसर हों।

🙏 प्रणाम जी 🙏

श्रीमती ऋता श्रीवास्तव जी, पंचकुला

यह अनुच्छेद उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025-2026 का ब्यौरा - मेरा समर्पण है।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी के दृढ़ संकल्प और सत्य निष्ठा से सम्पन्न हो सकी उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा का उद्देश्य न केवल शहरी स्थानों अपितु गाँव-गाँव सुन्दरसाथ तथा प्रेमी जन तक श्री राजजी की वाणी का सन्देश पहुँचाना था।

यात्रा का आरम्भ 18 अक्टूबर 2025 को पूज्य स्थान शेरपुर से हुआ, मन्दिर के प्रांगण में सुन्दरसाथ श्री रामरतन दास जी को नमन करके ही आगे बढ़े। एक पण्डाल में गाँव के सुन्दरसाथ ने श्री राजन स्वामी जी, पन्ना जी से पधारे अनेक विद्वान, आचार्यगण तथा ज्ञानपीठ के छात्रों का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी ने सुन्दरसाथ के अनेक प्रश्नों का समाधान तारतम वाणी तथा अनेक ग्रन्थों के प्रमाणों द्वारा किया। सात्त्विक भोजन तथा फलाहार भी व्यवस्थित और सुचारू रूप से सभी को प्राप्त हुआ।
अनेक स्थानों पर यात्रा पूरे जोश के साथ चलती रही। गाँव-गाँव में भी आयोजन वृहद था, जबकि कई स्थानों पर साधनों की कमी रहते हुए भी विनम्रता और लगन देखते ही बनती थी। कई पुरातन मन्दिरों का दुर्लभ दर्शन मिला।

यहाँ हमारे स्वामी जी, विद्वान, आचार्यगण, ज्ञानपीठ के छात्र तथा सुन्दरसाथ बहनों तथा भाईयों का योगदान अभूतपूर्व था। देर रात की चर्चा, यात्रा की दिनचर्या का अभिलेखन तथा इंटरनेट पर सभी को सुलभ रूप से चर्चा का लाभ देने के लिये - बहुत मेहनत से कार्य होता था। गायन, वादन, अभिलेखन, संशोधन इत्यादि कार्य साथ-साथ चल रहे थे। बहुत सारे सुन्दरसाथ ने तारतम ग्रहण किया, वाणी का रस लिया तथा वे ज्ञानपीठ की अनेक पुस्तकों को प्राप्त कर लाभान्वित हुए।

श्री राजन स्वामी जी जैसे त्यागी, कर्मठ, मृदुभाषी सन्त हमारे समाज में एक ध्रुव तारे की तरह हैं जो सबको जगाकर वाणी द्वारा राज जी से एकाकार होने का सरल मार्गदर्शन करवा रहे हैं। यह यात्रा अपने अन्तिम पड़ाव पर श्री पन्ना धाम पहुंची, जहाँ बृहद कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पन्ना जी के अनेक विद्वान पुजारीगण, धामी सुन्दरसाथ ने हिस्सा लिया।
यदि आप भी अपनी आत्मा को जगाना चाहते हैं तो SPJIN app पर जाकर वाणी का टीका पढ़ें जो 133 भाषाओं में उपलब्ध है और संगीत तथा चर्चा का रस लीजिये। मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि कोई भूल हो तो क्षमा करें।

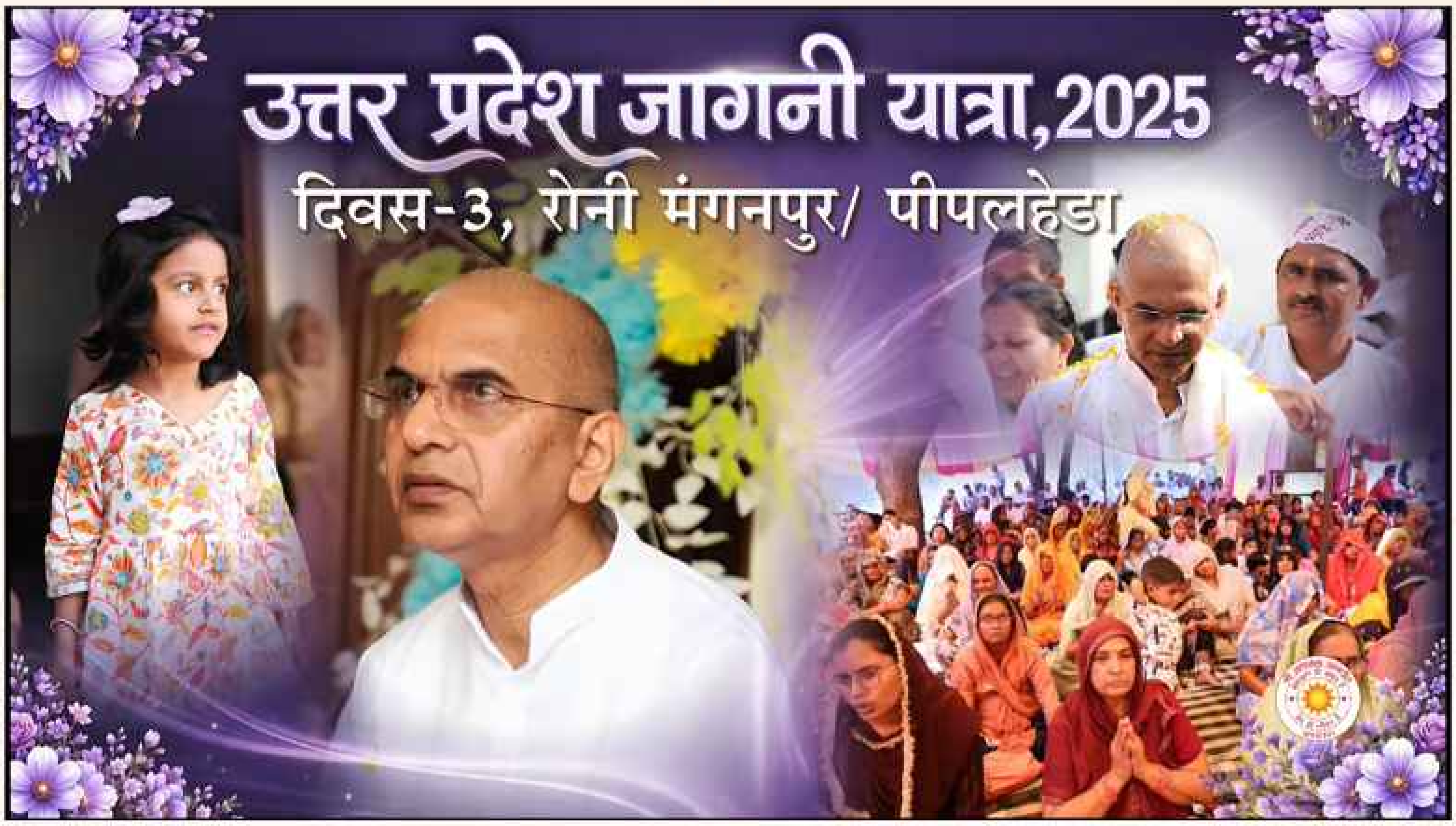

अंदर जागके चेतिये, ए अवसर अधखिन

जीवन का अवसर ऐसा है जैसे ओस की एक बूंद, जो पत्ते पर टिकी तो है, पर हवा का एक हल्का सा झोंका आए और वह मिट्टी में समा जाए। कितना क्षणभंगुर है जीवन? भाग्यशाली हैं वे हृदय, जो इस क्षणभंगुर अवसर में भी शाश्वत को पुकार लेते हैं।उत्तर भारत की जागनी यात्रा का बारम्बार यही आह्वान है - "उठो, स्वयं को जगाओ।यह जीवन यूँ ही बीत न जाए।" हम इस क्षणभंगुरता के मध्य अनंत की ओर एक कदम बढ़ाएँ। हम अपने भीतर के आलोक और आनंद रूपी परमात्मा को पुकारें। हम अपने जीवन को ऐसी दिशा दें, जहाँ शांति है, सत्य है, और वह प्रेम है जो कभी खोता नहीं!

आओ, इस छोटी सी बूंद जैसे जीवन में अनंत का सागर खोजें। आओ, जागें। आओ, लौट चलें उस ओर जहाँ से हम आए हैं।

डॉ बबीता त्यागी
(योगाचार्या)

मेरी जागनी यात्रा का एक अविस्मरणीय अध्याय

पूज्य स्वामी जी एवं समस्त सुन्दरसाथ के चरणों में प्रणाम। वर्ष 2025 के वार्षिकोत्सव में जब उत्तर भारत जागनी यात्रा की घोषणा हुई, तभी मन में था कि जहाँ सम्भव होगा, इस यात्रा में सम्मिलित होकर इसका लाभ लूँगी। परन्तु मैंने कभी नहीं सोचा था कि नोएडा के कार्यक्रम की पूरी जिम्मेदारी ही मुझे मिल जायेगी।

एक दिन प्रातः पूज्य श्री राजन स्वामी जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि नोएडा में जागनी यात्रा का कार्यक्रम अब आप संभालिये। एक क्षण के लिये जिम्मेदारी बड़ी लगी, परन्तु भीतर विश्वास था कि राजजी और सतगुरु का आशीर्वाद साथ है।

मैंने तुरन्त आसपास की 8-10 सखियों से सम्पर्क किया। प्रारम्भ में प्रश्न उठा कि बिना पुरुष सदस्यों के बिना इतना बड़ा आयोजन कैसे होगा लेकिन सभी ने मिलकर सेवा का संकल्प लिया। भोजन, रंगोली, सजावट, प्रचार-प्रसार और अन्य व्यवस्थाएँ बाँटी गयी। प्रतिदिन बैठकें होने लगी और देखते ही देखते आवश्यक आर्थिक सहयोग भी सहज रूप से एकत्र हो गया।

कार्यक्रम की तिथि 16 नवम्बर 2025, रविवार निश्चित हुई। बहुत कम प्रयास में ही उचित बजट में सुन्दर कम्युनिटी सेंटर, कैटरिंग और टेंट की व्यवस्था हो गयी। हमने पैम्फलेट और बैनर के साथ घर-घर जाकर लोगों को व्यक्तिगत निमन्त्रण दिया। एक योग शिक्षिका होने के कारण क्षेत्र के अनेक परिवारों से मेरा परिचय था, जिसका प्रचार में अच्छा लाभ मिला।

अन्ततः वह शुभ दिन आया। प्रातः पूज्य स्वामी जी मेरे घर पधारे। घर और मार्ग को रंगोलियों से सजाया गया तथा पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया। मेरी बड़ी बेटी विधि ने उनके लिये सरल और सात्त्विक भोजन तैयार किया, जिसे स्वामी जी ने प्रेमपूर्वक ग्रहण किया।

दोपहर लगभग 2 बजे कम्युनिटी सेंटर में मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बड़ी संख्या में सुन्दरसाथ और धर्मप्रेमी उपस्थित थे। पूज्य स्वामी जी ने चितवनी और ध्यान के महत्व को समझाते हुए कहा कि परमात्मा की वास्तविक अनुभूति के लिये मन को भीतर की ओर ले जाना आवश्यक है। उनकी चर्चा ने उपस्थित लोगों को गहरे आत्मचिन्तन की ओर प्रेरित किया। कार्यक्रम के बाद सभी ने अनुशासनपूर्वक भोजन-प्रसाद ग्रहण किया।

इस यात्रा का मेरे लिये सबसे प्रेरक अनुभव स्वामी जी का समर्पण था। निरन्तर यात्रा और कार्यक्रमों के बाद भी वे देर रात तक ग्रन्थ-लेखन करते रहे। रात्रि में जब मेरी आँख खुली, तब भी वे शान्त भाव से लेखन में लगे थे। उस क्षण अनुभव हुआ कि जो स्वयं दूसरों को अज्ञान की नींद से जगाने के लिये इतना परिश्रम कर रहा है, उसका जीवन वास्तव में सेवा और जागनी को समर्पित है।

अगली सुबह जब उनके प्रस्थान का समय आया तो हम सभी का मन भावुक हो उठा। वे अपने आशीर्वाद और स्नेह की अमिट स्मृति हमारे घर और हृदय में छोड़कर आगे की यात्रा के लिये प्रस्थान कर गये।

जिस जागनी यात्रा में मैंने केवल एक सहभागी बनने की कल्पना की थी, राजजी की कृपा से उसी यात्रा ने मुझे सेवा, नेतृत्व और सामूहिक संकल्प का अनुभव करा दिया। सबसे बड़ी सीख यह रही कि श्रद्धा, एकता और सेवा-भाव हो तो सीमित साधनों में भी बड़ा कार्य सम्भव है।

सरोज, सहारनपुर

जागनी यात्रा के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव

प्रेम प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।
मुझे भी उत्तर भारत जागनी यात्रा में सम्मिलित होने और अपने कुछ अनुभव साझा करने का सौभाग्य मिला। यात्रा 18 अक्टूबर 2025 को शेरपुर से प्रारम्भ हुई। वहाँ धाम चबूतरे पर लगभग तीन घण्टे तक प्रश्नोत्तर और शंका-समाधान का अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने शास्त्रों और वाणी के आधार पर बड़े प्रेम से सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया।
इसके बाद बड़गाँव, दिल्ली NCR, रतनपुरी, अम्बाला, यमुनानगर, पटियाला और अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में यात्रा आगे बढ़ती गयी। कहीं सुविधाएँ बहुत सीमित थी, कहीं रास्ते अत्यन्त कठिन थे, परन्तु सुन्दरसाथ का उत्साह और सेवा-भाव हर कठिनाई से बड़ा था। ऐसे अवसरों पर बार-बार श्रीजी की यात्राओं का स्मरण होता था कि उन्होंने भी कठिन परिस्थितियों में हजारों साथियों के साथ जागनी का कार्य किया होगा।

यात्रा का सबसे भावपूर्ण अनुभव पूज्य स्वामी जी की जन्मभूमि, बलिया क्षेत्र में हुआ। पूरा गाँव उनके दर्शन के लिये उमड़ पड़ा। अपना घर पास होने के बावजूद स्वामी जी अपने संकल्प और कार्यक्रम में ही रहे। बाद में उनकी माताजी से मिलने और वह कमरा देखने का अवसर मिला जहाँ वे बचपन में अध्ययन और ध्यान किया करते थे। माताजी ने उनके बचपन की अनेक स्मृतियाँ साझा की। उनकी आँखों में आनन्द के आँसू थे। उनकी एक बात मेरे हृदय को विशेष रूप से छू गयी - हमार बबुआ तो भगवान बन गये हैं।

स्वामी जी के पुराने शिक्षक और प्रधानाचार्य भी उनसे मिलने आये। वे उनके पास नीचे बैठ गये। स्वामी जी ने उन्हें बराबर बैठने का आग्रह किया, परन्तु उन्होंने भावपूर्वक कहा कि पहले हम आपको शिक्षा देते थे, अब आप हमें दिव्य ज्ञान दीजिये। यह दृश्य अत्यन्त प्रेरक था।

अन्ततः यात्रा श्री पन्ना जी ज्ञानकेन्द्र पहुँची, जहाँ इसका एक महत्वपूर्ण पड़ाव सम्पन्न हुआ। वहीं पूज्य स्वामी जी द्वारा यात्रा के दौरान लिखी गयी पुस्तक भ्रमोच्छेदनम का विमोचन हुआ। निरन्तर यात्रा और कार्यक्रमों के बीच भी उन्होंने रात्रि और प्रातःकाल के समय इस ग्रन्थ को लिखकर तैयार किया। पन्ना के पुजारीगण, ट्रस्टीगण और विद्वानों ने इसे सम्मानपूर्वक स्वीकार किया। मेरे मतानुसार यह पुस्तक पूरे प्रणामी समाज के लिये एक महत्वपूर्ण उपहार है क्योंकि इसमें समाज से जुड़े अनेक प्रश्नों और भ्रान्तियों पर प्रमाण सहित विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

इस यात्रा के अनुभव इतने अधिक हैं कि सबको शब्दों में समेटना कठिन है। जहाँ-जहाँ यात्रा पहुँची, वहाँ प्रेम, सेवा, ज्ञान और जागनी की एक नयी ऊर्जा दिखायी दी। इन्हीं कुछ भावों को स्वीकार करें।
प्रेम प्रणाम जी।
आपकी चरणरज

सुनीता भगत
(दिल्ली)

उत्तर भारत जागनी यात्रा

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी, सादर प्रणाम जी।

60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ पावन श्री शेरपुर आश्रम से हुआ और इसका अन्तिम पड़ाव श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना रहा। इस बीच अनेक गाँवों, नगरों और महानगरों में ब्रह्मवाणी का सन्देश पहुँचा। दिल्ली में भी तीन दिनों तक इस यात्रा का लाभ प्राप्त हुआ, जिसमें पूज्य श्री राजन स्वामी जी के साथ ज्ञानपीठ के आचार्यगण और विदुषी बहनों ने सहभागिता की। इन चर्चाओं का मुख्य विषय था, आत्म-जागृति क्या है और मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? जागनी का अर्थ केवल शरीर का जागना नहीं बल्कि अज्ञान में सोये जीव को उसकी वास्तविक पहचान और एक परमात्मा की ओर उन्मुख करना है। जब भीतर परमात्मा के प्रति प्रेम जागता है, तब अज्ञान का अन्धकार मिटने लगता है और हृदय में राज जी की छवि दृढ़ होती है।

दिल्ली के कार्यक्रमों में अनेक मूल प्रश्नों पर चर्चा हुई- श्री प्राणनाथ जी कौन हैं? भगवान और परमात्मा में क्या अन्तर है? परमात्मा साकार है या निराकार? मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मृत्यु के बाद कहाँ जाना है? परमात्मा का स्वरूप, धाम और लीला क्या है? पूज्य स्वामी जी ने इन प्रश्नों का धर्मग्रन्थों और श्री तारतम वाणी के प्रमाणों के साथ सरल भाषा में समाधान किया।

गीता के आधार पर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की विवेचना भी की गयी। ज्ञानपीठ तथा दिल्ली के युवाओं द्वारा प्रस्तुत वाणी-कीर्तन ने कार्यक्रम को और अधिक भावपूर्ण बना दिया।

अन्तिम दिन अस्वस्थ होने के बावजूद पूज्य स्वामी जी ने चर्चा जारी रखी। उनके आचरण से यह प्रेरणा मिली कि कठिनाइयाँ आने पर भी जागनी पथ पर दृढ़ रहना चाहिये। जीवन में ईमान, इश्क, शुक्र, गरीबी और सब्र जैसी अमूल्य निधियों को व्यवहार में उतारना आवश्यक है। तभी हृदय प्रेम का वास्तविक सिंहासन बन सकता है- 'ल्याओ प्यार, करो दीदार।'

इस यात्रा का सन्देश केवल सुनने तक सीमित न रहे। हमें आपसी मतभेद, जातिगत संकीर्णता और अहंकार से ऊपर उठकर सभी में परमात्मा की छवि देखने का प्रयास करना चाहिये। प्रेम, एकता और सेवा के साथ ब्रह्मवाणी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाना ही इस जागनी अभियान की वास्तविक सफलता होगी।

पूज्य स्वामी जी इस मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हैं। हमारा भी कर्तव्य है कि तन, मन और धन से सहयोग करते हुए अखण्ड सेवा के सुख में सहभागी बनें।

यही प्रार्थना है कि ऐसी जागनी यात्राएँ निरन्तर चलती रहें और श्री प्राणनाथ जी का प्रेम एवं ब्रह्मवाणी का प्रकाश सम्पूर्ण संसार तक पहुँचे।।

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सुहागिन जोग

ए सुख देऊ ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अंगना नार

इस वचन पर श्रद्धा रखने वाला प्रत्येक सुन्दरसाथ जागनी यात्रा की प्रगति देखकर हर्ष और आनंद से भर उठा है, क्योंकि उसके प्रियतम की महिमा चारों ओर प्रसारित हो रही है । निस्संदेह इसका नेतृत्व पूज्य स्वामी जी ने किया, पर इसकी सफलता में हर सेवाभावी और श्रद्धावान सुन्दरसाथ का अमूल्य योगदान है । आप सभी की निष्ठा, सेवा और प्रेम इस यात्रा को सुंदर अर्थ और ऊँचाई दे रहे हैं । यह वास्तव में एकत्व और आत्मजागृति का दिव्य प्रमाण है।

चित्रा प्रणामी,
नोएडा

माया में लाहा लेऊँ धनी का

जागनी यात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप और परमात्मा से उसके सम्बन्ध की पहचान कराने का पावन अभियान है। पूज्य श्री राजन स्वामी जी के निर्देशन में सम्पन्न उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा के माध्यम से जन-जन तक यह सन्देश पहुँचाया गया कि मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ है और इसका सर्वोत्तम उपयोग आत्म-जागृति में है।

ब्रह्मज्ञान का उद्देश्य ब्रह्मसृष्टि को अपने अखण्ड घर परमधाम की पहचान कराना, ईश्वरी सृष्टि को सत्य का बोध देना और जीव सृष्टि को अखण्डता की दिशा दिखाना है।

> "महामति कहे जो होवे धाम की,
> सो पेहेचान के लीजो लाहा।"

विक्रम सम्वत् 1722 में दीपबन्दर में श्री जयराम भाई कंसारा जी की जागनी के समय श्रीजी ने कहा- याद करो अपनी बुनियाद। अर्थात् हमें स्मरण करना है कि हम कौन हैं, कहाँ से आये हैं और किस गिरोह के साथी हैं। अज्ञान, भ्रम और सांसारिक मोह से निकालकर हमारे हादी सतगुरुहमें वाणी और चर्चा के माध्यम से सत्य तथा प्रेम का बोध करवाना चाहते हैं। यह दुर्लभ अवसरबार-बार मिलने वाला नहीं है।

परब्रह्म अक्षरातीत की पहचान केवल ज्ञान से नहीं बल्कि हमारी रहनी और आचरण से प्रकट होती है। वाणी हमें आलस्य, प्रमाद और लापरवाही छोड़कर जाग्रत जीवन जीने की प्रेरणा देती है-

> "धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार।
> जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार।।

पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में मुझे चितवनी और ध्यान के महत्व को निकट से समझने का अवसर मिला। नियमित ध्यान से भीतर श्रद्धा, विश्वास और आत्मिक आनन्द बढ़ता है। जब संसारका आकर्षण कम होने लगता है तभी वास्तविक पहचान की दिशा खुलती है -

जब सत सुख लाग्यो रंग,
तब क्यों रहे झूठे को संग।

धामधनी से यही प्रार्थना है कि ऐसी जागनी यात्राओं में सम्मिलित होने का अवसर बार-बार मिलता रहे, प्रत्येक सुन्दरसाथ के हृदय में ब्रह्मज्ञान की ज्योति प्रज्वलित हो और निजानन्द का अनुभव जागृत हो। तभी वाणी का यह भाव सार्थक होगा - इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।

श्रेयस वाघेला
कर्नाटक

जागनी यात्रा 2025

मुझे स्वामी जी के साथ यात्रा करने का सौभाग्य दोबारा मिला। यात्रा के दौरान बहुत से लोगों से उनकी आध्यात्मिक प्रगति के बारे में बात करने के बाद कुछ बातें और अनुभव मेरे सामने आये, जिनको मेरी अन्तरात्मा पूर्ण सत्य मानती है। मैं वही बातें आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

1 - चर्चा या वाणी पढ़ते और सुनते समय कोई एक चौपाई या चरण ऐसा हृदय को छू जाता है कि उसके अलावा कोई दूसरी चैपाई अच्छी नहीं लगती। वह चरण भीतर ही भीतर लगातार गूंजता रहता है। जब भी ध्यान जाता है, वही चैपाई मन में चलती हुई महसूस होती है। तब ऐसा लगता है कि पूरी वाणी में इससे अधिक गूढ़ और सुन्दर बात कोई हो ही नहीं सकती। उस समय एक अलग ही आनन्द की अनुभूति होती है।

2 - सांसारिक मर्यादा और रीति-रिवाजों के कारण आप परिवार को प्राथमिकता दे सकते हैं लेकिन मन के भीतर आप हमेशा राज जी या स्वामी जी को सबसे ऊपर स्थान देंगे। कम से कम इतना होना स्वाभाविक और आवश्यक है। मन में हमेशा यह भावना बनी रहती है कि सब कुछ छोड़कर राज जी को पाने के लिये निकल जाना चाहिये। यदि यह भावना केवल कुछ समय के लिये आती है तो सम्भव है कि वह बाहरी परिस्थितियों का प्रभाव हो, दिल की सच्ची आवाज नहीं। लेकिन यदि यह भावना निरन्तर बनी रहती है और सुख-दुःख से प्रभावित नहीं होती तो समझिये कि वास्तव में आपके भीतर राज जी को पाने की सच्ची चाहत है।

3 - मन में हमेशा यह भावना रहती है कि राज जी और जागनी के कार्य में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दूँ। यदि ऐसा नहीं कर पाते तो भीतर एक घुटन सी महसूस होती है। जब आप स्वयं को राज जी के कार्य में असफल देखते हैं तो उसका कारण/उत्तर खोजने का प्रयास अवश्य करते हैं लेकिन उसका समाधान कहीं नहीं मिलता और धीरे-धीरे यह घुटन और बढ़ती ही जाती है।

4 - संसार की वासनाओं और आध्यात्मिक उपलब्धि के बीच मन हमेशा उलझा रहता है। कभी एक पक्ष भारी पड़ता है तो कभी दूसरा। यह द्वन्द्व समय के साथ और गहरा होता जाता है। चाहे आध्यात्मिक उपलब्धि तुरन्त न मिले, फिर भी संघर्ष रुकता नहीं। इन्सान माया से हारता है लेकिन फिर उतनी ही दृढ़ता से खड़ा भी हो जाता है। यदि टूटकर गिर भी जाय, तब भी वह माया के सामने हार स्वीकार नहीं करता और फिर से अध्यात्म की पहली सीढ़ी चढ़ना शुरू कर देता है, चाहे उसे लाख बार शून्य से शुरुआत क्यों न करनी पड़े।

प्रणाम जी

शैलेष जी,
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ छात्र,
सरसावा

जागनी यात्रा
ज्ञान से जीवन तक

आप सभी सुन्दरसाथ को प्रणाम करते हुए अपने कुछ भाव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जैसे सूर्य अन्धकार को चीरकर प्रकाश फैलाता है, वैसे ही ब्रह्मज्ञान अज्ञान के अन्धकार को दूर कर परम सत्य की पहचान कराता है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, भागवत, कुरान और बाइबल जैसे धर्मग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक संकेतों को समझकर जीवन में प्रेम, ज्ञान, सेवा, विनम्रता और करुणा को उतारना ही वास्तविक साधना है।

हमारे समाज में अनेक परमहंस हुए, जिनके जीवन में निजानन्द का यह स्वरूप प्रत्यक्ष दिखायी देता है- परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी, मंगल गुरु जी, जवाहर दास जी, बाबा दयाराम जी, दयाल दास जी, गोपालमणि जी, युगलदास जी तथा ब्रह्ममुनि सरकार श्री। इन महापुरुषों की परम्परा हमें यह प्रश्न पूछने के लिये प्रेरित करती है कि क्या हम भी केवल उनके इतिहास को ही पढ़ेंगे या उनके प्रेम, ज्ञान और सेवा को अपने जीवन में भी उतारेंगे?

आज आवश्यकता है कि भोग-विलास, धन और बाहरी प्रदर्शन को जीवन का लक्ष्य न मानकर प्रेम, ज्ञान, करुणा, विनम्रता और सन्तोष को महत्व दिया जाये। यही निजानन्द की वास्तविक सुगन्ध है।

परमहंसों के आशीर्वाद, सरकार श्री की प्रेरणा और पूज्य श्री राजन स्वामी जी के मार्गदर्शन में वर्ष 2023 में गुजरात तथा 18 अक्टूबर से 21 दिसम्बर 2025 तक उत्तर भारत में जागनी यात्राएँ आयोजित हुई। इन यात्राओं में ब्रह्मवाणी का सन्देश जन-जन तक पहुँचा। अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हम इन वचनों को कितना अपने जीवन में उतारते हैं।

मुझे भी शेरपुर स्थित 'धाम चबूतरा, पाण्डव तालाब' परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की तपोभूमि, में उत्तर भारत जागनी यात्रा के प्रथम कार्यक्रम में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। वहाँ पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा ने सुन्दरसाथ को प्रेम, एकता और आत्म-जागृति के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा दी।

श्री ब्रह्मवाणी का कथन है -

महामत कहें पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे ।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे ।।

महामत कहें ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर ।
इन विध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर ।।

यों तैयारी कीजियो, आगूँ करनी है दौड़ ।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़ ।।

ऋग्वेद का कथन है, 'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' अर्थात् मिलकर चलें, प्रेमपूर्वक संवाद करें और समान भाव से ज्ञान की ओर बढ़ें।

अन्ततः जागनी का सार यही है कि ज्ञान केवल सुनना नहीं उसे जीना, अकेले बढ़ना नहीं, सबको साथ लेकर चलना और अपने जीवन को प्रेम, सेवा तथा सत्य के प्रकाश से प्रकाशित करना है ।

सागर जी और अर्जुन जी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ छात्र,
सरसावा

जागनी यात्रा 2025

बड़े हर्ष का विषय है कि हमें उत्तर भारत की 60 दिवसीय जागनी यात्रा में पूज्य श्री राजन स्वामी जी के साथ कुछ स्थानों तक यात्रा करने का अवसर मिला। परमहंस श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद और जागनी रत्न सरकार श्री की प्रेरणा से इस यात्रा में अनेक विद्वानों द्वारा क्षर, अक्षर से लेकर उत्तम पुरुष अक्षरातीत तक विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर सरल और प्रमाणपूर्ण चर्चाएँ हुई।। अनेक सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी जिज्ञासुओं को ब्रह्मज्ञान समझने का अवसर मिला और कुछ लोगों ने पूज्य स्वामी जी से तारतम भी ग्रहण किया।

इस यात्रा में हमें स्वामी जी के त्याग और समर्पण को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। कई-कई घंटे वाहन में यात्रा करने के बाद हम स्वयं थक जाते थे, लेकिन पूज्य स्वामी जी देर रात तक साहित्य-लेखन करते और थोड़े विश्राम के बाद पुनः ध्यान-साधना में लग जाते। तब अनुभव हुआ कि वे अपनी सुविधा के लिये नहीं बल्कि सुन्दरसाथ की आत्म जागृति और ब्रह्मवाणी के प्रचार के लिये इतना परिश्रम कर रहे हैं।

एक छोटा-सा प्रसंग उनकी संवेदनशीलता को दर्शाता है। यात्रा के दौरान हमने उनकी सीट पीछे कर दी ताकि वे कुछ आराम से बैठ सकें। उन्होंने तुरन्त मना करते हुए कहा कि मैं दूसरे का अधिकार नहीं ले सकता। उन्होंने अपनी सीट के लिये बने निर्धारित स्थान में ही पूरी यात्रा की। यह छोटी-सी बात भी हमारे लिये बहुत बड़ी शिक्षा बन गयी। यात्रा के दौरान उनका स्वास्थ्य और गला भी कई बार ठीक नहीं रहा। कुछ कार्यक्रमों में आवाज बहुत कठिनाई से निकल रही थी और वे मुश्किल से केवल 15-20 मिनट ही बोल पा रहे थे। फिर भी उन्होंने अपना संकल्प नहीं छोड़ा और ब्रह्मवाणी का प्रेममय सन्देश देने मंच तक पहुँचे। आश्चर्य यह कि स्वयं अस्वस्थ होते हुए भी जब हम दोनों उनसे मिलने गये तो उन्होंने सबसे पहले यही पूछा, "आप लोग ठीक हैं?'' इससे अनुभव हुआ कि वे स्वयं से अधिक दूसरों की चिन्ता करते हैं।

स्वामी जी के गाँव जाने का अवसर भी मिला। वहाँ के सामाजिक वातावरण को देखकर समझ आया कि प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी उन्होंने सात्त्विक और आध्यात्मिक जीवन का मार्ग किस दृढ़ता से चुना होगा। गाँव के अनेक लोग कार्यक्रम में आये और स्वामी जी की चर्चा से प्रभावित हुए। कुछ नए जिज्ञासु भी इस ज्ञान से जुड़े। सबसे भावपूर्ण दृश्य तब था जब स्वामी जी के वे गुरुजन उनसे मिलने आये जिन्होंने बचपन में उन्हें विद्यालय में पढ़ाया था। उन्होंने प्रेमपूर्वक कहा कि हमने आपको भौतिक शिक्षा दी थी, अब आपने जो ध्यान और अध्यात्म का ज्ञान पाया है, वह हमें दीजिये और यही हमारी गुरु-दक्षिणा होगी। स्वामी जी ने उन्हें अपने पास आसन पर बैठने का आग्रह किया परन्तु वे सामने भूमि पर बैठकर अत्यन्त प्रसन्नता से उनसे संवाद करते रहे। हमें उनकी पूजनीय माताजी के दर्शन और आशीर्वाद का भी सौभाग्य मिला।

हम श्री बीतक में पढ़ते-सुनते हैं कि जागनी के लिये महापुरुषों ने कितना कष्ट सहकर घर-घर पहुँचकर आत्माओं को जगाया। इस यात्रा में वही दर्द, वही समर्पण और वही आत्म-जागृति की तड़प हमें पूज्य श्री राजन स्वामी जी के जीवन में प्रत्यक्ष देखने को मिली।

हम स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं कि ऐसे सद्गुरु के सानिध्य और सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

सभी सुन्दरसाथ जी के कमल चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

सीता,
चंदपुर

उत्तर भारत जागनी यात्रा एक प्रेरक अनुभव

प्रेम प्रणाम सुन्दरसाथ जी।

उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ 18 अक्टूबर 2025 को हुआ और इसका अन्तिम पड़ाव 21-22 दिसम्बर को पन्ना जी में रहा। प्रारम्भिक कार्यक्रमों में शेरपुर धाम चबूतरा और बड़गाँव (चंदपुर) का कार्यक्रम विशेष रूप से स्मरणीय रहा।

बड़गाँव का कार्यक्रम 19 अक्टूबर, दीपावली से ठीक एक दिन पहले था। इसलिये सभी को समय पर एकत्र करना आसान नहीं था। फिर भी राजजी की मेहर से सुन्दरसाथ और जिज्ञासु एकत्र हुए तथा श्री राज जी के आह्वान के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

विभिन्न वक्ताओं के बाद पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा हुई। सभी श्रोताओं ने अत्यन्त शान्ति और एकाग्रता से उनकी बातों को सुना। कई लोगों ने अनुभव व्यक्त किया कि इतने गहन आध्यात्मिक विषयों को इतनी सरल भाषा में समझने का अवसर उन्हें पहले नहीं मिला था। आर्य समाज से जुड़े कुछ श्रोताओं ने भी वेदों और सनातन ज्ञान से जोड़ने वाली चर्चा की विशेष सराहना की।

पूज्य स्वामी जी ने परमात्मा के स्वरूप, उसकी पहचान और उसे प्राप्त करने के मार्ग को सरल शब्दों में समझाया। उन्होंने माताओं से बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने, वेद, गीता और दर्शन-शास्त्र के अध्ययन तथा ध्यान को जीवन का हिस्सा बनाने का आग्रह किया। नारी-शिक्षा और एक परमात्मा की उपासना पर भी महत्वपूर्ण चर्चा हुई।

स्वामी जी की सादगी, सहजता और बाहरी दिखावे से दूरी ने भी सभी को विशेष रूप से प्रभावित किया।

अन्त में चन्द्र गुरु जी की चर्चा के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह जागनी कार्यक्रम हम सभी के लिये ज्ञान, आत्मचिन्तन और प्रेरणा का स्मरणीय अवसर बन गया।

मन के हारे हार हैं,
मन के जीते जीत।

सुख में हो सावचेत

महामत कहे मेहबूब के, सुख में हो सावचेत
जो सावचेत है, जो अपने आत्मस्वरूप में केंद्रित हो गया, जिसकी प्रज्ञा स्थित है वह यही बैठे परमात्मा के आनंद सागर की सरस अनुभूति पा लेता है ।

छवि त्यागी

(सहारनपुर)

धाम चबूतरा से जागनी यात्रा का प्रथम अनुभव

प्रेम प्रणाम सुन्दरसाथ जी।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ अक्टूबर 2025 में शेरपुर स्थित उस पावन स्थल से हुआ जिसे आज 'धाम चबूतरा' के नाम से जाना जाता है। यह परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की तपोभूमि रही जहाँ से उन्होंने ब्रह्मवाणी और राजजी की पहचान का सन्देश अनेक वर्षों तक जन-जन तक पहुँचाया।

यात्रा का प्रथम दिवस मेरे लिये एक अद्भुत आध्यात्मिक पर्व जैसा था। लगभग दो से तीन हजार लोगों ने इसमें भाग लिया और पूज्य स्वामी जी के मुख से एक परमात्मा की पहचान तथा उसे प्राप्त करने के मार्ग पर गहन चर्चा सुनी।

आध्यात्मिक ज्ञान को ग्रहण करने के लिये भीतर पात्रता भी आवश्यक है। जैसे बंजर भूमि में बीज सहज नहीं उगता, वैसे ही केवल सुन लेने से गहन ब्रह्मज्ञान आत्मसात नहीं होता। किसी के लिये ज्ञान और शास्त्र-अध्ययन का मार्ग प्रभावी होता है तो किसी के लिये प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का भाव उसे परमात्मा की ओर ले जाता है।

उस दिन मेरे भीतर एक अलग ही ऊर्जा और आनन्द था। प्रत्येक क्षण ऐसा अनुभव हो रहा था मानो महाराज जी की कृपा और उपस्थिति पूरे आयोजन को दिशा दे रही हो। मेरे लिये सबसे बड़ा सौभाग्य यही था कि इस पावन कार्य में सेवा का अवसर और महाराज जी के आशीर्वाद की अनुभूति मिली।

मेरी विनम्र भावना है कि प्रत्येक सुन्दरसाथ एक बार 'धाम चबूतरा, शेरपुर' अवश्य आये और इस पावन तपोभूमि की आध्यात्मिक अनुभूति स्वयं करे।

जैसा बाहर होत है,
जो होय ऐसा दिल।
तो अधखिन पिऊ न्यारा नहीं,
माहें रहे हिल मिल।

डॉ सीमा खुराना

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो,
पेहेले आप पेहेचानो ।

पीछे ढूंढो घर आपनों..

मैं कौन हूँ? कहाँ है मेरा अखण्ड घर? मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ मुझे जाना है? क्या है मेरी असल पहचान? अध्यात्म के कुछ ऐसे अबूझ प्रश्न जिसके विषय में बड़े-बड़े योगी, यति, महात्मा खोज कर-कर थक कर मौन हो चुके हैं। ऐसे ही कुछ प्रश्न उठते रहे हैं हर जागृत विवेकवान हृदय में, खोज भी बहुत हुई, सवाल थे तो जवाब भी मिले पर शायद कुछ और भी होना चाहिये था। मानव सदैव से ही जिज्ञासु रहा है, अध्यात्म की तरफ पहला कदम उसकी मंजिल तय करता है।

नश्वर संसार के नश्वर तन, मन, बुद्धि और अहंकार (अन्तस्करण) में अखण्ड का ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है? अभी तक अलौकिक ज्ञान प्राप्ति मात्र समाधिस्थ हो प्राप्त हुई क्योंकि जागृत बुद्धि नहीं थी किसी के भी पास। इनके प्रमाण वेद, भगवत गीता, माहेश्वर तन्त्र आदि अनेक ग्रन्थों में वर्णित है जो अक्षर ब्रह्म के जोश की शक्ति से उतरे।

आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर जानने के प्रयास में कुछ नाम उल्लेखनीय हैं जिनके अथक प्रयासों का जिक्र किया जा सकता है जैसे श्री देवचन्द्र जी जिन्हें पूर्णब्रह्म परमात्मा ने स्वयं अपना परिचय दिया।

निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत ।

श्री मिहिरराज जी के धाम हृदय में युगल स्वरूप सहित पाँचो शक्तियाँ आ विराजी उनके निर्मल प्रेम और विरह के परिणामस्वरूप। अलौकिक दिव्य ज्ञान की अनुपम धारा बहने लगी जो कि वास्तव में आवेशित वाणी है तारतम वाणी। अज्ञानता के अन्धकार को जैसे प्रकाश का सूर्य नाश करता है वैसी ही है यह वाणी।

परमहंस श्री रामरतन दास जी हमारे बड़े महाराज जी जो प्रेम का चाँद हैं उन्हें भी अथक परिश्रम के बाद मिला यह अलौकिक ज्ञान मिला । आज की यदि बात करें तो देखते हैं एक जागृत आत्मा ने बीड़ा उठाया है तमाम राज्यों के अनेकों गांवों, शहरों में हर जनमानस तक इस ज्ञान को पहुँचाने का। इनके चरणों में करोड़ों प्रणाम।

शेरपुर धाम से शुरुआत कर सभी के अबूझ प्रश्नों के सरल समाधन प्रस्तुत करते परम पूज्य श्री राजन स्वामी जी। निजानन्द दर्शन की मशाल से यथार्थ सत्य से प्रत्येक मानव को अखण्ड की राह दर्शाते बस चलते ही जा रहे हैं। अड़चनें कम नहीं, अज्ञानता राह में शूल बिछाती है, मायाजाल में फँसाने को आतुर परन्तु रुकना कहाँ सीखा इस महामानव ने। निज में आनन्द ढूँढने की कला सिखाते हैं ये।

इन कठिन प्रश्नों के सरलतम जवाब जनमानस को अवश्य झकझोर देते हैं। यह यात्रा एक पड़ाव तक पहुँची पर रुकी नहीं, थकी नहीं। बस जारी है और रहेगी जब तक हर आत्मा अपने परमात्मा से मिलन नहीं कर लेती। कुछ साथी जुड़ते हैं और कुछ छूट भी जाते हैं परन्तु...

बाधाएँ कब रोक सकी हैं,
आगे बढ़ने वालों को ।
विपदाएँ कब मार सकी हैं,
मरकर जीने वालों को ।।

🙏 *प्रणाम जी* 🙏

अनिता खुराना,
जयपुर

'शोभा लीजे- ठौर दोए'

*महामत कहे ए मोमिनों, जिन जागी भूलो कोए ।
राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए ।।*

'छोटा कयामतनामा' के प्रथम प्रकरण में मोमिन और दुनिया का भेद स्पष्ट किया गया है। महामति जागृत आत्मा को समझाती हैं कि अपने वास्तविक स्वरूप, परमधाम और धनी के इश्क को कभी न भूलें। जो अपने इस सम्बन्ध को पहचान कर उसे रहनी में उतारता है, वह संसार और परमधाम दोनों में शोभा तथा राजजी की मेहर का पात्र बनता है। वर्तमान सुन्दरसाथ उस समय प्रत्यक्ष रूप से श्रीजी के साथ नहीं था, इसलिये महामति ने कहा-

*चरने हैं सो तो आए सही,
पर पीछले कारन ए बानी कही ।।*

आज श्री तारतम वाणी और श्री बीतक साहेब हमारे प्रमुख आधार हैं। वाणी धाम, स्वरूप और लीला की पहचान कराती है, जबकि बीतक हमें बताती है कि मोमिनों ने धनी के हुक्म में किस प्रकार अपनी रहनी और सेवा को समर्पित किया। पहचान से भाव और भाव से सेवा उत्पन्न होती है। श्री मिहिरराज जी के समय ब्रह्मवाणी का अवतरण हुआ और विभिन्न धर्मग्रन्थों के प्रमाणों से पूर्णब्रह्म अक्षरातीत की पहचान कराई गयी। इसके बाद समय-समय पर अनेक मोमिनों और परमहंसों ने जागनी की इस धारा को आगे बढ़ाया।जब जागनी का कार्य मंद पड़ा, तब पुनः पुकार हुई

तुमको इस्क उपजावने, करूँ सो अब उपाए।

परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के माध्यम से शेरपुर से प्रेम और जागनी की ज्योति पुनः प्रखर हुई। उनके सान्निध्य में पूज्यपाद सरकार श्री ने पूर्ण समर्पण से सेवा ग्रहण की और वाणी के रहस्यों को खोलकर सोई हुई आत्माओं को उनके घर, स्वरूप और लीला का बोध कराने का कार्य आगे बढ़ाया।

इसी परम्परा में पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने धामधनी की मेहर और सतगुरु के आशीर्वाद से परमधाम के कौल को निभाने का संकल्प लिया और जागनी अभियान को व्यापक रूप दिया। वाणी का कथन है, **जो मेरी सुध दयो औरों को, तित चले तुमारा हुकम।** और धनी का आश्वासन है, मैं तुमारे सिर पर, खड़ा हों एक पाए ।

आज जागनी यात्राओं के माध्यम से गाँव-गाँव, प्रान्त-प्रान्त में वाणी, चर्चा, संगीत, शिविर और प्रवचनों द्वारा आत्म-जागृति का सन्देश पहुँच रहा है। अनेक सुन्दरसाथ तन, मन और धन से इस सेवा में समर्पित हैं। इन कार्यक्रमों को देखकर अनुभव होता है कि धनी दूर नहीं हैं, वे अपनी जागृत आत्माओं को कसनी देकर और सेवा में लगाकर शोभा का पात्र बना रहे हैं।

श्रीजी साहेब द्वारा प्रारम्भ की गयी जागनी की यह धारा आज भी विभिन्न माध्यमों से निरन्तर आगे बढ़ रही है-

*मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुक्म ।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ।।*

सुन्दरसाथ के लिये वाणी का स्पष्ट सन्देश है- लीजो धनी की ओट । अपनी 'मैं' के बल पर सेवा पूर्ण नहीं होती। आपसी सम्बन्ध को स्मरण रखते हुए ईर्ष्या और तुलना से ऊपर उठना है- **जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस ।** हम धामधनी की मेहर, परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की कृपा तथा पूज्यपाद सरकार श्री की प्रेरणा के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनके मार्गदर्शन से जागनी की यह ज्योति निरन्तर आगे बढ़ रही है।

*कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग ।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग ।।*

🙏 *प्रणाम जी* 🙏

संजिश, बलिया
(उत्तर प्रदेश)

सिसोटार जागनी यात्रा एक भावपूर्ण अनुभव

प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 के क्रम में सिसोटार, जनपद बलिया में एक दिवसीय जागनी कार्यक्रम आयोजित करने का सौभाग्य हम सभी बलिया सुन्दरसाथ को प्राप्त हुआ। इसके लिये पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं यात्रा प्रबन्धन समिति के प्रति हृदय से आभार।

लगभग 40 वर्षों बाद पूज्य स्वामी जी के बलिया आगमन का समाचार मिलते ही ग्रामवासियों में अपार उत्साह और भावुकता छा गयी। सभी को ऐसा अनुभव हुआ मानो वर्षों पूर्व घर छोड़कर तपस्या और सत्य की खोज में निकला उनका अपना बालक अब जागनी का सन्देश लेकर पुनः अपनी जन्मभूमि लौट रहा हो।

कार्यक्रम 15 दिसम्बर 2025 को निर्धारित था, परन्तु स्वामी जी के 14 दिसम्बर की शाम पहुँचने की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामवासी आयोजन स्थल पर एकत्र होने लगे। कड़ाके की ठण्ड के बावजूद लगभग 3000-4000 श्रद्धालु देर रात तक उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिये उपस्थित रहे।

स्वामी जी की प्रारम्भिक तपोस्थली, घाघरा नदी के तट स्थित गोसायीपुर से भी अनेक श्रद्धालु पहुँचे। उन्होंने स्वामी जी के तपस्या-काल से जुड़े अपने संस्मरण साझा किये जिससे विशेष रूप से युवा पीढ़ी को उनके प्रारम्भिक जीवन और साधना के विषय में जानने का अवसर मिला।

इस अवसर पर स्वामी जी के पुराने सहपाठी और शिक्षक भी उपस्थित रहे जिन्होंने कभी उन्हें सांसारिक शिक्षा दी थी, आज उन्हीं से ब्रह्मज्ञान सुनकर उन्होंने भावपूर्वक कहा कि यह उनके लिये सच्ची गुरु-दक्षिणा के समान है।

कार्यक्रम के अन्त में, पूज्य स्वामी जी ने जिज्ञासुओं के आध्यात्मिक प्रश्नों का समाधान भी किया।

हम पूज्य श्री राजन स्वामी जी, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के आचार्यगण तथा राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, पंजाब, नेपाल, बंगाल, सिक्किम, झारखण्ड एवं अन्य क्षेत्रों से पधारे समस्त सुन्दरसाथ के हृदय से आभारी हैं। आप सभी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनाया और हमें सेवा का सौभाग्य प्रदान किया।

प्रणाम जी।

फेर ना पाओगे दोऊ

बहुरी न ऐसो दाव, नहीं फिर मानुष होना! मनुष्य जीवन परमात्मा का दिया एक अनमोल वरदान है-जो बार-बार नहीं मिलता। एक अवसर जब आत्मा अपने स्रोत, परमात्मा, को पा सकती है। यदि यह समय सांसारिक व्यस्तताओं में खो गया, तो यह सुनहरा अवसर हाथ से जाता रहेगा। इस जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम इसे आत्म-बोध में लगाएं। हर श्वास को उपासना बना लें, हर कर्म को सेवा।

मीनू ग्रोवर, अमृतसर

सतगुरु के संग जागनी यात्रा - प्रेम और धाम स्मृति का अनुभव

> चले थे रामरतन जी साथ हमारे, धन्य-धन्य वे दिन जो यात्रा में गुजारे।

श्री राज-श्यामा जी।

सतगुरु के साथ जागनी यात्रा के वे क्षण शब्दों में समेटना कठिन है। ऐसा अनुभव होता था मानो धाम में किया हुआ वह वादा, 'ए सुख देऊँ ब्रह्मसृष्ट को तो मैं अंगना नार' आज प्रत्यक्ष रूप में पूर्ण हो रहा हो।

गाँव-गाँव, नगर-नगर सुन्दरसाथ प्रेम से जुड़ते गये। ऐसा लगता था मानो परमधाम का एक विशाल लश्कर एक दिल, एक चित्त होकर आगे बढ़ रहा हो। ब्रह्मवाणी की गूँज, 'राज-राज', 'धनी-धनी' और 'पियू-पियू' की पुकार से वातावरण प्रेममय हो उठा। यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर सुन्दरसाथ अपने प्रियतम की स्मृति में भाव-विभोर दिखायी दिये।

जब पूज्य श्री राजन स्वामी जी की जागनी यात्रा पन्ना पहुँची, तब आनन्द की कोई सीमा नहीं रही। पन्ना के सुन्दरसाथ ने पूरी यात्रा-जमात को जिस प्रेम और अपनत्व से भिगोया, वह अविस्मरणीय है। ऐसा प्रतीत हुआ मानो श्रीजी स्वयं गुम्मट जी से चलकर अपने सुन्दरसाथ पर प्रेम बरसा रहे हों। पन्ना के वे अन्तिम दो दिन मेरे जीवन की अमूल्य स्मृति बन गये। हृदय में यही भाव था,

'इतहीं बैठे जागे घर धाम' का सुख।

पूरी यात्रा के दौरान YouTube और Facebook पर होने वाली Live चर्चाओं के माध्यम से दूर बैठे सुन्दरसाथ भी यात्रा से जुड़े रहे। अनेक बार ऐसा अनुभव हुआ कि हम वहाँ प्रत्यक्ष न होते हुए भी पूरे कारवाँ के साथ-साथ चल रहे हैं।

इन साठ दिनों में सेवा, प्रेम और समर्पण का जो स्वरूप देखने को मिला, उसने श्रीजी की जागनी यात्राओं की स्मृति ताजा कर दी। 5000 की जमात के साथ चलते हुए सुख-दुःख बाँटना और प्रत्येक आत्मा को प्रेम से जोड़ना।

अब इन्हीं मधुर स्मृतियों के साथ अपनी लेखनी को विराम देती हूँ। यह कलम भी उनकी, यह सेवा भी उनकी। बस तू ही तू और कुछ भी नहीं।

समस्त सुन्दरसाथ के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम।

🙏 प्रणाम जी 🙏

माधव निजानन्दी, नेपाल

जागनी यात्रा आत्म-जागृति का सुन्दर अवसर

जागनी यात्रा का अर्थ ही है- संसार में अपने वास्तविक स्वरूप को भूली आत्माओं को जगाना। श्री प्राणनाथ जी के समय से आरम्भ हुई यह जागनी परम्परा श्री देवचन्द्र जी, श्री मिहिरराज जी, श्री छत्रसाल जी तथा अनेक परमहंसों के माध्यम से आगे बढ़ती रही। समय के साथ इसकी गति कभी कम हुई, परन्तु धामधनी की कृपा और सतगुरु परमहंस श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद से यह जागनी-ज्योति पुनः प्रखर हुई। आज पूज्य श्री राजन स्वामी जी इसी कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

जागनी का मुख्य उद्देश्य है, श्री युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी को हृदय में बसाना और अपने वास्तविक आत्मिक सम्बन्ध को पहचानना। इसके लिये हमारे पास श्री तारतम वाणी, ध्यान, चितवनी और वाणी-मन्थन जैसे अमूल्य साधन हैं। इन्हें केवल सुनना पर्याप्त नहीं, जीवन में उतारना आवश्यक है।आत्म-जागृति किसी विशेष आयु तक सीमित नहीं है। बच्चों में भी प्रारम्भ से ही यह संस्कार विकसित होना चाहिये कि संसार के कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन का मूल उद्देश्य आत्मिक पहचान और परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करना है। इसमें माता-पिता की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पूज्य स्वामी जी बार-बार आहार, व्यवहार और वातावरण की शुद्धता पर भी बल देते हैं। उनका सन्देश है कि सात्त्विक जीवनशैली मन को स्थिर करने और आध्यात्मिक अभ्यास में सहायता करती है। इसलिये वाणी-मन्थन और चितवनी के साथ अपने दैनिक जीवन में भी अनुशासन आवश्यक है।

जागनी यात्रा हमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के लिये प्रेरित करती है कि हम वाणी को कितना सुनते हैं और कितना जीते हैं? कई बार हम ज्ञान सुनते तो हैं लेकिन उसे आचरण में लाने का प्रयास नहीं करते या कुछ असफलताओं के बाद प्रयास छोड़ देते हैं। वास्तविक जागनी निरन्तर अभ्यास, आत्मचिन्तन और आत्मसुधार से ही सम्भव है।

उत्तर भारत की दीर्घ जागनी यात्रा तथा इसके बाद गुजरात और मध्यप्रदेश में हुए कार्यक्रमों ने अनेक सुन्दरसाथ को वाणी और चितवनी से पुनः जोड़ने का कार्य किया। कठिन यात्रा, आयु और शारीरिक थकान के बावजूद पूज्य स्वामी जी का निरन्तर प्रयास हम सभी के लिये प्रेरणा है।

जागनी का सरल मार्ग यही है- प्रतिदिन वाणी-मन्थन, ध्यान और चितवनी, सात्त्विक जीवन, प्रेम, क्षमा, नम्रता और सेवा तथा बार-बार आत्मसुधार का प्रयास।

आत्म-जागृति के लिये ये अति आवश्यक हैं-

·नियमित ध्यान, चितवनी और वाणी-मन्थन करें।

·सात्त्विक आहार, शुद्ध व्यवहार और अच्छा वातावरण रखें।

·वाणी की शिक्षाओं को व्यवहार में उतारें।

·युगल स्वरूप को हृदय में धारण करें।

·प्रेम, क्षमा, नम्रता और सेवा-भाव विकसित करें।

·असफलता से निराश न होकर निरन्तर आत्मसुधार करते रहें।

बाल सुन्दरसाथ के लिये

· बचपन से आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार दें।

· थोड़े समय के लिये ही सही, प्रतिदिन ध्यान, चितवनी और वाणी से जोड़ें।

· सात्त्विक भोजन और अनुशासित जीवनशैली की आदत डालें।

· सत्संग और आध्यात्मिक गतिविधियों में सहभागिता कराएँ।

· अनुचित और अशोभनीय प्रभावों से यथासम्भव दूर रखें।

· माता-पिता स्वयं अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करें।

· युगल स्वरूप के प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का भाव विकसित करें।

अन्ततः जागनी का अर्थ केवल दूसरों को जगाना नहीं बल्कि पहले स्वयं जागना और फिर प्रेमपूर्वक दूसरों को जागृति के मार्ग से जोड़ना है।

आप सभी के चरण कमलों में प्रेम प्रणाम जी।

चाँदकमल

जागनी लीला - प्रेम से आत्म-जागृति तक

परमधाम से प्रेम की परीक्षा के लिये हम तीन बार इस ब्रह्माण्ड में आये- व्रज, रास और जागनी ब्रह्माण्ड में। इस सम्पूर्ण खेल का मूल कारण धनी के हृदय में उत्पन्न वह संकल्प था, जिसके अनुसार अक्षरब्रह्म को परमधाम की प्रेममयी लीला तथा सखियों को अक्षर का खेल दिखाया जाना था। खिलवत में कहा गया है-

> *जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर ।*
> *तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर ।।*

व्रज में हमने अपने वास्तविक घर और सम्बन्ध को भूले हुए भी धनी के साथ ऐसी प्रेममयी लीला की, जो आज भी प्रेम का आदर्श मानी जाती है। रास में यही प्रेम और अधिक गहन हुआ। अक्षरब्रह्म की आत्मा उस अलौकिक प्रेम में इतनी डूब गयी कि अपनी सुध-बुध भूल गयी। इसके बाद तीसरे जागनी ब्रह्माण्ड की लीला प्रारम्भ हुई। माया के प्रभाव में हम अपने स्वरूप और सम्बन्ध को भूल गये। धनी ने श्यामा जी की आत्मा को अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान कराई कि तुम परमधाम की श्यामा जी हो और मैं तुम्हारा अखण्ड प्रियतम पूर्णब्रह्म अक्षरातीत हूँ। यहीं से चौथे दिन की लीला पूर्ण होकर पाँचवें दिन की जागनी का विस्तार प्रारम्भ हुआ।

श्री मिहिरराज जी के तन से ब्रह्मवाणी का अवतरण हुआ और सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिये प्रथम महान जागनी यात्राएँ प्रारम्भ हुई।। नौतनपुरी, सूरत, दिल्ली, मेड़ता, औरंगाबाद, उदयपुर, रामनगर तथा अनेक स्थानों तक कठिन परिस्थितियों में यात्रा की गयी। शीत, गर्मी, वर्षा और अनेक कष्ट सहते हुए पूर्णब्रह्म अपनी प्रिय आत्माओं को खोजते और जगाते रहे। पाँचवें दिन की लीला में सीमित आत्माएँ ही पूर्ण रूप से जागृत हो सकी, इसलिये जागनी का कार्य आगे बढ़ना था। छठे दिन की लीला में समय के साथ ज्ञान और चितवनी का प्रभाव कम होता गया तथा अनेक स्थानों पर धर्म का स्वरूप बाहरी कर्मकाण्ड तक सीमित होने लगा। फिर भी समय-समय पर संतों और परमहंसों ने जागनी की मशाल को जीवित रखा र परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी ने प्रेम द्वारा सुन्दरसाथ को पुनः जोड़ा और सतगुरु सरकार श्री ने जागनी की इस मशाल को आगे बढ़ाया। इसी काल में एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। लगभग 17-18 वर्ष की आयु में एक युवक ने घर-संसार छोड़कर प्रश्न किया कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? परमात्मा कौन है? सत्य क्या है? सांसारिक उपलब्धियों की इच्छा छोड़कर वह सत्य की खोज में हिमालय की कठिन साधना तक पहुँचा। वेद, पुराण, बाइबल, कुरान और अनेक धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन किया, लेकिन उसकी खोज तब पूर्ण हुई जब उसे अपने सतगुरु का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सतगुरु ने उसकी पात्रता पहचान कर दिशा दी। श्री तारतम वाणी के प्रत्येक अंग का केवल अध्ययन ही नहीं बल्कि गहन मन्थन और जीवन में आचरित किया गया । यहीं से जागनी की मशाल पुनः प्रज्वलित हुई। यह युवक आगे चलकर 'पूज्य श्री राजन स्वामी जी' के रूप में समाज के सामने आया।

एक छोटे से ज्ञानकेन्द्र से प्रारम्भ हुआ कार्य धीरे-धीरे विस्तृत होता गया। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ की स्थापना, बालिका गुरुकुल, साहित्य-सेवा, ब्रह्मवाणी की चर्चाएँ और देश-विदेश में जागनी यात्राएँ इसी संकल्प के विविध स्वरूप बने। उनका उद्देश्य केवल ज्ञान कहना नहीं बल्कि "प्रेम, चितवनी, चरित्र और आत्म-जागृति के माध्यम से मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप की पहचान कराना'' रहा है।

गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान सहित अनेक क्षेत्रों में आयोजित जागनी यात्राओं से यह सन्देश निरन्तर आगे बढ़ा। कठिनाइयों और विरोध के बीच भी यात्रा नहीं रुकी क्योंकि इसका आधार किसी व्यक्ति की शक्ति नहीं बल्कि धामधनी की मेहर और सतगुरु का आशीर्वाद है। आज श्री तारतम वाणी का सन्देश भारत तक सीमित नहीं रहा। विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवाद, साहित्य, प्रवचन और आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा ब्रह्मवाणी विश्व के अनेक क्षेत्रों तक पहुँच रही है। हमारे लिये यह सौभाग्य है कि इस जागनी काल में हमें ऐसे ब्रह्ममुनि का सान्निध्य, दर्शन और चर्चा प्राप्त हो रही है, जिन्होंने अपना जीवन आत्म-जागृति के इस कार्य को समर्पित किया है।

अब हमारा उत्तरदायित्व है कि इस मशाल को आगे बढ़ाएँ, स्वयं जागें, दूसरों को जगाएँ, वाणी का मन्थन करें और प्रेममयी रहनी द्वारा धनी की पहचान जन-जन तक पहुँचाएँ। धामधनी की मेहर पूज्य श्री राजन स्वामी जी पर निरन्तर बरसती रहे और जागनी का यह प्रकाश विश्व के कोने-कोने तक पहुँचे। इसी मंगलकामना के साथ।

प्रेम प्रणाम जी

बब्बू नारंग,
अबोहर (पंजाब)

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 सेवा, ज्ञान और समर्पण की अविस्मरणीय यात्रा

प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा द्वारा आयोजित उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 का शुभारम्भ पूज्य सद्गुरु श्री रामरतन दास जी की पावन तपोभूमि शेरपुर, धाम चबूतरा से हुआ। राजजी की मेहर से मुझे भी इस यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। यात्रा प्रारम्भ होते ही सुन्दरसाथ के चेहरों पर अद्भुत उत्साह दिखायी देता था। ऐसा अनुभव हुआ मानो श्रीजी के समय की जागनी यात्रा पुनः जीवन्त हो उठी हो। श्री बीतक साहेब में हम पढ़ते हैं कि उस समय सुन्दरसाथ श्री जी के साथ पैदल गाँव-गाँव, नगर-नगर जाते, कठिनाइयाँ सहते और स्वयं रहने की व्यवस्था भी करते थे। आज साधन सुविधाजनक हैं परन्तु जागनी का मूल भाव वही है, सोई हुई आत्माओं को जगाना और ब्रह्मवाणी का ज्ञान जन-जन तक पहुँचाना है।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी के हृदय में भी यही पीड़ा और संकल्प दिखायी देता है। पहले गुजरात में लम्बी जागनी यात्रा और फिर उत्तर प्रदेश की 60 दिवसीय यात्रा के माध्यम से उन्होंने निरन्तर यही प्रयास किया कि सुन्दरसाथ अपने वास्तविक स्वरूप और एक परमात्मा की पहचान करें।

प्रत्येक स्थान पर स्थानीय सुन्दरसाथ ने प्रेमपूर्वक व्यवस्था की। कार्यक्रमों में वाणी-गायन, चितवन, चर्चा और प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनेक जिज्ञासाओं का समाधान हुआ। पूज्य स्वामी जी ने सरलता से प्रश्नों पर प्रकाश डाला कि हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? मानव जीवन का उद्देश्य क्या है? परमात्मा कौन है? देवता और परमात्मा में क्या अन्तर है? इससे अनेक नए जिज्ञासुओं को ब्रह्मज्ञान समझने की दिशा मिली। यात्रा का एक अत्यन्त भावपूर्ण पड़ाव पूज्य स्वामी जी के गृहक्षेत्र बलिया में रहा। वहाँ उनके बचपन के साथी, गुरुजन, पूजनीय माताजी और परिवार से मिलने का अवसर मिला। उनके बाल्यकाल की सादगी, ध्यान-साधना और परमात्मा की खोज के प्रसंग सुनकर मन भाव-विभोर हो उठा। उनके एक पुराने मित्र की आँखों में उन स्मृतियों को बताते समय आँसू देखकर यह अनुभव और भी गहरा हो गया।

अन्तिम चरण में पन्ना जी पहुँचना भी अविस्मरणीय रहा। वहाँ पुजारीगण, विद्वान और अनेक सुन्दरसाथ एक मंच पर उपस्थित थे। ज्ञानपीठ के संगीताचार्य रंजीत जी के कीर्तन ने वातावरण को अत्यन्त भावपूर्ण बना दिया।

इस यात्रा की सबसे बड़ी स्मृति मेरे लिये सुन्दरसाथ का प्रेम और सेवा है। अनेक स्थानों पर सीमित साधनों के बावजूद चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। माताओं, बहनों, युवाओं, आचार्यों, संगीतकारों और सेवाभावी सुन्दरसाथ ने तन-मन से यात्रा को सफल बनाने में सहयोग दिया।

विशेष रूप से मीडिया टीम की सेवा भी उल्लेखनीय रही। जो सुन्दरसाथ प्रत्यक्ष रूप से यात्रा में नहीं पहुँच सके, उनके लिये दिन-रात परिश्रम कर Live प्रसारण, वीडियो एडिटिंग और अपलोड का कार्य किया गया। आज उन्हीं प्रयासों से विभिन्न स्थानों की चर्चाएँ YouTube और Facebook पर कभी भी सुनी जा सकती हैं।

पूज्य स्वामी जी ने दिन-रात की परवाह किये बिना चर्चा, यात्रा और सेवा के साथ-साथ 'भ्रमोच्छेदनम्' ग्रन्थ भी तैयार किया जिसकी टाइपिंग सेवा श्रेयस जी एवं दीप्ति जी ने अत्यन्त परिश्रम से की। इससे अनुभव हुआ कि एक जागनी यात्रा के पीछे कितनी अनदेखी सेवाएँ और कितना त्याग छिपा होता है। यह यात्रा केवल 60 दिनों में समाप्त होने वाला आयोजन नहीं है। जागनी का कार्य तब तक जीवित रहेगा, जब तक हम स्वयं जागकर दूसरों को जगाने, ब्रह्मवाणी को आगे पहुँचाने और प्रेम की इस धारा में सहयोग करने का प्रयास करते रहेंगे।

आइये, हम भी अपनी सामर्थ्य अनुसार तन, मन और धन से जागनी कार्य में सहयोग दें, ताकि आत्म-जागृति की यह ज्योति निरन्तर प्रज्वलित रहे और हम सब अपने वास्तविक घर की ओर बढ़ सकें।

🙏 प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी। 🙏

स्वीटी,
गाजियाबाद

जागनी यात्रा जब ज्ञान स्वयं द्वार तक आया

मुझे शेरपुर और चंदपुर की जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। गुजरात की जागनी यात्रा में जाने का अवसर नहीं मिल पाया था इसलिये मन में बड़ी जिज्ञासा थी कि जागनी यात्रा का अनुभव कैसा होता होगा।

शेरपुर के कार्यक्रम में संगीताचार्य रंजीत जी द्वारा तीन कीर्तन का गायन हुआ। तेज धूप के बीच भी वातावरण ऐसा लग रहा था मानो प्रेम की वर्षा हो रही हो। विशेष रूप से यह कीर्तन हृदय को छू गया,

> *'अब जाग देखो सुख जागनी,*
> *ऐ सुख सुहागिन जोग ।'*

शेरपुर, चंदपुर और आसपास के क्षेत्रों में सुन्दरसाथ के भीतर अद्भुत उत्साह दिखायी दिया। सभी ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार तन, मन और धन से सेवा की। इस यात्रा को देखकर श्री बीतक की उन जागनी लीलाओं की स्मृति होती है, जब श्रीजी अनेक कठिनाइयों के बावजूद स्थान-स्थान पर जाकर ब्रह्मवाणी का सन्देश पहुँचाते रहे।

आखिर इतनी यात्राओं का उद्देश्य क्या था? यही कि वाणी का ज्ञान जन-जन तक पहुँचे और कोई यह न कह सके कि हमें परम सत्य की पहचान का अवसर ही नहीं मिला। आज जागनी यात्रा के माध्यम से वही पुकार फिर हमारे द्वार तक पहुँच रही है, वाणी-गायन, चर्चा, चितवन और प्रश्नोत्तर के माध्यम से हमें जगाने का प्रयास किया जा रहा है।

मुझे इस यात्रा से यही अनुभूति हुई कि अवसर बार-बार एक जैसा नहीं आता। जिस प्रकार बीतक की प्रत्येक लीला, प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण दोबारा उसी रूप में नहीं लौटता वैसे ही जागनी यात्रा के ये अनमोल अवसर भी स्मृति बन जाते हैं।

इसलिये जब भी किसी जागनी कार्यक्रम में जाने का अवसर मिले उसका लाभ अवश्य लेना चाहिये। केवल कार्यक्रम देखना ही नहीं बल्कि वहाँ मिले ज्ञान को अपने हृदय में उतारकर अपने प्रियतम की स्मृति को दृढ़ करना ही उसकी वास्तविक सार्थकता है। तभी रीझ कर धनी के हृदय से प्रेम रूपी इन शब्दों की वर्षा होती है जिसका कोई मोल नहीं है। अनमोल हैं ये वचन-

हमको बड़ा हरख है,
सब सुख में रहियो कुंम ।
दिन जागनी के आए नजीक,
स्याबास लालबाई तुम ।।

अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब।

रात्रि का अंधकार तो प्रतिदिन सूर्योदय से समाप्त हो जाता है, परंतु हृदय में जो अज्ञानता रूपी अंधकार व्याप्त है, उसका अंत केवल सत्ज्ञान के प्रकाश से ही संभव है। इस जागनी यात्रा के माध्यम से सुन्दरसाथ के हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो, हर दिल सत्य से आलोकित हो, ऐसी हमारी प्रार्थना।

डॉ गजराज सिंह सोलंकी
बुलन्दशहर

"60 दिवसीय उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा - 2025"

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा द्वारा आयोजित "जागनी यात्रा-उत्तर प्रदेश 2025" ने सम्वत् 1735 में श्री प्राणनाथ जी द्वारा लगभग पाँच हजार सुन्दरसाथ के साथ भारत के विभिन्न प्रान्तों में की गयी जागनी यात्रा का स्मरण करा दिया। यात्रा के दौरान ऐसा अनुभव हुआ मानो हम स्वयं श्री प्राणनाथ जी के साथ चल रहे हों।

आध्यात्मिक दृष्टि से भगवान और परमात्मा के स्वरूप को समझना आवश्यक है। श्री राम, श्री कृष्ण और शिव जैसे दिव्य महापुरुषों के आदर्शों एवं गुणों को जीवन में अपनाया जाना चाहिये परन्तु सर्वोच्च भक्ति उस एक परमात्मा की होनी चाहिये जो सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त जीवों और देवी-देवताओं का स्वामी है।

विभिन्न धर्मों में उसी एक परम सत्ता को अलग-अलग नामों से पुकारा गया है, कहीं 'श्री', कहीं 'साहिब' और कहीं 'रब्ब-ए-आलम'। नाम और परम्पराएं भिन्न हो सकती हैं परन्तु सम्पूर्ण संसार का स्वामी एक ही है।
श्री तारतम वाणी की 18,758 चैपाइयों का वास्तविक ज्ञान वही समझ सकता है, जो अपने जीवन को चरित्रवान, तेजस्वी, संयमित और अन्तर्मुखी बनाये। परमात्मा अनादि और अनन्त है, वह जन्म-मरण से परे है। भगवान और परमात्मा के इस सूक्ष्म अन्तर को केवल आत्मचिन्तन और ब्रह्मज्ञान द्वारा समझा जा सकता है।

हमारी मान्यता के अनुसार वर्तमान समय परब्रह्म के ज्ञान को प्रकट करने का विशेष काल है। पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने पाँचवें वेद 'स्वसंवेद' के ब्रह्मज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिये जागनी अभियान आरम्भ किया है। भारत के अनेक राज्यों और विदेशों में इस ज्ञान का प्रचार हुआ है तथा हजारों लोगों ने तारतम ज्ञान को ग्रहण किया है। अब श्री प्राणनाथ विश्वविद्यालय के माध्यम से भी विश्व-जागरण का यह कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा।

इस अभियान का उद्देश्य किसी मत या सम्प्रदाय का विरोध करना नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य को सत्य, आत्मज्ञान और परमात्मा की पहचान की ओर प्रेरित करना है। इसलिये इस दुर्लभ अवसर का लाभ लें, ब्रह्मज्ञान को सुनें और तन, मन एवं धन से इस जागनी अभियान में सहयोग देकर अपने जीवन को सार्थक बनाएँ। मेरे विवेक अथवा लेखन में कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मनीष सिडाना
सहारनपुर

जागनी यात्रा उत्तर प्रदेश 2025 मेरा अनुभव

प्रतिवर्ष बीतक में सुनते आ रहे हैं कि श्री प्राणनाथ जी ने सूरत से चलकर पन्ना तक भिन्न-भिन्न स्थानों का भ्रमण करते हुए सुन्दरसाथ की जागनी की थी। बहुत से भाग्यशाली सुन्दरसाथ को उनके साथ जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा। जब सन् 2022 में परम आदरणीय श्री राजन स्वामी जी ने गुजरात में 100 दिन की जागनी यात्रा की तो दिल में ये इच्छा होती थी कि काश! यह यात्रा अगर हमारे आसपास के क्षेत्र में होती तो शायद इसका आनन्द मैं भी ले पाता। वाणी में भी कहा गया है कि जब आप जागनी के सुख देखेंगे तो धाम धनी के प्रेम और तारतम ज्ञान से आपका हृदय निर्मल हो जायेगा।

खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल ।।

धाम धनी की अपार मेहर हुई और श्री राजन स्वामी जी ने उत्तर भारत में भी जागनी यात्रा का संकल्प लिया। जागनी यात्रा का साक्षी और भागीदार बनने का यह सुअवसर भला मैं कैसे छोड़ सकता था? श्री निजानन्द आश्रम, शेरपुर से श्री रामरतन महाराज जी का आशीर्वाद लेकर स्वामी जी ने सुन्दरसाथ के साथ धाम चबूतरे के लिये प्रस्थान किया।

'श्री प्राणनाथ प्यारे' का जयघोष करते हुए हम सब सुन्दरसाथ श्री राजन स्वामी जी का अनुसरण करते हुए धाम चबूतरे तक पहुंचे। सुन्दरसाथ का उत्साह देखते ही बनता था। बहुत विशाल पण्डाल लगाया गया था और वह भी खचाखच भरा हुआ था। श्री निजनाम से सम्बन्धित कई भ्रान्तियां जो समाज में लम्बे समय से प्रचलित थी, उस के बारे में कई प्रश्न पूछने का मुझे भी अवसर प्राप्त हुआ।

पूज्य स्वामी जी ने बहुत प्रेम से सरल शब्दों में मेरी और अन्य सुन्दरसाथ की शंकाओं का निवारण किया। इसके बाद हम सहारनपुर में होने वाले जागनी यात्रा के कार्यक्रम के लिये तैयारियों में जुट गये। सहारनपुर के सभी सुन्दरसाथ में जागनी यात्रा के लिये बहुत उत्साह था। कार्यक्रम की तैयारी के लिये सुन्दरसाथ की कई मीटिंग हुई जिसमें कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गयी। सुन्दरसाथ ने इस कार्यक्रम के लिये दिल खोल कर आर्थिक सेवा दी।

धर्म की राह में चलने पर माया की कुछ अड़चनें तो आती ही हैं। कार्यक्रम से केवल कुछ दिन पहले कार्यक्रम के लिये तय किये गये स्थान की बुकिंग कुछ अपरिहार्य कारणों से रद्द हो गयी, जिस से सबके मन को थोड़ा झटका लगा परन्तु शीघ्र ही श्री राज जी महाराज की कृपा से दूसरे स्थान की बुकिंग कर ली गयी।

कार्यक्रम के सुचारू संचालन के लिये सभी सेवाओं को लगभग 15 अलग-अलग विभागों में बांट कर सुन्दरसाथ को अलग-अलग विभाग की सेवा दे दी गयी। कार्यक्रम में प्रवाही लोगों को लेकर आना हमारे लिये सबसे बड़ा चैलेंज था। इसके लिये शहर के प्रमुख स्थानों पर कार्यक्रम में आमन्त्रण के लिये बड़े-बड़े होर्डिंग लगवाये गये। कार्यक्रम के बारे में आकर्षक पैम्फलेट छपवाये गये जिसमें बताया गया कि पूर्णब्रह्म परमात्मा केवल एक है।

तो राह ए चलसी,
होए बड़ो प्रकास ।
साथ सब दौड़सी,
ले दिल जागनी की आस ।।

मनीष सिडाना
सहारनपुर

श्री बीतक साहिब की इसी चैपाई को ध्यान में रखते हुए कुछ सुन्दरसाथ ने घर-घर जाकर लोगों को एक पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द परमात्मा के बारे में बताते हुए उन्हें और जानकारी के लिये कार्यक्रम में आने के लिये प्रेरित किया। कुछ सुन्दरसाथ ने प्रातःकाल शहर के प्रमुख पार्क में जाकर लोगों को 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' के बारे में बताते हुए कार्यक्रम में आने के लिये आमन्त्रित किया। लगभग सभी सुन्दरसाथ ने आधुनिक सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म्स का उपयोग करते हुए भी कार्यक्रम का भरपूर प्रचार किया। कार्यक्रम के प्रति सुन्दरसाथ का उत्साह इतना अधिक था कि सभी सुन्दरसाथ सपरिवार निर्धारित समय से पूर्व ही कार्यक्रम स्थल पर परम पूज्य स्वामी जी और अन्य सुन्दरसाथ के स्वागत के लिये उपस्थित थे।

कार्यक्रम के लिये सुन्दर पण्डाल बनाया गया था। महिला सुन्दरसाथ के द्वारा बनायी गयी रंगोली कार्यक्रम की शोभा में चार चांद लगा रही थी। जलपान के बाद किरन्तन गायन के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। उसके बाद आदरणीय किरण दीदी ने सुन्दरसाथ को प्रबोधित किया। पण्डाल में विशाल संख्या में उपस्थित सुन्दरसाथ ने बड़े ध्यान से उनके वचनों को सुना।
उसके पश्चात् आचार्य अशोक जी द्वारा शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा समझाया गया कि परमात्मा केवल एक ही है। उन्होंने बताया कि महापुरुषों और देवी-देवताओं की पूजा कर सकते हैं परन्तु भक्ति केवल एक सच्चिदानन्द परमात्मा की ही करनी चाहिये। देवी-देवताओं के बारे में प्रचलित पौराणिक मान्यताओं पर भी उन्होंने सत्य का प्रकाश डाला। उनके वचनों का उपस्थित सुन्दरसाथ और धर्मप्रेमी सज्जनों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उनके पश्चात् सहारनपुर के महिला सुन्दरसाथ ने मिल कर **'अन्दर नाहीं निरमल'** किरन्तन का मधुर गायन कर के सभी के हृदय को छू लिया। इस किरन्तन के बाद परम पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने वेदों और वाणी के आधार एक परमात्मा की पहचान करवायी। उसके बाद उपस्थित लोगों द्वारा भेजे गये प्रश्नों का उत्तर देकर सबकी शंकाओं का समाधान किया।

पण्डाल पूरा भरा हुआ था। अनुमान से अधिक धर्मप्रेमी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे। पूरे कार्यक्रम को सभी ने बहुत शान्ति से सुना, जिसके लिये अनुशासन बनाये रखने की सेवा करने वाले सुन्दरसाथ प्रशंसा के पात्र हैं।

कार्यक्रम के समापन के बाद सभी के लिये लंगर प्रसाद की व्यवस्था थी। स्वयंसेवक सुन्दरसाथ ने बड़े प्रेम से सभी को भोजन जिमाया। अन्त में, सभी प्रवाही आगन्तुकों को सहारनपुर सुन्दरसाथ के द्वारा 'तमस के पार' संक्षिप्त साहित्यिक पुस्तक भेंट की गयी।
जागनी यात्रा का ये कार्यक्रम मेरे लिये, सभी सुन्दरसाथ के लिये और कार्यक्रम में आने वाले सभी धर्मप्रेमी सज्जनों के लिये एक अविस्मरणीय अनुभव रहा।

कह्या न जाय सुख जागणीना,
सत ठोरना सनेह ।
आ भोमना जेहेवुं केहेवाय,
कांइक प्रकासूं तेह ।।

जागनी लीला के सुख का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता क्योंकि इसमें परमधाम के प्रेम की झलक मिलती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम ब्रह्मवाणी के सन्देश को एक बड़े जनसमूह तक पहुंचाने में सफल रहे। ये हमारा "जागो और जगाओ" के कौल को पूरा करने की तरफ एक छोटा सा कदम है। अक्षरातीत श्री राज जी की कृपा से आदरणीय श्री राजन स्वामी जी के मार्गदर्शन में हम जन-जन तक ब्रह्मवाणी को पहुंचाने का प्रयास इसी प्रकार जारी रखेंगे।
प्रणाम जी

राजबाला बेहट

उत्तर भारत जागनी यात्राः आत्म-जागृति की अनुभूति

धनी की परम कृपा से मुझे भी दस दिनों तक इस आध्यात्मिक जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का अवसर मिला। पूज्यपाद श्री राजन स्वामी जी के श्रीमुख से ब्रह्मज्ञान सुनने का जो आनन्द प्राप्त हुआ, उसका पूर्ण वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है।
अक्षरातीत परब्रह्म का सन्देश लेकर पूज्यपाद श्री राजन स्वामी जी के मार्गदर्शन में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रारम्भ हुई '60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा' ब्रह्म चबूतरा, शेरपुर की पावन धरती पर पहुँची। पहले ही दिन लगभग 2800-3000 सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी स्वामी जी की चर्चा-प्रवचन सुनने के लिये एकत्रित हुए।

इस यात्रा में मुख्यतः उत्तर प्रदेश, हरियाणा और उत्तराखण्ड के नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य माया और अज्ञान में भटकती आत्माओं को ब्रह्मज्ञान द्वारा आत्म-जागृति की ओर प्रेरित करना है। इससे पूर्व 2022-23 में गुजरात एवं उसके सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इसी प्रकार जागनी यात्रा आयोजित की गयी थी।
सभी स्थानों पर सुन्दरसाथ के चेहरे पर सेवा का उत्साह और ज्ञान की प्यास स्पष्ट दिखायी देती थी।

> *इहाँ तेही खड़े रहे, जाके धनिएं पकड़े हाथ।*

बड़गाँव, टपरी, टाबर, नकुड़, सहारनपुर, भायला, कुरड़ी, यमुनानगर, रुड़की आदि अनेक स्थानों पर जागनी कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। प्रत्येक स्थान पर कार्यक्रम श्री राज जी के आह्वान, वाणी-गायन, आचार्यगणों की चर्चा तथा स्वामी जी के ब्रह्मवाणी-आधारित प्रवचन से सम्पन्न होता था। मनुष्य के भीतर अनेक मूल प्रश्न उठते हैं-''मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? जीवन का उद्देश्य क्या है? शरीर छोड़ने के बाद कहाँ जाना है? मेरी आत्मा का अनादि प्रियतम कौन है? इस ब्रह्माण्ड का मूल कारण क्या है? माया क्या है और उससे मुक्त होकर आत्म-जागृति कैसे प्राप्त हो?'' जागनी यात्रा में स्वामी जी ब्रह्मवाणी तथा विभिन्न धर्मग्रन्थों के दृष्टान्तों के माध्यम से इन प्रश्नों पर गहन प्रकाश डालते रहे।

हकें इलम ऐसा दिया, जो चैदे तबकों नाहें।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें।।

श्री तारतम वाणी हमारे लिये आत्म-जागृति का मूल आधार है। यह आत्मा को अपने धनी, अपने स्वरूप और अपने मूल घर की पहचान की ओर ले जाती है। परन्तु केवल ज्ञान सुनना पर्याप्त नहीं है। जागनी के दो पंख हैं- ज्ञान और प्रेम। प्रेम के वातावरण में ज्ञान ग्रहण किया जाय और ज्ञान को जीवन की रहनी में उतारा जाय, तभी वास्तविक परिवर्तन सम्भव है। हम सभी का दायित्व है कि अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के इस कार्य में अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग करें, जिसके पास ज्ञान है वह ज्ञान-सेवा करे, जिसके पास धन है वह धन से और जो शारीरिक रूप से सक्षम है वह श्रम-सेवा करे। पूज्यपाद श्री राजन स्वामी जी का विशेष आग्रह है कि हमारे मन्दिर, आश्रम और धार्मिक स्थल केवल पूजा के केन्द्र न रहकर प्रेम, ज्ञान, स्वाध्याय और आत्म-जागृति के केन्द्र बनें जहाँ श्री तारतम वाणी तथा अन्य धर्मग्रन्थों के अध्ययन और मनन को प्राथमिकता मिले।

तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको।
जेहर चढ़या होए जिमी का, सुख होवे ताको।।

जागनी का वास्तविक अर्थ केवल वाणी सुनना नहीं बल्कि स्वयं को पहचानना भी है। हमें विचार करना चाहिये कि हमने वाणी का कितना चिन्तन किया? अपने धनी को कितना पहचाना? अपनी रहनी में कितना परिवर्तन किया? कितना प्रेम और समर्पण विकसित किया? क्या हमने जाति, क्षेत्र, भाषा और वर्ग के भेद से ऊपर उठकर सम्पूर्ण सुन्दरसाथ को अपना माना? यही आत्म-जागृति की वास्तविक कसौटी है।

केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन।

यदि पूरी आयु केवल वाणी सुनने और कहने में बीत जाय लेकिन जीवन में परिवर्तन न आये तो ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं होता। हमारी परम्परा प्रेम और समर्पण की रही है। इसलिये आज भी आवश्यक है कि ब्रह्मज्ञान को केवल बुद्धि तक सीमित न रखकर हृदय और आचरण में उतारा जाये।

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चैथी घर की, इन चारों को यामें भोग।।

अतः हमारा कर्तव्य है कि पूज्यपाद श्री राजन स्वामी जी द्वारा चलाये जा रहे इस जागनी अभियानमें सभी सुन्दरसाथ मिलकर तन, मन और धन से, प्रेम एवं समर्पणपूर्वक सहयोग करें, स्वयं जागें और दूसरों की आत्म-जागृति में भी सहभागी बनें।

प्रफुल्ला बहन
सूरत

उत्तर भारत जागनी यात्रा आत्म-जागृति और ब्रह्मज्ञान की अनुभूति

अक्षरातीत श्री राज जी की मेहर और परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद से इस जागनी यात्रा में सम्मिलित होकर मुझे अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। यह यात्रा मेरे लिये केवल स्थानों की यात्रा नहीं बल्कि आत्म-जागृति की एक नयी शुरुआत थी।

यह छठे दिन की मोमिनों की लीला है। इसलिये मोमिन बनकर अपने प्रियतम की श्री तारतम वाणी को संसार में प्रकाशित करने का उत्तरदायित्व हम सभी सुन्दरसाथ को मिला है। पूज्य श्री राजन स्वामी जी का दृढ़ संकल्प 'सुख शीतल करूँ संसार', 'ब्रह्मज्ञान ही अमृत है, प्रेम ही जीवन है' इस यात्रा के प्रत्येक कार्यक्रम में स्पष्ट दिखायी दिया।

> *पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।*
> *बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो ।।*

बीतक में भी प्रश्न आता है,

मैं कौन कहाँ थे आइयो, कहाँ मेरो भरतार ।।

मैं कौन हूँ? परमात्मा कौन है? कहाँ है? उसका धाम और वास्तविक स्वरूप क्या है? देवी-देवता, ईश्वर, भगवान और परमात्मा में क्या अन्तर है? ऐसे गूढ़ आध्यात्मिक प्रश्नों को पूज्य श्री राजन स्वामी जी और अन्य विद्वानों ने धर्मग्रन्थों तथा श्री तारतम वाणी के आधार पर अत्यन्त सरल और हृदयस्पर्शी ढंग से समझाया।

यात्रा की एक विशेषता यह भी रही कि सुन्दरसाथ के मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान सीधे सम्वाद द्वारा हुआ। साथ ही लाइव प्रसारण के माध्यम से घर बैठे हजारों लोगों को भी इस ज्ञान का लाभ मिला। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य ने इस ज्ञान को और अधिक सहज बनाया।

इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित 'भ्रमोच्छेदनम्' पुस्तक का विमोचन भी हुआ जो आध्यात्मिक भ्रमों को दूर कर मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य एक परमात्मा की पहचान की ओर प्रेरित करती है।

ज्ञानपीठ के बच्चों ने मधुर वाणी-गायन द्वारा वातावरण को भक्तिमय बनाया और आचार्यगणों ने प्रत्येक स्थान पर ज्ञान तथा भक्ति का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया। सिसौटार ग्राम, पूज्य श्री राजन स्वामी जी की जन्मभूमि, पहुँचकर उनकी माताजी के दर्शन तथा उस पावन भूमि के दर्शन का सौभाग्य भी मिला। यह अनुभव अत्यन्त भावपूर्ण रहा।

60 दिवसीय उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा शेरपुर से प्रारम्भ होकर पन्ना जी में पूर्ण हुई। इस यात्रा ने यह अनुभव कराया कि अब प्यासे को कुएँ तक जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि ब्रह्मवाणी रूपी अमृत स्वयं जन-जन तक पहुँच रहा है।

मेरी यही कामना है कि भविष्य में भी ऐसी जागनी यात्राएँ निकलती रहें, सम्पूर्ण संसार को एक परमात्मा की पहचान कराएँ और आध्यात्मिक जीवन के कठिन प्रश्नों का समाधान देती रहें। ज्ञान, प्रेम और ब्रह्मवाणी की यह सुगन्ध चारों ओर फैलती रहे। इस यात्रा ने मेरे जीवन को धन्य कर दिया और मेरे आध्यात्मिक जीवन की एक नयी शुभ शुरुआत की।

सभी के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

सब विध जाहिर होएसी जागनी प्रकाश

यह वचन श्री की कोई काव्यात्मक कल्पना नहीं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक घोषणा है—कि तारतम ज्ञान का यह प्रकाश एक दिन सम्पूर्ण विश्व में प्रकट होगा। परन्तु वास्तविक प्रश्न यह है कि उसमें मेरी भूमिका क्या होगी?

इतिहास हमें इसका उत्तर देता है। लुम्बिनी में एक दीपक प्रकट हुआ, बोधगया में वह दीपक प्रज्वलित हुआ, और उसी एक ज्योति से हज़ारों दीपक जल उठे। बुद्ध की वाणी इसलिए प्रभावशाली नहीं हुई कि वह बोली गई थी, बल्कि इसलिए कि वह जी गई थी। उसका विस्तार शब्दों से नहीं, जीवन से हुआ।

आज वही आह्वान हमारे सामने है। हमें केवल दीपक के सामने खड़े होकर नमन नहीं करना है; हमें स्वयं दीपक बनना है, स्वयं प्रज्वलित होना है। जब तारतम वाणी के उच्च सिद्धान्त और उसके मापदण्ड मेरे जीवन में उतर आते हैं, जब मेरा आचरण ही उसकी मौन भाषा बन जाता है—तब मैं भी उस विराट दीपमाला की एक कड़ी बन जाता हूँ। यही सच्चा सहयोग है, यही मेरी साधना है

श्री निवास सिंह निजानंदी व श्री प्राणनाथ जी ट्रस्ट, सिकंदराबाद परिवार बुलन्दशहर (उ. प्र)

17 नवम्बर अनूपशहर, 18 नवम्बर बुलन्दशहर, 19 नवम्बर सिकंदराबाद

उत्तर प्रदेश जागनी यात्राः एक अविस्मरणीय अनुभव

प्रीतम मेरे प्राण के, आतम के आधार ।
सर्व सुख देने योग्य हो, लीला नित्य विहार ।।

प्राणों के आधार, आत्म-सम्बन्धी सुन्दरसाथ जी, प्रेम प्रणाम जी।

धामधनी पूर्णब्रह्म परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की असीम कृपा, परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद, सरकार श्री जी की प्रेरणा और परमपूज्य ब्रह्ममुनि श्री राजन स्वामी जी के निर्देशन में सम्पन्न 'उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा' का अपना अनुभव तथा अनूपशहर, बुलन्दशहर और सिकन्दराबाद के सुन्दरसाथ की ओर से कुछ भाव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जागनी यात्रा की सूचना मिलते ही सिकन्दराबाद क्षेत्र के सुन्दरसाथ ने विचार-विमर्श कर कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया। सितम्बर 2025 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के वार्षिक महोत्सव में कार्यक्रम की तिथि निश्चित होते ही सभी सुन्दरसाथ ने अनुभव किया कि अब श्री तारतम वाणी के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने का समय आ गया है। सिकन्दराबाद में पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं समस्त मण्डली का पुष्प-मालाओं से भावपूर्ण स्वागत हुआ। ज्ञानपीठ की संगीत मण्डली ने श्री मुखवाणी से 'बिन्द में सिन्ध समाया रे साधो' कीर्तन प्रस्तुत किया। विदुषी दीप्ति जी ने ब्रह्मवाणी के आधार पर मानव जीवन के परम उद्देश्य, स्वयं की पहचान को समझाया।

> *पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।*
> *बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो ।।*

इसके पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने अनूपशहर की पावन भूमि पर ब्रह्मज्ञान का अमृत बाँटते हुए समझाया कि मानव जीवन की वास्तविक सार्थकता केवल वाणी सुनने में नहीं बल्कि उसकी आज्ञा को जीवन में उतारने में है। वाणी-अध्ययन, प्रेम, ध्यान और चितवनी द्वारा अक्षरातीत के स्वरूप की पहचान ही जन्म-मरण के दुःख से मुक्ति का मार्ग है।

18 नवम्बर को बुलन्दशहर क्षेत्र के धमरावली ग्राम में जागनी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य अशोक जी ने ज्ञानवर्धक चर्चा की और पूज्य स्वामी जी ने सभी सुन्दरसाथ को प्रेरित किया कि ब्रह्मवाणी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाते रहें। उन्होंने विश्वास दिलाया कि इस सेवा में श्री राजजी सदैव साथ हैं- 'मैं तुमारे सिर पर, खड़ा हों एक पाए ।' इसके बाद यात्रा सिकन्दराबाद पहुँची जहाँ सुन्दरसाथ ने अत्यन्त प्रेम और उत्साह से स्वागत किया। ज्ञानपीठ के विद्यार्थियोंने 'हो मेरी वासना तुम चलो अगम के पार' का मधुर गायन प्रस्तुत किया। आचार्य अशोक जी ने धर्म के वास्तविक स्वरूप और मानव जीवन में उसके आचरण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी की लगभग एक घंटे की चर्चा ने सभी के हृदय को स्पर्श किया। उन्होंने प्रेम, सेवा, चितवनी और वाणी-मन्थन के साथ अपने निजधाम की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। इस यात्रा ने एक पुरानी स्मृति भी ताजा कर दी। 6 जून 2006 को ग्राम भटपुरा में स्वामी जी के प्रथम आगमन पर हमने एक प्राथमिक विद्यालय में कार्यक्रम की व्यवस्था की थी। जून की भीषण गर्मी के बीच कार्यक्रम के अन्त में अचानक मूसलाधार वर्षा हुई। समस्त ग्रामवासी आनन्दित होकर'श्री प्राणनाथ प्यारे की जय' का उद्घोष करने लगे। वह दृश्य आज भी स्मृति में जीवित है।

19 नवम्बर 2025 को मेण्डवारा में पुनः पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत हुआ और प्रेमपूर्ण वातावरण में जागनी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।इस सम्पूर्ण यात्रा ने अनुभव कराया कि जागनी केवल कार्यक्रमों की शृंखला नहीं बल्कि स्वयं जागने, ब्रह्मज्ञान को जीवन में उतारने और जन-जन तक प्रेम एवं सत्य का सन्देश पहुँचाने की साधना है। इन्हीं भावों के साथ अपने अल्प अनुभव को विराम देता हूँ।

प्रेम प्रणाम जी। आपकी चरणरज

निलेश परमार
जिला झाबुआ, मध्यप्रदेश

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, 2025

प्रेम प्रणाम जी।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से परम पूज्य श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में उत्तर प्रदेश के विभिन्न 60 स्थानों पर आयोजित जागनी यात्रा ने हजारों लोगों के हृदय में ब्रह्मज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने का कार्य किया।

श्री तारतम वाणी की पुकार है,

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।

इस यात्रा में प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। जहाँ लोग कर्मकाण्ड और परम्पराओं तक सीमित थे, वहाँ उन्हें एक पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा अपने आत्मिक स्वरूप को जानने की प्रेरणा मिली।

> "सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम ।
> जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम ।।"

प्रत्येक स्थान पर सुन्दरसाथ ने घर-घर जाकर लोगों को आमन्त्रित किया। विशेष रूप से महिलाओं और वरिष्ठजनों ने पूज्य स्वामी जी की चर्चाओं को अत्यन्त रुचि और श्रद्धा से सुना। पूज्य स्वामी जी एवं आचार्य अशोक जी, सूर्यप्रताप जी, शशांक जी, विजय जी और दीप्ति बहन जी ने मानव जीवन की सार्थकता, आत्म-जागृति तथा क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के विषय को सरलता से समझाया। श्री तारतम वाणी के आधार पर परमात्मा के धाम, स्वरूप और लीला की पहचान पर विशेष प्रकाश डाला गया।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के छात्र सागर जी और अर्जुन जी के वाणी-गायन ने कार्यक्रम को और अधिक भावपूर्ण बनाया।

कड़ाके की ठण्ड और निरन्तर यात्रा के बावजूद पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने बिना अपनी सुविधा की चिन्ता किये जागनी कार्य को जारी रखा और 60 कार्यक्रम पूर्ण किये। उनका यह समर्पण हम सभी के लिये प्रेरणादायी रहा।

बलिया जिले के सिसोटार ग्राम, पूज्य स्वामी जी की जन्मभूमि का कार्यक्रम अत्यन्त भावुक रहा। माता जी, बचपन के साथियों और ग्रामवासियों के बीच स्वामी जी की उपस्थिति ने पुरानी स्मृतियाँ ताजा कर दी। माता जी के दर्शन का लाभ बड़ी संख्या में सुन्दरसाथ ने लाइव प्रसारण के माध्यम से भी लिया।

अन्ततः श्री प्राणनाथ ज्ञानकेन्द्र, पन्ना में धामी सुन्दरसाथ की उपस्थिति में यात्रा का अन्तिम पड़ाव सम्पन्न हुआ। यह यात्रा केवल कार्यक्रमों की शृंखला नहीं बल्कि आत्म-जागृति, ब्रह्मज्ञान और एक परमात्मा की पहचान का व्यापक अभियान बनकर सामने आयी।

प्रेम प्रणाम जी।

स्वर्ण ग्रोवर,

सहारनपुर

जागनी यात्रा सहारनपुर कुछ संस्मरण

> *खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार ।*
> *खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार ।।*

सरकार श्री जी के समय से ही जागनी यात्रा का विचार चल रहा था, परन्तु हर कार्य अपने निश्चित समय पर ही पूर्ण होता है। पूज्य श्री राजन स्वामी जी के मन में उत्तर भारत में जागनी यात्रा का संकल्प जागा और सतगुरु महाराज श्री रामरतन जी की अपार मेहर से यह शुभ कार्य प्रारम्भ हुआ।

18 अक्टूबर 2025 को शेरपुर आश्रम के धाम चबूतरे से जागनी यात्रा का शुभारम्भ हुआ। सभी सुन्दरसाथ में अद्भुत उमंग, उत्साह और प्रेम था। ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों ने वाणी-गायन से कार्यक्रम का आरम्भ किया। अनिल श्रीवास्तव जी ने श्री मुखवाणी के आधार पर अपने विचार रखे तथा पूज्य स्वामी जी ने वाणी की चैपाइयों द्वारा सभी को चितवनी की ओर प्रेरित करते हुए उनके प्रश्नों और शंकाओं का समाधान किया।

इसके बाद प्रतीक्षित दिन आया। 29 अक्टूबर 2025 को सहारनपुर में जागनी यात्रा का नौवाँ दिन था। पूज्य स्वामी जी के आगमन पर सभी सुन्दरसाथ पंक्तिबद्ध होकर स्वागत के लिये खड़े थे। महिलाओं ने चरणों में पुष्प अर्पित किये और पुरुष सुन्दरसाथ ने पुष्पमालाओं से स्वागत किया। उस आनन्द का वर्णन शब्दों में कठिन है।

आचार्य अशोक जी ने कार्यक्रम का सुचारु संचालन किया। ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों ने मधुर वाणी-गायन प्रस्तुत किया, **'देखो नैना नूरजमाल'**, जिसका भाव था कि आत्मिक नेत्रों से अपने प्रियतम का दीदार करें।
विदुषी किरण दीदी ने परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर प्रकाश डाला और आचार्य अशोक जी ने सरल शब्दों में समझाया कि परमात्मा हमारे अन्दर ही विराजमान है, आवश्यकता है अन्तर्मुखी होकर उसे पहचानने की।

तत्पश्चात् सहारनपुर सुन्दरसाथ ने सामूहिक रूप से वाणी गायन प्रस्तुत किया- **'अंदर नाहीं निरमल, फेर-फेर नहावे बाहेर ।'** इसका सन्देश स्पष्ट था कि बाहरी आडम्बर से अधिक आवश्यक है वाणी, चितवनी और आत्मचिन्तन द्वारा अन्तःकरण को निर्मल करना।
पूज्य स्वामी जी तथा सन्त कमल किशोर जी ने अहंकार से मुक्त होने, द्वैत-अद्वैत तथा मन पर नियन्त्रण के विषय में विस्तार से समझाया।

मन के हारे हारिए है, मन के जीते जीत ।
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत ।।

यदि मन को परमात्मा की ओर लगा दिया जाय तो ध्यान गहरा होता है और आत्मिक दृष्टि खुलती है। शरीर, मन और बुद्धि से ऊपर उठकर ही परमात्मा के साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। इसी भाव को वाणी में कहा गया है, 'इत भी धन-धन और उत भी धन-धन।'
अन्ततः इस यात्रा ने यही प्रेरणा दी कि हमें पूज्य स्वामी जी के संकल्प को आगे बढ़ाना है, अपने भीतर प्रियतम की छवि बसानी है और वाणी को केवल सुनना नहीं बल्कि जीवन में उतारना है। अक्षरातीत श्री राज जी की मेहर से जागनी यात्रा के अपने ये अल्प अनुभव आपके समक्ष रखे हैं। किसी प्रकार की त्रुटि रह गयी हो तो कृपया क्षमा करें।
प्रेम प्रणाम जी।

बबली शर्मा, दिल्ली

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 सरसावा ज्ञानपीठ से

तीन वर्ष पूर्व गुजरात की जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का अवसर मिला था। तभी मन में इच्छा हुई थी कि कभी उत्तर भारत में भी ऐसी जागनी यात्रा हो। राजजी की कृपा से वह शुभ समय आया और 18 अक्टूबर 2025 को शेरपुर की पावन तपोभूमि से उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ हुआ।

प्रथम दिवस से ही सुन्दरसाथ में अत्यन्त उत्साह और उमंग दिखायी दी। इसके बाद सहारनपुर में जागनी यात्रा से जुड़ने का अवसर मिला। सरोज दीदी के आग्रह पर सुनीता बहन अमृतसर से और मैं दिल्ली से वहाँ पहुँची। सरोज दीदी, स्वर्णा दीदी और किरण दीदी के साथ कम्पनी बाग पार्क तथा आसपास के क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार किया। योग कर रहे अनेक लोगों ने भी श्री प्राणनाथ जी और जागनी यात्रा के विषय में रुचिपूर्वक सुना।
इसके बाद यमुनानगर, गाजियाबाद, लक्ष्मीनगर, पटाड़ी और नोएडा के कार्यक्रमों में भी सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। प्रत्येक स्थान पर सुन्दरसाथ में जागनी यात्रा के प्रति विशेष उत्साह और सेवा-भाव देखने को मिला।

रोहिणी, दिल्ली का अनुभव विशेष रूप से स्मरणीय रहा। प्रचार के लिये बादली गाँव में स्थानीय लोगों से संवाद करते समय एक व्यक्ति से धर्मग्रन्थों, चारों युगों और कल्कि अवतार के विषय में चर्चा हुई।

हुई। मैंने उन्हें बताया कि इसी विषय के गहन ज्ञान के लिये 21 नवम्बर को रोहिणी में जागनी यात्रा का कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम के दिन स्वामी जी की प्रश्नोत्तरी के दौरान श्रोताओं की एकाग्रता देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। दिल्ली जैसे व्यस्त नगर में भी लोग पूरे मन से चर्चा सुनते रहे।

हुई। मैंने उन्हें बताया कि इसी विषय के गहन ज्ञान के लिये 21 नवम्बर को रोहिणी में जागनी यात्रा का कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम के दिन स्वामी जी की प्रश्नोत्तरी के दौरान श्रोताओं की एकाग्रता देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। दिल्ली जैसे व्यस्त नगर में भी लोग पूरे मन से चर्चा सुनते रहे।

इस सम्पूर्ण यात्रा ने मुझे अनुभव कराया कि जागनी केवल एक धार्मिक कार्यक्रम नहीं बल्कि जन-जन तक ब्रह्मज्ञान पहुँचाने, प्रेम बढ़ाने और सुन्दरसाथ को एक सूत्र में जोड़ने का माध्यम है।
श्री राज जी से यही प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन में भविष्य में भी ऐसी जागनी यात्राएँ निरन्तर चलती रहें और अधिक से अधिक लोगों को आत्म-जागृति तथा ब्रह्मज्ञान का लाभ मिलता रहे।

डॉली गिरधर (दिल्ली)

जागनी यात्रा तम सो मा ज्योतिर्गमय:

यह संसार मोह, अज्ञान और भ्रम के बन्धनों में उलझा हुआ है। मनुष्य माया और कर्म के चक्र में पड़कर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है। श्री मुखवाणी में कहा गया है-

> मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुनं ।
> ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन ।।

इसी अज्ञान-निद्रा से आत्माओं को जगाने के लिये श्री प्राणनाथ जी ने जीवनभर सतगुरु श्री देवचन्द्र जी द्वारा बताये मार्ग पर चलते हुए गाँव-गाँव, नगर-नगर और देश-विदेश में आत्म-जागृति का सन्देश दिया। उनके बाद अनेक परमहंसों एवं संतों ने जागनी की इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

सतगुरु परमहंस श्री रामरतन दास जी ने भी उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में सुन्दरसाथ को जाग्रत किया। उसी परम्परा में सरकार श्री ने अपने सतगुरु के पदचिह्नों पर चलते हुए जन-जन तक पूर्णब्रह्म परमात्मा की पहचान और आत्म-जागृति का सन्देश पहुँचाया। इसके पीछे परमधाम का वही कौल था-

जो तूं भूले मैं तुझको, देऊँगी तुरत जगाए ।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए ।।

आज जागनी की यह मशाल पूज्य श्री राजन स्वामी जी के हाथों में आगे बढ़ रही है। उनके मार्गदर्शन में अनेक सुन्दरसाथ को वेद-शास्त्र और ब्रह्मवाणी का अध्ययन कराया जा रहा है तथा जागनी अभियान देश-विदेश तक विस्तृत हो रहा है। गुजरात, नेपाल तथा उत्तर भारत की यात्राएँ इसी निरन्तर जागनी-क्रम की कड़ियाँ हैं।

इस वर्ष सम्पन्न लगभग 60 दिवसीय उत्तर भारत जागनी यात्रा का शुभारम्भ श्री निजानन्द आश्रम, शेरपुर से हुआ और समापन श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना में हुआ। मुझे भी इसके कुछ कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।

यात्रा में आचार्य अशोक जी, सूर्यप्रताप जी, किरण बहन, दीप्ति बहन एवं अन्य वक्ताओं ने अत्यन्त सरल और सारगर्भित भाषा में आत्म-जागृति, सरल जीवन, सत्य की खोज तथा मानव जीवन रहते परमात्मा की पहचान का सन्देश दिया। उनके प्रवचनों ने सामान्य जन को आत्मचिन्तन की दिशा में प्रेरित किया।

वाणी का भाव है-

झण्डा गाड्यो प्रेम का, चहुँदिस पिउ-पिउ होय ।
न जाने इस झुण्ड में, कौन सुहागिन होय ।।

इस जागनी यात्रा से जुड़े सभी प्रचारक और सेवाभावी सुन्दरसाथ धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने धनी के वचनों को केवल समझा ही नहीं बल्कि सेवा और समर्पण द्वारा जीवन में उतारने का प्रयास भी किया।

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इन रोसन ।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन ।।

प्रेम और समर्पण से जन-जन तक धामधनी का सन्देश पहुँचाने वाली ऐसी जागनी यात्राएँ निश्चित ही आत्म-जागृति की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी तथा समस्त प्रचारक गण के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुन्दरसाथ की चरणरज

कामिनी, हिसार (हरियाणा)

भीतर की एक यात्रा श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ और उत्तर भारत जागनी यात्रा के साथ मेरा अनुभव

आध्यात्मिक यात्राएँ अक्सर एक छोटे से कदम से शुरू होती हैं लेकिन वे भीतर की पूरी दुनिया बदल सकती हैं। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से मेरा जुड़ाव भी मेरे जीवन का ऐसा ही गहरा और सकारात्मक अनुभव रहा है।

इस यात्रा की शुरुआत वार्षिकोत्सव 2025 से हुई। ज्ञानपीठ पहुँचते ही वहाँ के शान्त, भक्तिमय और सकारात्मक वातावरण ने मेरे मन को गहराई से प्रभावित किया। ऐसा लगा जैसे भीतर कुछ नया जाग उठा हो।
वहाँ से लौटने के बाद ब्रह्मवाणी, ध्यान और आत्मचिन्तन को समझने की इच्छा बढ़ने लगी। इसी बीच उत्तर भारत जागनी यात्रा के अन्तर्गत नोएडा में पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा सुनने का अवसर मिला। ध्यान, चितवनी और आत्म-जागृति पर हुई चर्चाओं ने मुझे जीवन को एक नयी दृष्टि से देखने की प्रेरणा दी।

इसके बाद भिवानी में पूज्य स्वामी जी से व्यक्तिगत रूप से मिलने और अपने प्रश्नों, शंकाओं तथा जीवन की उलझनों पर बात करने का सौभाग्य मिला। उनके मार्गदर्शन से मुझे बहुत स्पष्टता मिली और यह अनुभव मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया।

तब से जब भी मन में बेचैनी या भटकाव होता है तो मैं ध्यान, आत्मचिन्तन, वाणी-पाठ और सुन्दरसाथ के साथ चर्चा की ओर लौटती हूँ। इन अभ्यासों से मुझे पुनः शान्ति, सन्तुलन और भीतर से जुड़ने की अनुभूति होती है।

आज श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ से जुड़कर मैं स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली और कृतज्ञ अनुभव करती हूँ। यहाँ से मुझे केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन का उद्देश्य और आन्तरिक स्थिरता भी मिली है।
इस यात्रा ने मुझे सबसे महत्वपूर्ण बात सिखायी कि सच्ची शान्ति बाहर नहीं, हमारे अपने अन्दर ही है, आवश्यकता है केवल सही दिशा और मार्गदर्शन की।

प्रणाम जी ।

अब समया आया रेहेनीय का,
रूह फैल को चाहे।
जो होवे असल अर्स की,
सो फैल ले हाल देखाए ।।

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा,2025
दिवस-12, बिंजलपुर ग्राम

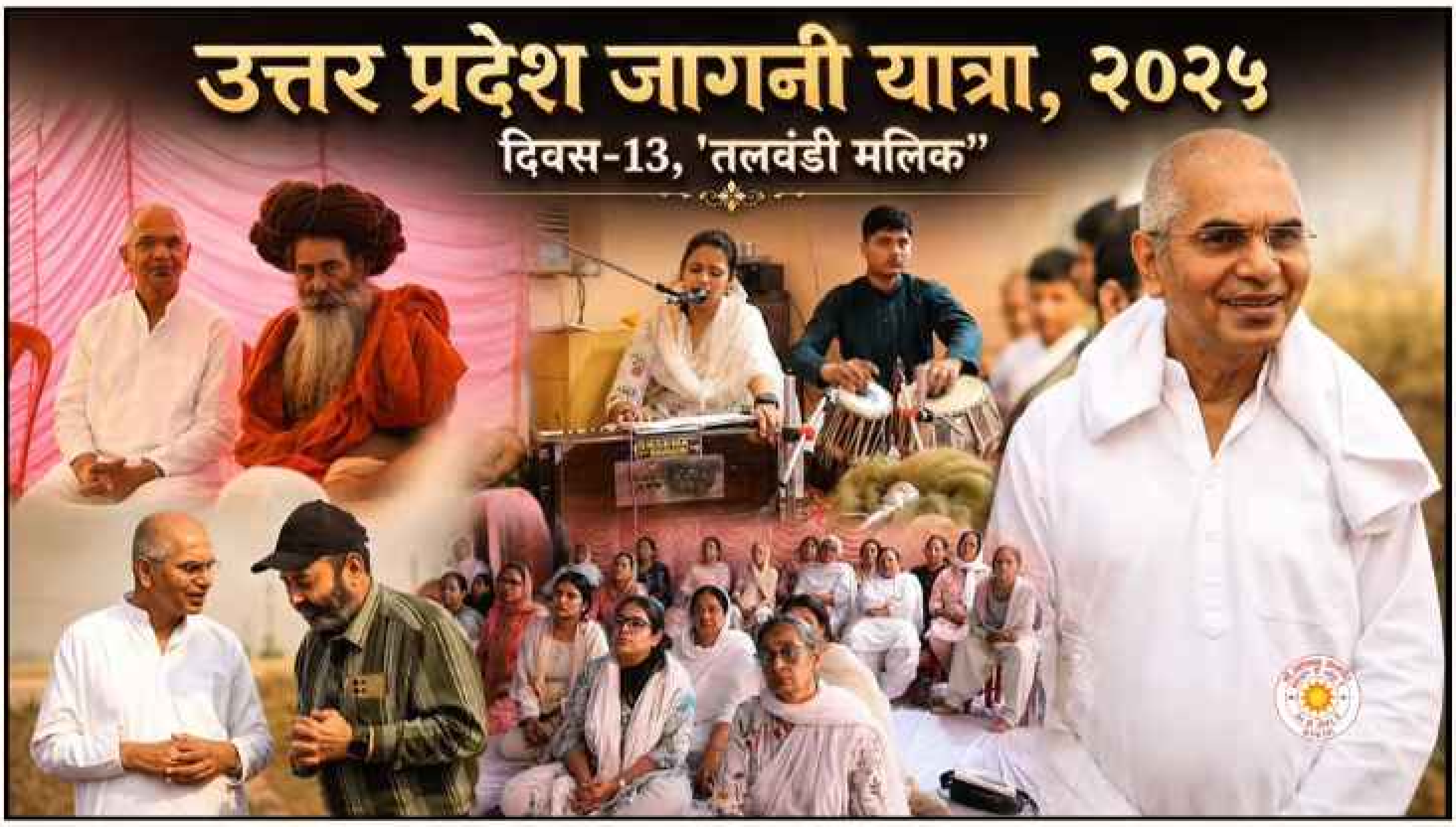
उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-13, 'तलवंडी मलिक"

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-14 ''रंजीतनगर (पटियाला)''

यशिका
गाँव काबरेल, हिसार (हरियाणा)

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के साथ मेरी आध्यात्मिक यात्रा

मेरी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत वर्ष 2025 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के वार्षिकोत्सव से हुई। वहाँ का शान्त और आध्यात्मिक वातावरण मेरे मन को गहराई से छू गया। यहीं से मैंने श्री तारतम वाणी को पढ़ना और समझना प्रारम्भ किया तथा राज-श्यामा जी के साथ मुझे अपने आत्मिक सम्बन्ध को जानने की प्रेरणा मिली।

इसके बाद मैं ज्ञानपीठ की ई-गुरुकुलम् कक्षाओं से जुड़ी, जहाँ प्रत्येक सप्ताह ऑनलाइन माध्यम से वाणी-चर्चा, बीतक-मन्थन और आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन मिलता है। इन कक्षाओं ने मुझे यह समझने में सहायता की कि आध्यात्मिक ज्ञान केवल सुनने के लिये नहीं बल्कि दैनिक जीवन में उतारने के लिये है। विशेष रूप से युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने मुझे बहुत प्रेरित किया।

मेरी इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव 20 नवम्बर 2025 को भिवानी में आयोजित उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा का कार्यक्रम रहा। ज्योत्सना माताजी के मार्गदर्शन और पूज्य श्री राजन स्वामी जी की वाणी-चर्चा से राज-श्यामा जी के साथ वास्तविक आत्मिक सम्बन्ध और एकत्व के भाव को समझने का अवसर मिला।

स्वामी जी की चर्चा सुनकर मन में गहरी शान्ति और आनन्द का अनुभव हुआ। जब भी मैं आध्यात्मिक रूप से विचलित होती हूँ, जागनी यात्रा की स्मृतियाँ, साप्ताहिक ऑनलाइन कक्षाएँ और वाणी-चर्चाएँ मुझे पुनः अपने मार्ग पर केन्द्रित करती हैं।

अन्य स्थानों की यात्रा में सम्मिलित न हो पाने पर भी मैं SPJIN YouTube चैनल के माध्यम से वाणी-चर्चाओं का निरन्तर लाभ लेती रही।

आज मैं पूज्य स्वामी जी तथा उन सभी सेवाभावी साथियों के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ, जो युवाओं और समाज के विभिन्न वर्गों को आध्यात्मिक ज्ञान से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। इस यात्रा ने मुझे भीतर की शान्ति, आत्मचिन्तन और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने की दिशा दी है।

ऐसे अनेक वचन कहे हमको,
जिन एक वचने पहचानो तुमको

सुषमा त्यागी
गुड़गांव

गुरुग्राम जागनी कार्यक्रम एक भावपूर्ण अनुभव

प्रेम प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

वर्ष 2025 के वार्षिक कार्यक्रम में जब पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा की जागनी यात्रा की घोषणा की, तभी मेरे मन में इच्छा हुई कि गुरुग्राम में भी स्वामी जी का कार्यक्रम हो। जब अनीता मलिक जी ने गुरुग्राम के लिये कार्यक्रम लिखवाया तो लगा जैसे मन की इच्छा पूरी हो गयी।

कार्यक्रम की तिथि निकट आ रही थी, तभी अचानक अनीता जी की तबीयत खराब हो गयी और उनको ऑपरेशन करवाना पड़ा। एक क्षण के लिये लगा कि शायद कार्यक्रम स्थगित हो जाय, परन्तु मन में दृढ़ इच्छा थी कि यह अवसर हाथ से न जाये। त्यागी जी के प्रोत्साहन और मलिक साहब के सहयोग से हमने कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

मलिक साहब ने पोस्टर और बैनर की सेवा संभाली तथा मैंने अपने सेक्टर के सामुदायिक केन्द्र की व्यवस्था की। बेबी त्यागी जी, नीलम मेहता जी, रीता राघव जी और सविता गर्ग जी ने घर-घर जाकर प्रचार-प्रसार में पूरा सहयोग दिया। अनीता जी और मलिक साहब ने तन, मन और धन से सेवा की। कार्यक्रम से एक रात पहले तक सभी तैयारियों में लगे रहे।

आखिर वह शुभ दिन आया। 22 नवम्बर 2025 को प्रातः लगभग 9:30 बजे पूज्य स्वामी जी एवं साथ आये सुन्दरसाथ पहले अनीता जी के घर पधारे, जहाँ पुष्पमालाओं से उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया गया। इसके बाद सभी कार्यक्रम स्थल पहुँचे।

ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों के वाणी-गायन से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दीप्ति जी ने मानव जन्म के महत्व पर सरल और मधुर चर्चा की। इसके बाद वाणी-गायन हुआ और आचार्य सूर्यप्रताप जी ने 'एक परब्रह्म की पहचान' विषय पर विचार रखे। बानिका जी के कीर्तन ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

अन्त में पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने 'अहंकार को कैसे समाप्त किया जाय', इस विषय पर अत्यन्त प्रभावशाली चर्चा की। उनकी बातों ने उपस्थित सुन्दरसाथ और धर्मप्रेमी श्रोताओं को आत्मचिन्तन के लिये प्रेरित किया।

कार्यक्रम के बाद स्वामी जी हमारे घर पधारे और भोजन ग्रहण किया। इसके पश्चात् वे बेबी त्यागी जी के घर भी गये और फिर अगले कार्यक्रम के लिये दिल्ली प्रस्थान किया। अगले दिन पीतमपुरा के कार्यक्रम में भी सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।

मेरे लिये यह अत्यन्त सौभाग्य की बात रही कि पूज्य स्वामी जी की सेवा का अवसर मिला और उनके शुभ चरण हमारे निवास पर पड़े।

अक्षरातीत श्री राज जी के चरणों में यही प्रार्थना है कि उनकी मेहर से पूज्य स्वामी जी भविष्य में भी इसी प्रकार जागनी की ध्वजा फहराते रहें और अधिक से अधिक सुन्दरसाथ ब्रह्मज्ञान एवं आत्म-जागृति का लाभ प्राप्त करते रहें।

सुन्दरसाथ की चरणरज

दीपिका सोलन,
हिमाचल प्रदेश

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 अनुभव

प्रिय राज जी,

जागनी यात्रा हो या आपके दर्शन, दोनों ही इस कलियुग में मेरे लिये सबसे बड़े वरदान लगते हैं। मेरे लिये यह सब शब्दों से ज्यादा एहसासों का सफर है, जिनके साथ मैं रोज जीती हूँ। इन यादों को सिर्फ याद भर कर लेना ही दिल को इतनी शान्ति और सुकून दे देता है कि लगता है जैसे राज जी ख़ुद पास बैठ कर सिर पर हाथ फेर रहे हों। फिर भी जब लिखने को कहा गया तो आपका नाम लेकर थोड़ी-सी हिम्मत जुटाई, लेकिन दिल के हाल को शब्दों में बाँधना आसान नहीं है।

सबसे पहले, धाम धनी जी की जय। जब पहली बार जागनी यात्रा के बारे में सुना तो अन्दर से जोर की आवाज आयी कि मुझे भी राज जी के रास्ते पर चलना है, मुझे भी यह यात्रा करवानी है। उस समय न यात्रा का स्वरूप पता था, न उसकी मर्यादा, बस इतना समझ आया कि जहाँ राजजी का नाम है, वहीं मेरा घर है। जब सुन्दरसाथ से बातें की तब पता चला कि राज जी हमारे लिये कितनी जगह जा-जा कर, कितनी रूहों को जगाने के लिये अपना शरीर, समय, सब कुछ अर्पण कर रहे हैं। यह सोचकर आँखों में आँसू आ गये, हम कितनी छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और राज जी हमारे लिये कितना बड़ा संघर्ष कर रहे हैं। तभी मन में संकल्प लिया कि मैं भी जागनी यात्रा का हिस्सा बनूँगी।

आचार्य अशोक जी को नाम लिखवा दिया, पर तैयारी का कोई अनुभव नहीं था। न यह जानकारी थी कि इतने सारे सुन्दरसाथ आयेंगे, स्वामीजी पहली बार आयेंगे, सबका कैसे स्वागत होगा, कहाँ चर्चा होगी, खाने की क्या व्यवस्था होगी। बस दिल के एक कोने से आवाज आती थी कि जब राज जी साथ हैं तो फिक्र कैसी? राज जी का नाम लेकर जब तैयारी शुरू की तो दिल में इतनी खुशी थी कि हर सुबह उठने से पहले ही चेहरा मुस्कुरा देता था। घर सजाना, राज जी के लिये खरीदारी करना, चर्चा की जगह सोचना, यह सब इतना प्यारा था कि हर पल यही सोचती थी कि मैंने ऐसा क्या किया जो मुझे यह मौका मिला ? 4 नवंबर 2025 चर्चा के लिये तय हुई थी लेकिन सारे सुन्दरसाथ 3 नवंबर की रात को ही आ गये। उस रात तो सचमुच ऐसा लग रहा था जैसे घर की रोशनी भी ज्यादा चमक रही थी और लोगों के चेहरे भी। रात को सबने साथ बैठकर खाना खाया, राज जी की बातें की - हर पल ऐसा लग रहा था जैसे आसमान से कृपा की बूँदें बरस रही हों।

अगली सुबह फैक्टरी में स्वामीजी की चर्चा थी। सारे सुन्दरसाथ एक साथ वहाँ गये। राजजी की कृपा से स्वामीजी की आवाज, उनका प्रेम, उनकी दृष्टि सब सीधा दिल तक उतर रहा था। ऐसा लग रहा था कि यह पल रुक जाय, समय आगे ही न बढ़े। शाम को जब घर पर स्वामीजी की चर्चा हुई तो महसूस हुआ जैसे राजजी ने चर्चा के माध्यम से मेरी झोली इतनी भर दी हो कि अब माँगने के लिये भी कुछ नहीं बचा।5 नवंबर की सुबह जब सब वापस लौटने लगे तो दिल बहुत भारी हो गया। ऐसा लगा जैसे घर से रोशनी निकल कर फिर दूर जा रही हो। उसी समय अन्दर से राजजी की कोमल-सी आवाज आयी, "मैं तो हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" तब समझ आया कि जागनी यात्रा कुछ दिनों का कार्यक्रम नहीं, जिन्दगी भर का सहारा है। कभी-कभी अकेले बैठकर उन दिनों को याद करती हूँ तो हर लम्हा एक छोटा-सा चमत्कार लगता है। स्वामीजी की मुस्कान, सुन्दरसाथ की नरम-सी बातें दिल से एक छोटी-सी कविता निकलती है-

हर कदम पर आप का सहारा मिल गया,
भीड़ में भी अपना सा इशारा मिल गया ।
जागनी यात्रा का हर पल दिया बन कर जल गया,
और अँधेरे दिल के हर कोने में उजियारा मिल गया ।

दिल से शुक्रिया सब सुन्दरसाथ का, जिन्हें देख कर लगा कि राज जी ने अपना प्रेम रूप लेकर मेरे घर भेज दिया। स्वामीजी का, जिनकी हर चर्चा ने अन्दर के डर को मिटा कर विश्वास का दिया जला दिया और सबसे बढ़कर, राज जी का, जिनकी कृपा के बिना न यह यात्रा होती, न यह अनुभव, न ही यह लिखने की शक्ति मिलती। बहुत-बहुत धन्यवाद राज जी कि आपने मुझे अपने चरणों तक आने दिया, अपनी जागनी यात्रा का छोटा-सा हिस्सा बनने दिया और इतनी बड़ी नेमत दी कि आज भी सिर्फ आपको याद करके दिल भर आता है, आँखें नम हो जाती हैं और फिर भी चेहरा खुशी से मुस्कुरा उठता है।

सीमा सेठी,
सहारनपुर

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 सहारनपुर का अनुभव

सुन्दरसाथ जी, प्रणाम जी।

वर्ष 2022 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा द्वारा पूज्य श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में आयोजित जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का अवसर नहीं मिल पाया था। तब से मन में इच्छा थी कि भविष्य में ऐसी यात्रा का लाभ अवश्य मिले। वर्ष 2025 में जब उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों पर 60 दिवसीय जागनी यात्रा की घोषणा हुई और सहारनपुर भी उसमें सम्मिलित हुआ तो हम सभी सुन्दरसाथ अत्यन्त प्रसन्न हुए।

18 अक्टूबर 2025 को परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की पावन भूमि शेरपुर से यात्रा का शुभारम्भ हुआ। देश के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में सुन्दरसाथ वहाँ पहुँचे। धाम चबूतरे पर पूज्य स्वामी जी ने वाणी-चर्चा के साथ प्रश्नोत्तर द्वारा अनेक जिज्ञासाओं और शंकाओं का तर्क एवं प्रमाण सहित समाधान किया।

सहारनपुर कार्यक्रम की तैयारी कई दिनों पूर्व से प्रारम्भ हो गयी थी। बीतक में वर्णित सेवा-विभाजन से प्रेरणा लेकर प्रचार-प्रसार, पण्डाल, रंगोली, वाणी-गायन, राज जी का शृंगार, भोजन और अनुशासन आदि सेवाएँ अलग-अलग सुन्दरसाथ को सौंपी गयी। सभी ने प्रेम और निष्ठा से अपनी सेवा निभायी।

कार्यक्रम के दिन पूज्य स्वामी जी और साथ आये सुन्दरसाथ का 'श्री प्राणनाथ प्यारे की जय' के उद्घोष और पुष्पमालाओं से भावपूर्ण स्वागत किया गया।

राज जी के आह्वान के बाद किरण दीदी ने 'खोज बड़ी संसार' चौपाई के भाव को सरल शब्दों में समझाया।

इसके पश्चात् ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों ने 'अति मीठे रसीले रंग भरे' वाणी-गायन प्रस्तुत किया। दीप्ति जी ने समझाया कि प्रियतम अक्षरातीत की वास्तविक पहचान अपने ही हृदय में करनी है। आचार्य अशोक जी ने परमात्मा केवल एक है, इस विषय पर चर्चा करते हुए अनेक प्रचलित भ्रान्तियों पर प्रकाश डाला और एक पूर्णब्रह्म परमात्मा की पहचान एवं भक्ति की ओर प्रेरित किया।

अन्त में पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने श्री तारतम वाणी के प्रकाश में परमात्मा के धाम, स्वरूप और लीला को समझाया तथा प्रश्नोत्तर के माध्यम से जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान किया।

इस जागनी यात्रा का मूल उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज को एक परब्रह्म की पहचान कराना और आत्म-जागृति की दिशा में प्रेरित करना है। ऐसे कार्यक्रम सुन्दरसाथ में प्रेम, सेवा और वाणी के प्रति जागरूकता को और दृढ़ करते हैं।

सहारनपुर के साथ-साथ बड़गाँव, टपरी, टाबर, नकुड़, रुड़की, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, लक्ष्मीनगर, नोएडा और रोहिणी सहित अनेक स्थानों पर भी यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।

इस जागनी यात्रा के सुखद और आध्यात्मिक अनुभव सदैव स्मरणीय रहेंगे।

प्रेम प्रणाम जी।

अनिता पुंडीर,
यमुनानगर

जागनी यात्रा - प्रेम, सेवा और समर्पण का अनुभव

श्री राज।

सुन्दरसाथ जी जैसा कि आप सभी जानते हैं, 18 अक्टूबर से प्रारम्भ हुई जागनी यात्रा गाँव-गाँव और शहर-शहर आगे बढ़ती रही। इस यात्रा में प्रत्येक स्थान पर सुन्दरसाथ से इतना प्रेम मिला कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

जब किसी पड़ाव से आगे बढ़ने का समय आता तो वहाँ के सुन्दरसाथ नम आँखों से विदा करते। कई स्थानों पर लोग गले मिलकर रो पड़े और पूज्य स्वामी जी से प्रत्येक वर्ष ऐसी जागनी यात्रा करने की प्रार्थना की। हर स्थान की वाणी-चर्चा सरल, प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी रही।

हमारे शहर में भी पूज्य स्वामी जी की चर्चा सुनकर मेरी एक सहेली ने कहा, **"बहन, तुम्हारे गुरुजी पूर्णतः सरल और परमहंस भाव वाले हैं। इतनी सादगी मैंने पहली बार देखी है।''** वहीं एक पड़ोसी ने आचार्य अशोक जी के व्यक्तित्व को देखकर कहा कि उनके चेहरे पर विशेष तेज और शान्ति दिखायी देती है।

मुझे यात्रा में अधिक समय तक साथ रहने का अवसर तो नहीं मिला लेकिन जितना भी सुन्दरसाथ की रहनी, सेवा और समर्पण को देखा, उससे बहुत कुछ सीखने को मिला। कुछ गृहस्थ सुन्दरसाथ ऐसे भी हैं, जो परिवार में रहते हुए धनी के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। श्रेयस जी के शान्त, सरल और निष्पक्ष स्वभाव ने विशेष रूप से प्रभावित किया। गृहस्थ होकर भी उनका आचरण एक साधक जैसा लगा।

यात्रा के प्रति अपने भाव कुछ पंक्तियों में

जागनी यात्रा में घटाओं से निकलता सूरज देखा,
चाँद की चाँदनी सा सखियों में नूर देखा ।
सुन्दरसाथ में बढ़ता हुआ अनुपम प्रेम देखा,
शहर-शहर गाँव-गाँव जागनी का जुनून देखा ।।
कई बाधाओं के बाद भी यात्रा को चलते देखा,
सेवा समर्पण और सहयोग का अद्भुत रूप देखा ।।
प्रियतम के प्रति इश्क और दीवानापन देखा,
हर हृदय में जागनी का नया स्पन्दन देखा ।।
और क्या-क्या बताऊँ सुन्दरसाथ जी,
स्वामी जी को बिना विश्राम सेवा करते देखा,
फिर भी चेहरे पर बेहिसाब नूर देखा ।।
हर पल मुस्कुराते हुए, बच्चों को प्रेम से निहारते देखा,
और अपने जीवन से प्रेम, सेवा एवं समर्पण का
सच्चा स्वरूप दिखाते देखा ।।

यह जागनी यात्रा मेरे लिये केवल एक यात्रा नहीं बल्कि प्रेम, सेवा, रहनी और समर्पण को निकट से देखने का अवसर रही।
प्रणाम जी।

ले सको तो लीजियो, फेर ऐसा ना आवे समया

मनुष्य जीवन कोई दुर्घटना नहीं, बल्कि जन्म–जन्मांतरों में संचित कर्मों की गहन और सूक्ष्म परिणति है। यह सम्पूर्ण जीवन हर पल दाँव पर लगा है क्षण-क्षण सरकता हुआ, चुपचाप विदा लेता हुआ। हम घड़ियाँ गिनते रहते हैं, और अस्तित्व हमें गिनता चला जाता है।

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह इस दुर्लभ जीवन-अवसर को नींद में नहीं, बल्कि पूर्ण जागरूकता के साथ जिए। अपने केन्द्र की खोज करे, क्योंकि वहीं से जीवन का वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। यह देह कोई बोझ नहीं, चेतना का वाहन है—एक अमूल्य साधन। और समय कोई साधारण प्रवाह नहीं, वह अनमोल सम्पदा है जो हर क्षण काल के हाथों लुटती चली जाती है। जो जीवन को टालता रहता है, उसके हाथ अंत में केवल गहरा पश्चाताप ही रह जाता है।

डी. पी. सिंह,

रुड़की

जागनी यात्रा रुड़की का प्रेरक अनुभव

शेरपुर से प्रारम्भ हुई जागनी यात्रा में मुझे लगभग दस स्थानों पर पूज्य श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। स्वामी जी तथा श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के आचार्यों ने अध्यात्म, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, आवागमन से मुक्ति तथा अक्षरातीत की पहचान जैसे गूढ़ विषयों को अत्यन्त सरल भाषा में समझाया।

इस यात्रा में मेरे लिये सबसे विशेष अनुभव रुड़की में अपने गृह-स्थान पर जागनी कार्यक्रम का आयोजन रहा। यहाँ के सुन्दरसाथ विभिन्न स्थानों और समूहों से जुड़े हुए थे, इसलिये सभी को एक मंच पर लाना चुनौतीपूर्ण था। आयोजन टीम के प्रयास और सुन्दरसाथ के सहयोग से यह सम्भव हुआ। जहाँ लगभग 200-250 लोगों के आने की अपेक्षा थी, वहीं करीब 450-500 सुन्दरसाथ और जिज्ञासुओं ने वाणी-चर्चा एवं वाणी-गायन का लाभ लिया।

कार्यक्रम में विदुषी ज्योति जी ने सतयुग से कलियुग तक की आध्यात्मिक यात्रा तथा कलियुग में परब्रह्म के आगमन विषय पर चर्चा की। आचार्य अशोक जी ने वेद, उपनिषद् और पुराणों से सम्बन्धित विषयों के साथ ब्रह्मा, सरस्वती, गायत्री तथा हंस के आध्यात्मिक अर्थ को सरलता से समझाया।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने सुन्दरसाथ और आगन्तुकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का ब्रह्मवाणी एवं शास्त्रों के आधार पर समाधान किया। विदुषी किरण जी ने मानव जीवन की सार्थकता और उसके वास्तविक उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

विशेष रूप से प्रश्नोत्तर सत्र से अनेक जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान हुआ। कार्यक्रम से प्रभावित होकर कुछ आगन्तुक अधिक अध्ययन के लिये आध्यात्मिक साहित्य भी अपने साथ ले गये।

यह जागनी कार्यक्रम मेरे लिये प्रेम, ज्ञान और सामूहिक सहयोग का अत्यन्त प्रेरक अनुभव रहा।

प्रेम प्रणाम जी।

अनीता रानी,
भिवानी (हरियाणा)

जागनी यात्रा हमारे घर का अविस्मरणीय सौभाग्य

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी, प्रणाम। पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने 18 अक्टूबर 2025 से उत्तर भारत जागनी यात्रा प्रारम्भ की। पिछले वार्षिकोत्सव में मैंने उनसे भिवानी में सत्संग हेतु पधारने की प्रार्थना की थी। जब 20 अक्टूबर को ज्ञात हुआ कि 31वाँ जागनी कार्यक्रम 20 नवम्बर 2025 को भिवानी में होगा तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

कार्यक्रम की तिथि निश्चित होते ही हमारे परिवार में केवल उसी की तैयारियों की चर्चा रहने लगी। मैं, मेरे पति संजय कुमार, बेटी जया और बेटा मनीष तैयारियों में जुट गये। मेरी बहनों, भाइयों, भाभियों तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने भी पूर्ण सहयोग दिया। जया, भाविका और मणि ने घर की सजावट में विशेष सेवा की।

लम्बी प्रतीक्षा के बाद 19 नवम्बर को रात्रि लगभग 8.30 बजे पूज्य स्वामी जी हमारे निवास पर पधारे। परिवार और उपस्थित सुन्दरसाथ ने हृदय से उनका स्वागत किया। उनके चरण पड़ते ही ऐसा लगा मानो घर का प्रत्येक कोना आनन्द से भर गया हो।

अगली सुबह स्वामी जी ने हमारे घर के मन्दिर में पारायण का समाप्ति पूजन किया। इसके बाद प्रातः 10 बजे पंजाबी कम्युनिटी सेंटर, भिवानी में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। ज्योति जी, ज्योत्सना जी, आचार्य अशोक जी तथा पूज्य स्वामी जी की ब्रह्मवाणी-चर्चा का सभी ने लाभ लिया।

पूज्य स्वामी जी ने एक परमात्मा की पहचान, प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और विरह के भाव को अत्यन्त सरल ढंग से समझाया। उन्होंने कहा कि सच्चा प्रेम तभी उत्पन्न होता है जब हमें यह स्पष्ट ज्ञान हो कि हमारा परमात्मा कौन है और उससे हमारा सम्बन्ध क्या है। दृढ़ श्रद्धा और समर्पण से विरह का भाव जागता है और वही भीतर के काम, क्रोध तथा अहंकार को जलाकर हृदय को निर्मल करता है।

मेरी कॉलोनी और आसपास के अनेक लोगों ने पहली बार इतनी एकाग्रता से ब्रह्मवाणी की चर्चा सुनी और वे इससे बहुत प्रभावित हुए। 20 नवम्बर की संध्या को पूज्य स्वामी जी को अगले जागनी कार्यक्रम हेतु दिल्ली के लिये विदा करना हमारे लिये अत्यन्त भावुक क्षण था। आज भी उन दिनों को याद करती हूँ तो कभी मन आनन्द से भर उठता है और कभी आँखें नम हो जाती हैं।

कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है मानो स्वामी जी आज भी हमारे ऊपर वाले कमरे में ध्यान कर रहे हों। जब सुबह-शाम मन्दिर में बैठकर वाणी पढ़ती हूँ या ध्यान करती हूँ तो उनके सान्निध्य की वही अनुभूति पुनः जीवित हो उठती है।

हमारे परिवार के लिये यह जागनी कार्यक्रम केवल एक आयोजन नहीं किन्तु जीवनभर सँजोकर रखने वाली आध्यात्मिक स्मृति बन गया है।

प्रेम प्रणाम जी।

नरेश शर्मा
गाजियाबाद

जागनी यात्रा 2025 गाजियाबाद का आत्मिक अनुभव

प्राणाधार आत्म-सम्बन्धी सुन्दरसाथ जी, प्रेम प्रणाम जी।
18 अक्टूबर 2025 को शेरपुर आश्रम से श्री श्री 108 महाराज रामरतन दास जी का आशीर्वाद लेकर जागनी यात्रा प्रारम्भ हुई। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती गयी, मेरे मन में भी उत्सुकता बढ़ती गयी। अन्ततः 14 नवम्बर 2025 को परम पूज्य श्री राजन स्वामी जी, आचार्यगण और सुन्दरसाथ का कारवाँ गाजियाबाद पहुँचा।
गाजियाबाद और आसपास के सुन्दरसाथ ने बड़े प्रेम, उत्साह और समर्पण से तन, मन और धन द्वारा सेवा की। सभी ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी को निष्ठापूर्वक निभाया। इसके लिये मैं समस्त गाजियाबाद सुन्दरसाथ के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।
पूज्य श्री राजन स्वामी जी और आचार्य अशोक जी की चर्चा से सभी इतने प्रभावित हुए कि यह भाव उठा कि 14 नवम्बर को प्रत्येक वर्ष ब्रह्मवाणी सत्संग के रूप में स्मरणीय बनाया जाये। प्रारम्भ में एक दिवसीय और आगे चलकर सम्भव हो तो तीन दिवसीय आयोजन किया जाय, ऐसी सुन्दरसाथ की भावना है।
उस दिन मेरे हृदय में वाणी की यह चैपाई बार-बार गूँजती रही -

> मेरी सैयल रे, साह आए थे मेरे घर ।
> मैं पेहेचान ना कर सकी, पिउ चले पुकार पुकार ।।

जब मंच पर ब्रह्मज्ञान की वर्षा हो रही थी, मैं सेवा के अन्य कार्यों में व्यस्त था। बाद में लगा कि कहीं उस अमूल्य अवसर का पूरा लाभ तो नहीं छूट गया। स्वामी जी के ये शब्द आज भी प्रेरित करते हैं कि अब घर-घर जाकर जागनी का कार्य करो, शेष धनी पर छोड़ दो।
जागनी यात्रा ने मुझे आत्मचिन्तन की ओर भी प्रेरित किया। वाणी की ये पंक्तियाँ हृदय को छूती हैं-

> सई रे अब मैं कहा करूँ,
> मेरा हाल होसी बिध किन ।
> वतन बैठ सैयन में,
> क्यों कर करूँ रोसन ।।

मन में प्रश्न उठा, जब जागनी का यह खेल पूर्ण होगा तब मेरी आत्मा अपनी रहनी, करनी और सेवा के विषय में क्या कहेगी?
इस यात्रा से मेरी आत्मा को बहुत बल मिला। मेरे भीतर जो कुछ दोष और कठोरता थी, उन्हें पहचानने और सुधारने की प्रेरणा मिली। जिनके प्रति कभी कटु वचन कहे या लिखे हों, उनके लिये मन में पश्चाताप और क्षमा का भाव जागा है।
यही इस जागनी यात्रा की मेरे लिये सबसे बड़ी उपलब्धि है। केवल ज्ञान सुनना नहीं बल्कि स्वयं को देखना, बदलना और प्रेम के साथ जागनी के कार्य में आगे बढ़ना।
सभी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम जी।

श्री मेघसिंह, श्री ज्ञानवती, श्री राजेन्द्र सिंह
नेहचलपुर, अत्तल ततार पुर, जि. एटा

श्री प्राणनाथ जी जागनी अभियान नेहचलपुर अनुभव

> रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार ।
> मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार ।।

अर्थात् धामधनी श्री इन्द्रावती जी के हृदय-कमल में विराजमान होकर हम सुन्दरसाथ को यह शिक्षा देते हैं कि मानव जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये। संसार के जीव माया में उत्पन्न होकर उसी में आसक्त रहते हैं, परन्तु हम ब्रह्मसृष्टियों का सम्बन्ध परमधाम से है। इसलिये वाणी बार-बार हमें अपनी वास्तविक पहचान और उद्देश्य की ओर जागृत करती है।

इसी भाव को लेकर नेहचलपुर, जिला एटा के सुन्दरसाथ ने श्री प्राणनाथ जी जागनी अभियान - उत्तर भारत में अपना योगदान दिया। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के सौजन्य से 30 नवम्बर 2025 को यहाँ जागनी कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेघसिंह जी, श्रीमती ज्ञानवती जी, श्री राजेन्द्र सिंह जी सहित ग्रामीण सुन्दरसाथ ने तन, मन और धन से सेवा में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

> सनमंध मूल को, मैं तो पाउ पल छोड़यो न जाए ।

अपनी इसी आत्मिक निस्बत को स्मरण रखते हुए, बुजुर्गों के आशीर्वाद, सुन्दरसाथ के सहयोग और धामधनी की मेहर से कार्यक्रम की तैयारियाँ पूर्ण हुई।। कार्यक्रम का शुभारम्भ सातारपुर अव्वल में हुआ। श्रीनिवास जी ने श्री मुखवाणी की पंक्ति-

> रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार ।

के भाव पर चर्चा की। इसके बाद श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों ने मधुर कीर्तन प्रस्तुत किया।
आचार्य अशोक जी और सूर्यप्रताप जी ने सरल भाषा में मानव जीवन की महत्ता तथा तैंतीस प्रकार के देवी-देवताओं के विषय को समझाया। उनकी चर्चा से ग्रामवासियों को अनेक आध्यात्मिक विषयों पर नयी दृष्टि प्राप्त हुई।
इसके पश्चात् परमपूज्य ब्रह्ममुनि श्री राजन स्वामी जी ने वेद-वेदान्त तथा ब्रह्मवाणी के गूढ़ तत्वों को सरलता से समझाते हुए प्रेरणा दी कि तत्त्वज्ञान केवल सुनने के लिये नहीं बल्कि उसे अपने हृदय और जीवन में धारण करने के लिये है।

इस ब्रह्मज्ञान को सुनकर सभी सुन्दरसाथ ने अपने दुर्लभ मानव जीवन को धन्य अनुभव किया। अन्त में पन्ना धाम से पधारे श्री दिलीप महाराज जी के आशीर्वचनों और अर्ज़ी के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।
इस जागनी कार्यक्रम से यही प्रेरणा मिली कि विपरीत परिस्थितियों में भी धनी पर दृढ़ विश्वास रखते हुए ज्ञान, सेवा और प्रेम के मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिये।

सदा आनन्द मंगल में रहिए,
सदा आनन्द-मंगल में रहिए ।

प्रेम प्रणाम जी।

श्रीमति मिथिलेश शर्मा
गाजियाबाद

उत्तर भारत जागनी यात्रा अभियान 2025 एक अनुभव

प्रेम प्रणाम जी।

18 अक्टूबर 2025 से परम आदरणीय श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में प्रारम्भ हुई उत्तर भारत जागनी यात्रा का मुख्य उद्देश्य जन-जन के आध्यात्मिक प्रश्नों का श्री तारतम वाणी तथा विभिन्न धर्मग्रन्थों के प्रमाणों द्वारा समाधान करना था। एक परब्रह्म अक्षरातीत सच्चिदानन्द कौन है, कहाँ है और उसका वास्तविक स्वरूप क्या है?
सतगुरु महाराज के आशीर्वाद से पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने समाज-कल्याण के अनेक संकल्प लिये हैं। कन्या गुरुकुल की स्थापना, साहित्य-प्रकाशन के लिये प्रिंटिंग प्रेस और ज्ञानपीठ में आचार्यों का प्रशिक्षण इसी दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं।
जागनी यात्रा का शुभारम्भ उत्तर प्रदेश के शेरपुर स्थित परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के पावन आश्रम से हुआ। महाराज जी के आशीर्वाद के साथ यात्रा का कारवाँ आगे बढ़ा। प्रत्येक पड़ाव पर श्री तारतम वाणी और विभिन्न धर्मग्रन्थों के आधार पर जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

इस यात्रा में पूज्य स्वामी जी का दृढ़ संकल्प विशेष प्रेरणादायी रहा। दिल्ली के पीतमपुरा कार्यक्रम के समय उनका स्वास्थ्य अत्यन्त खराब था। तेज ज्वर, गले की समस्या और बढ़ती ठण्ड के बावजूद उन्होंने यात्रा रोकने से मना कर दिया। अगले कार्यक्रम भी ग्रामीण क्षेत्रों में खुले टेन्ट और ठण्डी हवाओं के बीच सम्पन्न हुए, फिर भी उनका उत्साह और संकल्प बना रहा।

दिन और रात्रि-दोनों समय कार्यक्रम होते थे। आचार्यगण की चर्चाओं के साथ लगभग एक घण्टे की प्रश्नोत्तरी में पूज्य स्वामी जी प्रेमपूर्वक श्री तारतम वाणी और विभिन्न धर्मग्रन्थों के सन्दर्भों से जिज्ञासाओं का समाधान करते थे। यात्रा के प्रत्येक स्थान पर ज्ञानपीठ का साहित्य और वाणी-टीकाएँ भी उपलब्ध कराई गयीं। इसी अत्यन्त व्यस्त यात्रा के दौरान पूज्य स्वामी जी ने लगभग 30 दिनों में भ्रमोच्छेदनम् नामक प्रश्नोत्तर शैली का ग्रन्थ तैयार किया। इसमें निजानन्द समाज से जुड़े अनेक प्रश्नों और भ्रान्तियों का प्रमाण सहित समाधान प्रस्तुत किया गया है।
वाणी का सन्देश मनुष्य को कर्मकाण्ड तक सीमित न रहकर एक परमात्मा की वास्तविक पहचान की ओर बढ़ने के लिये प्रेरित करता है -

> "कलियुग केवल नाम अधारा,
> सुमिर-सुमिर नर उतरहिं पारा।"

लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पूर्व श्री मिहिरराज जी के तन तथा श्री इन्द्रावती जी की आत्मा के माध्यम से प्रकट ब्रह्मज्ञान को आज पूज्य श्री राजन स्वामी जी जागनी अभियान द्वारा जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। यह यात्रा केवल स्थानों की यात्रा नहीं बल्कि संशय से सत्य की ओर, कर्मकाण्ड से तत्त्वज्ञान की ओर और बाहरी खोज से परमात्मा की वास्तविक पहचान की ओर बढ़ने का अभियान है।
ऐसे सतगुरु के सान्निध्य और इस जागनी कार्य से जुड़ना हमारे लिये परम सौभाग्य है।

"सो सुन के घाव ना लागही, हाए हाए ऐसे बजर दिल।"

मनुष्य प्राय: सत्य को ऐसे सुनता है जैसे कोई कविता सुनी जाती है—रस लिया, भाव आया, सिर हिलाया... और फिर वही का वही लौट गया। लेकिन सत्य कविता नहीं है अपितु एक शल्य-क्रिया है।आध्यात्म सहलाता नहीं, वह अहंकार को चोट करता है, पुरानी आदतों को घायल करता है, और उस गले-सड़े जीवन की हर वृत्ति को लहूलुहान कर देता है जिसे हम अब तक "मैं" कहकर ढोते आए हैं।

पर श्रीजी की पीड़ा यहाँ और गहरी है। वे कहते हैं—मेरे सुन्दरसाथ के हृदय पर ऐसी संवेदनहीनता छा गई है कि मेरे तीर जैसे शब्द भी उन बज्र-हृदयों पर एक छोटा-सा घाव तक नहीं बना पाते। अमृत बरस रहा है, पर पात्र उल्टे रखे हैं। मैंने आत्म जागृति का शंखनाद कर दिया और मेरा साथ गहरी नींद में ऊबासियाँ ले रहा है। मैं बीज डाल रहा हूँ पर हृदय रूपी भूमि पत्थर सी है, जहाँ अंकुरण की कोई संभावना नहीं। श्री जी के ये वचन उनके हृदय का शोकगीत प्रतीत होते है। सुन्दरसाथ की अवस्था पर उनकी वेदना का प्रयाय ऐसा है जैसे सागर में मछली प्यासी रह गई और कल्पतरु के नीचे बैठा यात्री भूख से मर गया।

सुषमा शर्मा, गाँव पराड़ी,
जिला गौतम बुद्ध नगर (उ. प्र.)

जागनी यात्रा सतगुरु कृपा का अविस्मरणीय अनुभव

बोलिये श्री प्राणनाथ प्यारे की जय ।
श्री सतगुरु महाराज की जय ।

मेरे हाथ लिखने में, बुद्धि विवेचन करने में और जिह्वा इस अनुभव को पूर्ण रूप से कहने में असमर्थ है। फिर भी श्री राज जी की मेहर और प्यारे सतगुरु की कृपा से अपने कुछ भाव प्रस्तुत कर रही हूँ।

एक समय मन में यह पीड़ा रहती थी कि न तो आश्रम जाकर सतगुरु के सान्निध्य का लाभ ले पाती हूँ और न उन्हें अपनी छोटी-सी कुटिया में बुला पाती हूँ। मेरी साधना मंगल आरती, संध्या आरती और तारतम मन्त्र तक ही सीमित थी। परन्तु कोरोना का समय मेरे लिये एक प्रकार से मेहर बन गया। रिकार्ड की गयी ब्रह्मवाणी चर्चाओं और बाद में पूज्य श्री राजन स्वामी जी की ऑनलाइन चर्चाओं के माध्यम से सतगुरु सान्निध्य और वाणी का निरन्तर लाभ मिलने लगा।

मेरे लिये अत्यन्त आनन्द का क्षण तब आया जब प्रेमपूर्वक किये गये आग्रह पर पूज्य स्वामी जी ने मेरे गाँव पराड़ी आने की स्वीकृति दी। मैं और मेरा पूरा परिवार अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि हमें सतगुरु एवं सुन्दरसाथ की सेवा का अवसर मिलेगा।

15 नवम्बर को पूज्य स्वामी जी का हमारे गाँव में आगमन हुआ। वह दिन हमारे लिये अविस्मरणीय बन गया। लगभग 10-15 घण्टे सतगुरु और सुन्दरसाथ के सान्निध्य में बिताने, चर्चा-वाणी सुनने और प्रसाद ग्रहण करने का सौभाग्य मिला। किरण माताजी, आचार्य अशोक जी, दीप्ति दीदी, ज्योत्सना माताजी तथा अन्य सुन्दरसाथ के साथ प्रेमपूर्ण मिलन ने इस अनुभव को और भी विशेष बना दिया।

> *सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणों रहूँ ।*
> *सनमंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूँ ।।*

जागनी का यह महायज्ञ सतगुरु श्री देवचन्द्र जी से प्रारम्भ होकर श्री मिहिरराज जी, महाराजा श्री छत्रसाल जी, परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी, सरकार श्री और वर्तमान में पूज्य श्री राजन स्वामी जी के माध्यम से निरन्तर आगे बढ़ रहा है। गुजरात, उत्तर प्रदेश, नेपाल तथा अनेक गाँवों और नगरों में कठिनाइयों की परवाह किये बिना वाणी और आत्म-जागृति का सन्देश पहुँचाया गया है।

मुझे नोएडा, गाजियाबाद और दिल्ली के जागनी कार्यक्रमों में भी सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। इन यात्राओं का आनन्द शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। जैसे मेरे प्राणप्रिय अक्षरातीत की वाणी शब्दातीत है, वैसे ही ये अनुभव भी मेरे लिये अवर्णनीय हैं।

क्यों मेहेर मुझ पर भई,
ए थी दिल में सक ।
मैं जानी मौज मेहेबूब की,
वह देत आप माफक ।।

पूज्य सतगुरु श्री राजन स्वामी जी के चरणों में मेरा प्रेमपूर्ण कोटान-कोट प्रणाम।
प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

तेजपाल (मजीत, बरेली)

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा

वाणी मन्थन और आत्म जागृति का सन्देश

श्री राज जी, श्री श्यामा जी सदा सहाय ।

प्राणाधार, आत्म-सम्बन्धी सुन्दरसाथ जी,आप सभी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम जी।

60 दिवसीय जागनी यात्रा का शुभारम्भ परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की तपोभूमि शेरपुर आश्रम से हुआ और इसका अन्तिम पड़ाव पावन श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना रहा। विभिन्न गाँवों, नगरों और महानगरों में ब्रह्मवाणी की चर्चाओं के माध्यम से सुन्दरसाथ को आत्म-जागृति और वाणी-मन्थन की ओर प्रेरित किया गया।

इतिहास से हमें यह शिक्षा मिलती है कि केवल तारतम ग्रहण कर लेना या वाणी पढ़ लेना पर्याप्त नहीं है। यदि नियमित चर्चा, मन्थन और चितवनी न हो तो मन पुनः माया और सांसारिक आकर्षणों में उलझ सकता है। इसलिये जागनी यात्राओं का वास्तविक उद्देश्य हमारे भीतर के बन्द कपाट खोलकर वाणी को समझने और जीवन में उतारने की प्रेरणा देना है।

आज पूज्य श्री राजन स्वामी जी भी इसी भाव से बार-बार वाणी मन्थन पर बल देते हैं

अंग उत्कण्ठा उपजी,
मेरे करना एह विचार ।
ए सत वानी मथ के,
लेऊँ जो इनको सार ।।

अर्थात् वाणी का केवल पाठ नहीं, उसके सार का मन्थन आवश्यक है। साथ ही परमधाम की चितवनी और अपने वास्तविक आत्मिक सम्बन्ध की पहचान भी जागनी का महत्वपूर्ण अंग है। जागनी का उद्देश्य किसी नाम, सम्प्रदाय या आपसी विवाद में उलझना नहीं बल्कि सत्यज्ञान की ओर बढ़ना है। नामों के विवाद से अधिक महत्वपूर्ण है कि हमारी रहनी, करनी, प्रेम और सेवा वाणी के अनुरूप हों।

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी का भाव है-

> *सब जातें मिली एक ठौर,*
> *कोई ना कहे धनी मेरा और ।*

अतः हमें मतभेद, अहंकार और आपसी कटुता से ऊपर उठकर मिल-जुलकर जागनी कार्य करना चाहिये। किसी सुन्दरसाथ का हृदय न दुखाएँ और अपनी ऊर्जा ब्रह्मवाणी के अध्ययन, चितवनी तथा सत्यज्ञान के प्रचार में लगाएँ।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी मान-अपमान से ऊपर उठकर निरन्तर जागनी पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। हमारी विनम्र प्रार्थना है कि यह कार्य इसी प्रकार चलता रहे और हम सभी भी केवल दर्शक ना बनें बल्कि स्वयं वाणी का मन्थन करें, उसे जीवन में उतारें और प्रेमपूर्वक दूसरों को भी जागनी से जोड़ें। धामधनी की वाणी हमें सावधान करती है-

तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए ।
ऐती आग सिर पर जली, तू रह्या खांगडू होए ।।

अतः समय रहते अपनी वास्तविक पहचान करें, सत्यज्ञान को ग्रहण करें और जागनी के इस अवसर का पूरा लाभ लें।

प्रणाम जी।

जितेन्द्र वर्मा,
मथुरा

जागनी यात्रा मथुरा का आत्मिक अनुभव

सर्वप्रथम हम मथुरा के समस्त सुन्दरसाथ हृदय से आभार व्यक्त करते हैं कि हमारे शहर और घर को भी जागनी यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।

जब से पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने जागनी यात्रा प्रारम्भ की, तभी से मन में इच्छा थी कि मथुरा में भी इसका कार्यक्रम हो। कुछ परिस्थितियों के कारण हम संकोच में थे, परन्तु भीतर से राजजी से यही प्रार्थना करते रहे कि किसी प्रकार यह अवसर अवश्य मिले। अन्ततः दिसम्बर में सरसावा से मथुरा कार्यक्रम का सन्देश मिला तो मन कृतज्ञता से भर गया और वाणी की पंक्ति स्मरण हुई-

> मैं देखे गुनाह अपने,
> हक के देखे एहसान।

इस जागनी यात्रा में पूज्य स्वामी जी के वचनामृत ने केवल मन को शान्ति ही नहीं दी बल्कि जीवन को नयी दिशा भी दी। धैर्य, प्रेम, आत्म-जागृति और अपने वास्तविक लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा हम सभी को मिली। जैसे एक दीपक स्वयं जलकर अनेक दीपों को प्रकाश देता है, वैसे ही जागनी यात्रा ने अनेक हृदयों में ज्ञान और आत्मचिन्तन की ज्योति प्रज्वलित की। पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन से यह विश्वास दृढ़ हुआ कि हम अपने भीतर की सम्भावनाओं को पहचानकर आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

स्वामी जी द्वारा लिखित साहित्य और उपदेशों का हम नियमित अध्ययन करते हैं और प्रयास रहेगा कि उनके सन्देश को केवल पढ़ें ही नहीं बल्कि अपने जीवन में भी उतारें।

अक्षरातीत श्री राज जी से यही प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी के माध्यम से ऐसी जागनी यात्राएँ निरन्तर होती रहें और जन-जन तक ब्रह्मज्ञान का प्रकाश पहुँचता रहे।

जागनी की राहों में जब कदम बढ़े,
मन में जागी नयी उमंग, नया प्रकाश।
साथी मिले प्रेम के धागे जुड़ते गये,
हर पड़ाव पर मिला ज्ञान का उजास।।
कठिन राहों ने भी हमें यही सिखाया,
संकल्प का दीप कभी बुझने न पाए।
स्वामी जी की वाणी से मिली आत्म ज्योति,
दिल से दिल जुड़ें प्रेम बढ़ता जाए।।

इस यात्रा का अनुभव शब्दों में पूरा नहीं समा सकता। आँखों में नमी है, पर हृदय में दृढ़ विश्वास है कि जागनी की इस राह पर हम फिर चलेंगे।
प्रेम प्रणाम जी।

भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोशनी हिरदे धर

जैसे अनंत काल का सघन अंधकार जमा हो, पर एक क्षुद्र-सा दीपक उस अथाह तमस को चीरता हुआ नई दिशा दे देता है। उसी प्रकार मन में जमी जन्मों-जन्मों की वासनाएँ और संस्कार कितने ही गूढ़ क्यों न हों, जब ज्ञान का दीपक प्रज्वलित होता है, तो अज्ञानता मिटने लगती है।

तारतम वाणी में श्री जी हमें यही रहस्य सौंपते हैं कि इस अज्ञान की गहन, निराशाजनक रात्रि से भयभीत न हो, वरन् ज्ञान का दीपक जलायें। यही एक उपाय है।

श्याम अरोड़ा

(दिल्ली)

जागनी यात्रा ज्ञान की ज्योति

श्री प्राणनाथ प्यारे की जय।

जागनी वह दीपक है जो अज्ञान के अन्धकार को दूर करता है। ज्ञान, सेवा और संस्कार ही उज्ज्वल समाज की नींव हैं। आत्म-जागृति का अर्थ है, स्वयं को पहचानना और उस पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द की पहचान करना।

इसी भाव को पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने जागनी यात्रा के रूप में आगे बढ़ाया। देश के विभिन्न नगरों, कस्बों और प्रान्तों में कार्यक्रम आयोजित हुए और इसी क्रम में दिल्ली में भी लगभग 6-7 स्थानों पर जागनी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

यात्रा की घोषणा होते ही सुन्दरसाथ में अद्भुत उत्साह दिखायी दिया। जगह-जगह बैनर लगाए गये, घोषणाएँ की गयीं और घर-घर जाकर लोगों को आमंत्रित किया गया। ऐसा वातावरण था मानो अपने ही परिवार का कोई बड़ा उत्सव हो।

पूज्य स्वामी जी के साथ आचार्यगण, वाणी-गायक, वाद्य-सेवक और अनेक सुन्दरसाथ यात्रा में सम्मिलित रहे। कार्यक्रमों में वाणी-गायन, चर्चा, चिन्तन-मन्थन और प्रश्नोत्तर के माध्यम से विभिन्न धर्मों से आये जिज्ञासुओं की शंकाओं का धर्मग्रन्थों के आधार पर समाधान किया गया।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी तथा अन्य वक्ताओं की सरल, मधुर और प्रेमपूर्ण चर्चाओं ने श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया। कई सुन्दरसाथ ने तारतम ग्रहण कर अपने जीवन को ज्ञान और आत्म-जागृति की दिशा में आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

यात्रा के दौरान भोजन आदि की व्यवस्था भी कार्यक्रम स्थल पर ही रखी गयी, ताकि सभी धर्मप्रेमी अधिक समय तक ज्ञान-चर्चा का लाभ ले सकें।

हमारे लिये यह विशेष अनुभव रहा कि इस यात्रा ने हमें उन ऐतिहासिक जागनी यात्राओं की स्मृति से जोड़ दिया, जब श्री प्राणनाथ जी भी सुन्दरसाथ के साथ दीपबन्दर, अब्बासी बन्दर, मन्दसौर, सूरत आदि अनेक स्थानों पर जागनी के लिये भ्रमण करते थे।

इस यात्रा ने पुनः अनुभव कराया कि ज्ञान की ज्योति ही मनुष्य को अज्ञान से निकालकर परमात्मा की पहचान की ओर ले जाती है।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी तथा उनके साथ इस जागनी कार्य में चलने वाली समस्त जमात के चरणों में हम सभी सुन्दरसाथ की ओर से कोटि-कोटि प्रणाम।

अनीता मलिक गुड़गाँव

जागनी यात्रा गुरुग्राम से पन्ना तक एक आत्मिक अनुभव

आत्म सम्बन्धी सुन्दरसाथ जी, प्रेम प्रणाम जी।

मानखे देह अखण्ड फल पाइए,
सो क्यों पाए के वृथा गमाइए ।
ए तो अधखिन को अवसर,
सो गमावत माँझ नींदर ।।

सितम्बर 2025 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के वार्षिक कार्यक्रम में सात दिनों तक रहने का सौभाग्य मिला। वहाँ का प्रेम, सेवा, अनुशासन, सादगी और आध्यात्मिक वातावरण हृदय को गहराई से छू गया। जब मंच से उत्तर भारत जागनी यात्रा की घोषणा हुई तो धनी की मेहर और पूज्य स्वामी जी की प्रेरणा से मैंने गुरुग्राम कार्यक्रम के लिये अपना नाम लिखवा दिया। कार्यक्रम की तिथि 22 नवम्बर निश्चित हुई, लेकिन अक्टूबर में अचानक मेरा बड़ा ऑपरेशन हुआ और चिकित्सक ने छह सप्ताह विश्राम की सलाह दी। ऐसे समय में गुरुग्राम के सेवाभावी दम्पति सुषमा त्यागी जी और जी.के. त्यागी जी आगे आये। उन्होंने तन, मन और धन से सहयोग दिया। सुषमा जी ने सामुदायिक केन्द्र की व्यवस्था संभाली, नरेन्द्र मलिक जी ने पोस्टर-बैनर एवं अन्य प्रबन्ध किये।

नीलम मेहता जी, सविता गर्ग जी, रीटा राघव जी और बेबी त्यागी जी ने घर-घर जाकर आमन्त्रण पहुँचाने में सहयोग दिया। मेरी सेवा फोन द्वारा लोगों को कार्यक्रम के लिये आमन्त्रित करने की रही। अन्ततः 22 नवम्बर का वह शुभ दिन आया। प्रातः लगभग 9.30 बजे पूज्य श्री राजन स्वामी जी का कारवाँ हमारे निवास पर पहुँचा।लगभग 50-60 सुन्दरसाथ और धर्मप्रेमियों ने पुष्पमालाओं से उनका भावपूर्ण स्वागत किया। अनेक आगन्तुक स्वामी जी की सादगी और मधुर व्यवहार से विशेष रूप से प्रभावित हुए। कार्यक्रम में विदुषी दीप्ति जी ने संसार की नश्वरता, मानव जन्म की महत्ता और ब्रह्मवाणी के महत्व पर सरल एवं ओजस्वी चर्चा की। इसके बाद कुमार जी और बानिका जी के मधुर वाणी-गायन ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

आचार्य सूर्यप्रताप जी ने वाणी की चैपाइयों के आधार पर एक परब्रह्म की पहचान, आत्मचिन्तन और आत्म जागृति को मानव जीवन का परम लक्ष्य बताया। विजय आहूजा जी ने विभिन्न धर्मग्रन्थों के प्रमाणों से 28वें कलियुग में परब्रह्म और ब्रह्ममुनियों के आगमन विषय पर संक्षिप्त चर्चा की।

अन्त में पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने **'मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सो मारना मैं'के** भाव पर अहंकार के त्याग की अत्यन्त गहन चर्चा की। उन्होंने समझाया कि मन, बुद्धि और अहंकार की सीमाओं से ऊपर उठकर ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविक अनुभूति की दिशा खुलती है।

स्वामी जी की चर्चा से प्रभावित होकर अनेक धर्मप्रेमियों ने साहित्य लिया और उनके विचारों को अधिक जानने की इच्छा व्यक्त की। कार्यक्रम के बाद स्वामी जी सुषमा त्यागी जी तथा बेबी त्यागी जी के निवास पर भी पधारे और फिर अगले कार्यक्रम के लिये दिल्ली प्रस्थान किया। जिन घरों में उनके शुभ चरण पड़े, हम सभी ने स्वयं को धन्य अनुभव किया। जागनी यात्रा के अन्तिम पड़ाव पर मुझे पन्ना जी जाने का भी सौभाग्य मिला। वहाँ एक ही मंच पर पुजारीगण, ट्रस्टीगण और विदुषियों को एकत्र देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सभी ने पूज्य स्वामी जी के जागनी अभियान की सराहना की। इसी अवसर पर उनके द्वारा लिखित भ्रमोच्छेदनम् ग्रन्थ का विमोचन भी हुआ, जिसमें समाज में फैली अनेक भ्रान्तियों और प्रश्नों का निराकरण प्रस्तुत किया गया है।पूज्य श्री राजन स्वामी जी का जागनी के प्रति समर्पण, अथक परिश्रम, सादगी, विनम्रता और सहज स्वभाव हम सभी सुन्दरसाथ के लिये सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

प्रेम प्रणाम जी।

सुधीर, फाजिल्का (पंजाब)

शेरपुर धाम चबूतरा का अविस्मरणीय अनुभव

आज हमारे प्रिय सुन्दरसाथ गौरव डूमरा जी का फोन आया और उन्होंने उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा के कुछ अनुभव लिखने का आग्रह किया। अनुभव इतने अधिक हैं कि सब लिखूँ तो अनेक पृष्ठ भर जायें इसलिये यहाँ केवल एक विशेष स्मृति साझा कर रहा हूँ।

जागनी यात्रा प्रारम्भ होने से ठीक दो दिन पहले हमारे नए घर का गृहप्रवेश था। यह हमारे परिवार के लिये अत्यन्त सौभाग्य की बात रही कि पूज्य श्री राजन स्वामी जी हमारे घर पधारे। वहीं से मैं अपने भतीजे मोमिन और ज्योत्सना बहन के साथ स्वामी जी के साथ सरसावा पहुँचा।

अगले दिन शेरपुर में यात्रा का प्रथम कार्यक्रम था। हम सभी सुन्दरसाथ 'श्री प्राणनाथ प्यारे की जय' के उद्घोष के साथ सरसावा से शेरपुर के लिये निकले। सबसे पहले शेरपुर आश्रम में राजजी के दर्शन किये और फिर परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के समाधि-स्थल पर जाकर आशीर्वाद लिया।

इसके बाद हाथों में श्री प्राणनाथ जी की ध्वजा लेकर, जयकारों के साथ पैदल धाम चबूतरा की ओर बढ़े। वह क्षण मेरे जीवन के सबसे आनन्दमय अनुभवों में से एक था। ऐसा लग रहा था मानो पाँव धरती पर नहीं पड़ रहे हों।

धाम चबूतरा पहुँचने पर स्थानीय सुन्दरसाथ ने प्रेमपूर्वक स्वागत किया। विशाल पण्डाल में हजारों सुन्दरसाथ उपस्थित थे।

वाणी-गायन के बाद पूज्य स्वामी जी ने लगभग डेढ़-दो घंटे तक ब्रह्मवाणी की चर्चा कर सभी को ज्ञान और आनन्द से भर दिया। कार्यक्रम के पश्चात् सभी ने एक साथ भण्डारा-प्रसाद ग्रहण किया।

सन्ध्या में हम सीता बहन के निकटवर्ती गाँव में भी गये। आश्रम के बच्चों और सुन्दरसाथ के साथ जयकारे लगाते हुए वहाँ पहुँचना भी अत्यन्त आनन्ददायक रहा। जलपान के बाद हम पुनः सरसावा लौट आये।

उस प्रथम दिन के प्रेम, उत्साह, ध्वजा-यात्रा और धाम चबूतरा के वे आनन्दमय क्षण आज भी हृदय में जीवित हैं। शेष यात्रा के अनुभव फिर कभी साझा करूँगा।

प्रेम प्रणाम जी।

हिमांशु त्यागी
(सहारनपुर)

सद्गुरु के सान्निध्य में परमात्मा की नयी पहचान

मेरे सद्गुरु पूजनीय श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में परमात्मा के प्रति मेरी समझ बहुत विस्तृत हुई। पहले मैं परमात्मा को एक शासक या न्यायाधीश की तरह मानता था, जो हमारे पाप-पुण्य का हिसाब रखता है। सद्गुरु कृपा से यह समझ विकसित हुई कि परमात्मा भय का नहीं बल्कि प्रेम का स्वरूप है।

स्वामी जी ने मुझे अद्वैत का भाव समझाया- जैसे लहर समुद्र से अलग नहीं होती वैसे ही आत्मा भी उस परम चेतना से पूर्णतः पृथक नहीं है। अज्ञान ही हमें अलगाव का अनुभव कराता है और सद्गुरु उस अज्ञान के पर्दे को हटाकर वास्तविक सम्बन्ध की पहचान कराते हैं।

इस ज्ञान ने मेरी प्रार्थना और जीवन-दृष्टि दोनों को बदल दिया। अब प्रार्थना में माँगने से अधिक कृतज्ञता का भाव रहता है। मैंने यह भी समझा कि वास्तविक आध्यात्मिकता संसार से भागना नहीं बल्कि संसार में रहते हुए कमल की तरह निर्लिप्त और अन्तर्मुखी रहना है।

आज जब मैं आँखें बन्द कर ध्यान करता हूँ तो वही शान्ति अनुभव होती है जो सद्गुरु के चरणों में बैठकर मिलती है।

मेरे सद्गुरु के चरणों में शत-शत नमन, जिन्होंने मुझे नश्वरता से अमरत्व की ओर और अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाया।

प्रणाम जी।

जयकिशन प्रणामी

मंडौव, सिकन्दराबाद

जागनी यात्रा हादी के मार्ग पर

परम आदरणीय समस्त सुन्दरसाथ जी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम जी।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा द्वारा प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिये पहली बार अपने कुछ भाव लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी के आशीर्वाद, सरकार श्री की प्रेरणा और परमपूज्य श्री राजन स्वामी जी की मेहर से यदि इन शब्दों में कोई त्रुटि रह जाय तो अपना साथी समझकर क्षमा करें।

मेरे लिये परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी, सरकार श्री और परमपूज्य श्री राजन स्वामी जी तीन अनमोल रत्न हैं। शरीर से अलग दिखायी देने पर भी उनके जागनी कार्य का उद्देश्य एक ही है सुन्दरसाथ को जाग्रत कर धनी के मार्ग पर आगे बढ़ाना।

वाणी में कहा गया है-

> *हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल ।*
> *चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल ।।*

मेरे अनुभव में पूज्य श्री राजन स्वामी जी इसी भाव की जीवन्त मिसाल हैं। उनके भीतर जागनी का दर्द, सुन्दरसाथ के प्रति प्रेम, विनम्रता, शील, सन्तोष और ज्ञान की गम्भीरता स्पष्ट दिखायी देती है। उनकी वाणी-चर्चा केवल ज्ञान नहीं देती बल्कि भीतर आत्मचिन्तन भी जगाती है।

जिस प्रकार श्री प्राणनाथ जी ने पाँचवें दिन की लीला में गाँव-गाँव और नगर-नगर जाकर सुन्दरसाथ को जाग्रत किया, उसी जागनी-भाव को वर्तमान समय में पूज्य श्री राजन स्वामी जी आगे बढ़ा रहे हैं। इसलिये हमारा भी दायित्व है कि हम केवल चर्चा सुनकर न रुकें बल्कि हादी द्वारा बताये मार्ग को अपनी रहनी और सेवा में उतारें।

जगाने प्राणनाथ जी आये,
सरसावा से पन्ना जी तक,
साथ जगाया बेशुमार ।
जगाने प्राणनाथ जी आये ।।

श्री इन्द्रावती जी का भाव भी यही है कि कमजोर से कमजोर साथी का हाथ पकड़कर उसे प्रियतम तक पहुँचाया जाये। जागनी का वास्तविक अर्थ भी यही है, स्वयं जागना और प्रेमपूर्वक दूसरों को भी जगाना। हमारे प्यारे सतगुरु सरकार श्री कहा करते थे -

> *जिन देखा मेरे वजूद को, वह रहा बीच नासूत ।*
> *जिन देखा मेरी रूह को, वह पहुँचा लाहूत ।।*

इसलिये किसी महापुरुष को केवल बाहरी रूप से नहीं बल्कि उसके उद्देश्य, आत्मिक भाव और कार्य से पहचानना चाहिये। मेरे लिये पूज्य श्री राजन स्वामी जी की वास्तविक पहचान उनके जागनी-भाव और समर्पित सेवा में है।

इन्हीं भावों के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ,

बात उनकी हम जानें या जानें हमारी वे,
ये दुनिया वाले क्या जानें,
हम बीच की निसबत जेह ।

प्रणाम जी।
आप सभी सुन्दरसाथ की चरणरज।

ए प्रकाश देख के, जगाओ अपनी आतम

श्री जी कहते हैं कि तारतम ज्ञान रूपी प्रकाश का साक्षात्कार कर अपनी आत्मा को जाग्रत करो। यह तारतम-ज्ञान मध्याह्न के सूर्य के समान है, जो अज्ञान के तिमिर को क्षणमात्र में विनष्ट कर देता है। आइए, हम अपने अंत:करण की खिड़कियाँ खोलें, इस तारतम ज्ञान का अध्ययन करें, इस पर मनन करें और इसे अपने जीवन-मार्ग में प्रतिष्ठित करें।

प्रिन्स बब्बर
सहारनपुर

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 आत्म जागृति से जीवन सुधार तक

धनी की मेहर से यह सखी अपने कुछ भाव आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती है।

जागनी यात्रा का मुख्य उद्देश्य केवल एक था, माया में सोयी हुई आत्माओं को जगाना और उन्हें धनी की पहचान की ओर प्रेरित करना। मुझे भी इस यात्रा में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। मैं कितना स्वयं को माया से अलग कर पाया यह तो नहीं जानता लेकिन इतना अवश्य अनुभव हुआ कि इस यात्रा ने हमारे जीवन में एक नयी जागृति उत्पन्न की।

यात्रा के बाद सहारनपुर में हम सुन्दरसाथ ने प्रत्येक पन्द्रह दिन में लगभग दो घण्टे की वाणी-मन्थन कक्षा प्रारम्भ की। इसमें हम ब्रह्मवाणी का अध्ययन करते हैं और मन में उठने वाले प्रश्नों पर आपस में चर्चा कर वाणी के माध्यम से उनका समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। मेरे लिये यह जागनी यात्रा का बहुत महत्वपूर्ण परिणाम है।

इस यात्रा से यह भी समझ में आया कि राज जी को पाने के लिये केवल वाणी सुनना पर्याप्त नहीं बल्कि वाणी के वचनों को अपने जीवन और दिनचर्या में उतारना आवश्यक है।

हम दिनभर जैसा देखते, सुनते और सोचते हैं, उसका प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। यदि दिनभर राज जी का स्मरण, वाणी-मन्थन और चितवनी का भाव बना रहे तो ध्यान के समय मन सहज रूप से अन्तर्मुखी हो जाता है। इसके विपरीत यदि पूरा दिन मोबाइल, टीवी और सांसारिक विषयों में बीत जाय तो वही विचार चितवनी में बाधा बनते हैं।

अतः आत्म-जागृति के लिये केवल सात्त्विक आहार ही नहीं बल्कि सात्त्विक दिनचर्या, विचार और वातावरण भी आवश्यक है।

जागनी यात्रा ने मुझे यही प्रेरणा दी कि अपने जीवन को धीरे-धीरे ऐसा बनाया जाये जिसमें वाणी, चितवनी, आत्मचिन्तन और धनी का स्मरण केवल कुछ समय का अभ्यास न रहकर हमारी रहनी का हिस्सा बन जाये।

मेरे शब्दों से किसी सुन्दरसाथ के भाव को ठेस पहुँची हो तो क्षमा चाहता हूँ।

प्रणाम जी।

मानखे देह अखण्ड फल पाइए,
सो क्यों पाए के वृथा गमाइए

पूनम मदान (दिल्ली)

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 दिल्ली का अनुभव

प्रेम प्रणाम जी।

सतगुरु महाराज की कृपा से पूज्य श्री राजन स्वामी जी के सान्निध्य में उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा 2025 का शुभारम्भ शेरपुर आश्रम से हुआ और यह यात्रा विभिन्न गाँवों व नगरों से होती हुई श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना में सम्पन्न हुई। प्रत्येक स्थान पर सुन्दरसाथ ने बड़े उत्साह और आनन्द के साथ यात्रा में सहभागिता की।
गाजियाबाद, गुरुग्राम, नोएडा, लक्ष्मीनगर और दिल्ली में भी यात्रा के आगमन पर स्थानीय सुन्दरसाथ ने तन, मन और धन से सेवा की। पैम्फलेट बाँटे गये, बैनर लगाये गये और अधिक से अधिक लोगों तक जागनी का सन्देश पहुँचाने का प्रयास किया गया।
पूज्य स्वामी जी का मुख्य भाव यही रहा कि ब्रह्मवाणी का ज्ञान जन-जन तक पहुँचे और मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप तथा परमात्मा की पहचान करे। उनके साथ श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के आचार्यगण भी उपस्थित रहे, जिनकी चर्चाओं से अनेक आध्यात्मिक विषयों को सरलता से समझने का अवसर मिला।

दिल्ली के कार्यक्रमों में अनेक गैर-प्रणामी धर्मप्रेमी और कुछ पत्रकार भी आये। उन्होंने पूज्य स्वामी जी से अनेक प्रश्न पूछे जैसे- परमात्मा कौन है? इस सृष्टि का निर्माण किसने किया? हमें किसकी उपासना करनी चाहिये? पूज्य स्वामी जी ने इन प्रश्नों का सरल और प्रमाणपूर्ण उत्तर दिया। कई आगन्तुकों ने कहा कि उन्होंने इस प्रकार की आध्यात्मिक व्याख्या पहले कभी नहीं सुनी थी।

एक महिला ने अपनी जिज्ञासा रखते हुए कहा कि वे अनेक प्रकार की पूजा करती हैं, फिर भी मन में शान्ति नहीं मिलती। इस संवाद ने अनुभव कराया कि यदि जागनी यात्रा के माध्यम से एक भी जिज्ञासु आत्मा सत्यज्ञान की ओर बढ़ती है तो इस अभियान का उद्देश्य सार्थक होता है।

इस यात्रा ने हमें भी सेवा के साथ-साथ आत्म-जागृति की प्रेरणा दी। पूज्य स्वामी जी के चरणों में यही प्रार्थना है कि ऐसी जागनी यात्राएँ पुनः आयोजित होती रहें ताकि हम भी सेवा से जुड़ें, स्वयं जागने का प्रयास करें और ब्रह्मवाणी का सन्देश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा सकें।

प्रेम प्रणाम जी।

दया करि अति मोहे

गीता पुण्डीर (दिल्ली)

जागनी यात्रा ब्रह्मज्ञान से जन जागरण तक

प्रेम प्रणाम जी।

60 दिवसीय जागनी यात्रा का शुभारम्भ पूज्य महाराज श्री रामरतन दास जी की पावन तपोभूमि शेरपुर से हुआ और इसका समापन श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना में हुआ। इस बीच अनेक गाँवों, कस्बों और नगरों में पूज्य श्री राजन स्वामी जी द्वारा ब्रह्मवाणी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाया गया।

पूज्य स्वामी जी के हृदय का मुख्य भाव यही है कि ब्रह्मज्ञान प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे और सोयी हुई आत्माएँ जागृत हों। हमें भी उनके इस भाव को समझकर तन, मन और हृदय से जागनी कार्य में सहयोग करना चाहिये।

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी में कहा गया है-

> "चोर टाली करूँ वोलावो, सुख सीतल करूँ संसार ।
> विध विधना सुख दऊं विगते, कांई रासतणा आवार ।।"

श्री इन्द्रावती जी का भाव है कि मनुष्य को माया, तृष्णा और इन्द्रियों के आकर्षण से हटाकर प्रेम और अखण्ड आनन्द की ओर ले जाया जाये। इसी भाव को लेकर पूज्य स्वामी जी ने जागनी अभियान के माध्यम से आत्माओं को जगाने का संकल्प लिया।

यात्रा जब दिल्ली पहुँची तो रोहिणी सेक्टर-16 और पीतमपुरा स्थित श्री प्राणनाथ जी मन्दिर में कार्यक्रम हुए। बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी लोग उपस्थित हुए और अनेक जिज्ञासाओं पर प्रश्न किये जैसे कि "परमात्मा कौन है? भगवान और परमात्मा में क्या अन्तर है? मानव जीवन का उद्देश्य क्या है?'' पूज्य स्वामी जी ने धर्मग्रन्थों और वाणी के प्रमाणों के साथ सरल ढंग से इनका समाधान किया।

इस यात्रा की एक विशेषता यह भी रही कि केवल मंच पर बोलने वाले ही नहीं बल्कि यात्रा के साथ चलने वाले अनेक सुन्दरसाथ ने भी सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से माताओं और बहनों ने भोजन, वस्त्र तथा यात्रा से जुड़ी छोटी-बड़ी आवश्यकताओं का अत्यन्त प्रेम और समर्पण से ध्यान रखा।

ज्ञान के साथ सेवा, प्रेम और सामूहिक समर्पण ही जागनी की वास्तविक भावना है।

मेरी यही प्रार्थना है कि ऐसी जागनी यात्राएँ समय-समय पर होती रहें, ब्रह्मवाणी का प्रकाश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे और परब्रह्म की कृपा से नये सुन्दरसाथ इस ज्ञान से जुड़ते रहें।

प्रेम प्रणाम जी।

अनु गुप्ता,
कपूरथला

जागनी यात्रा स्वयं जागें, दूसरों को जगाएँ

प्रेम प्रणाम जी।

जागनी यात्रा का उद्देश्य है सोयी हुई आत्माओं को जगाने के लिये स्थान-स्थान पर जाकर ज्ञान का प्रकाश पहुँचाना। शरीर को विश्राम देने वाली नींद तो आवश्यक है परन्तु एक और गहरी निद्रा है अज्ञानता (माया) की निद्रा। इच्छाएँ निरन्तर बढ़ती रहती हैं और मनुष्य उन्हें पूरा करने में जीवन व्यतीत कर देता है जबकि वास्तविक आवश्यकता स्वयं को और परमात्मा को पहचानने की है।

आत्म-जागृति की शुरुआत इन मूल प्रश्नों से होती है मैं कौन हूँ? कहाँ से आयी हूँ? कहाँ जाना है? इस संसार में क्यों आयी हूँ? मेरा अखण्ड घर कहाँ है? वह एक परमात्मा कौन है, जो मेरी आत्मा का प्राणनाथ है? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने और जन-जन को इनके प्रति जागरूक करने का प्रयास ही जागनी का मूल उद्देश्य है। जगाने वाला वही हो सकता है जो स्वयं जाग्रत हो, जिसके भीतर समस्त संसार के प्रति प्रेम हो और जो प्राप्त ज्ञान एवं आनन्द को दूसरों तक पहुँचाने की तीव्र भावना रखता हो। हमारी परम्परा में श्री मिहिरराज जी से प्रारम्भ हुई जागनी की यह धारा अनेक महापुरुषों और परमहंसों के माध्यम से आगे बढ़ती रही। जागनी रत्न सरकार श्री ने भी अपना सम्पूर्ण जीवन इस कार्य में समर्पित किया।

आज पूज्य श्री राजन स्वामी जी उसी भाव से जागनी कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। उनका सन्देश है - मानव जीवन केवल धन कमाने, परिवार पालने, खाने-सोने और नाम कमाने के लिये नहीं मिला है। इसका वास्तविक उद्देश्य पूर्णब्रह्म परमात्मा और अपने आत्मस्वरूप की पहचान करना है।

वे बार-बार हमें विचार करने के लिये प्रेरित करते हैं कि पूर्णब्रह्म कौन है? वह कहाँ है? हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं और कहाँ जाना है? यदि मनुष्य इन प्रश्नों को समझे बिना ही जीवन व्यतीत कर दे तो यह दुर्लभ अवसर अधूरा रह जाता है।

परमात्मा की ओर बढ़ने के लिये ध्यान, चितवन और सद्गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक है। सच्चा सद्गुरु वही है जो सत्य की राह दिखाये और शिष्य की पात्रता के अनुसार उसे ज्ञान देकर अपने समान जागृत करने का प्रयास करे।

सेवापूजा में कहा गया है-

> गुरु कंचन गुरु पारस, गुरु चंदन परमान ।
> तुम सद्गुरु दीपक भये, कियो जो आप समान ।।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने अनेक आचार्यों को तैयार कर ज्ञान की इस धारा को विभिन्न स्थानों तक पहुँचाया है। आज YouTube, Zoom और अन्य माध्यमों से भी यह ब्रह्मज्ञान घर-घर पहुँच रहा है, जिसका लाभ हम अपने घर बैठे प्राप्त कर रहे हैं।

उनकी इस अतुलनीय सेवा के लिये धन्यवाद शब्द भी बहुत छोटा लगता है। पूज्य स्वामी जी के चरणों में बारम्बार कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम।

श्रीमति मुकेश देवी
(मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश)

जागनी यात्रा 2025 कुछ खट्टे मीठे अनुभव

परमहंस सद्गुरु श्री रामरतन जी महाराज, सतगुरु श्री जगदीशचन्द्र आहूजा जी (सरकार श्री) एवं परम पूज्य श्री राजन स्वामी जी के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम।

धामधनी अक्षरातीत श्री राज की मेहर से जागनी यात्रा में सहभागी बनने और पूज्य स्वामी जी तथा सुन्दरसाथ की सेवा का अवसर मिला। इस आयोजन में तन, मन और धन से सहयोग करने वाले समस्त सुन्दरसाथ के प्रति हृदय से आभार। सुखद अनुभव

यह जागनी यात्रा हमारे लिये एक आध्यात्मिक उत्सव के समान रही। श्री प्राणनाथ जी की दिव्य ब्रह्मवाणी श्री तारतम वाणी तथा निजानन्द दर्शन से अनेक जिज्ञासु परिचित हुए। दूर-दूर रहने वाले सुन्दरसाथ भी एक-दूसरे से मिले और प्रेम का सम्बन्ध अधिक दृढ़ हुआ। वास्तव में,

> "श्री धाम मधे मेलो सदीवे,
> पण दुर्लभ मेलो संसार ।"

मंचीय कार्यक्रम में आचार्य शशांक जी ने मानव जीवन के उद्देश्य और सद्गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला। पूज्य श्री राजन स्वामी जी ने मोह और प्रेम का अन्तर, नचिकेता-यमाचार्य प्रसंग, सात्त्विक आहार, ज्ञान तथा ध्यान की आवश्यकता जैसे विषयों को अत्यन्त सरलता से समझाया।

इस अनुभव से मुझे लगा कि जागनी केवल एक दिन के कार्यक्रम तक सीमित न रहे। समय-समय पर छोटे स्तर पर वाणी-चर्चा, प्रश्नोत्तर और ज्ञान-गोष्ठियाँ होती रहें। कम व्यय और सीमित संख्या में जिज्ञासुओं को पर्याप्त समय देकर उनकी शंकाओं का समाधान किया जाय तो ब्रह्मवाणी का सन्देश अधिक गहराई से हृदय तक पहुँच सकता है।

ज्ञानपीठ के विद्वान विभिन्न स्थानों पर जायें और स्थानीय सुन्दरसाथ भी अपने घरों में ऐसे आयोजन करें तो जागनी का प्रभाव निरन्तर बना रहेगा।

कुछ सीख देने वाले अनुभव

60 दिवसीय जागनी यात्रा का मूल उद्देश्य प्रेम, एकता और आत्म-जागृति था। फिर भी कुछ स्थानों पर अलग-अलग परम्पराओं और धार्मिक भावनाओं के कारण अपेक्षाओं में भिन्नता दिखायी दी। कहीं स्वागत-पद्धति, जयकारे, वाणी-पूजन अथवा अन्य परम्परागत विधियों को लेकर सुन्दरसाथ की अलग-अलग भावनाएँ थीं। इससे कुछ लोगों के मन में दु:ख भी उत्पन्न हुआ। मेरे विचार से ऐसे अवसर हमें यह सीख देते हैं कि व्यक्तिगत परम्पराओं का सम्मान करते हुए मूल उद्देश्य प्रेम, ब्रह्मज्ञान और एकता को सर्वोपरि रखा जाये। नाम अथवा पद्धति के मतभेद हमारे आपसी प्रेम को कम न करें। जिन-जिन नामों और भावों से सुन्दरसाथ अपने धनी को स्मरण करते हैं, उनके प्रति परस्पर सम्मान बना रहे, तभी हम वास्तव में एक-दूसरे को प्रेम की छत्रछाया में ला सकेंगे।

कुछ जिज्ञासुओं का यह भी सुझाव रहा कि वाणी-गायन के साथ उसका सरल भावार्थ भी समझाया जाए ताकि नए श्रोता चैपाइयों के गूढ़ अर्थ को सहजता से ग्रहण कर सकें। यह सुझाव जागनी को और अधिक जनसुलभ बनाने में उपयोगी हो सकता है। इन खट्टे-मीठे अनुभवों का उद्देश्य किसी का मन दुखाना नहीं बल्कि भविष्य के आयोजनों को और अधिक प्रेमपूर्ण, सहज तथा समावेशी बनाना है। यदि मेरे शब्दों से किसी के हृदय को ठेस पहुँचे तो क्षमा की प्रार्थना है।पूज्य श्री राजन स्वामी जी तथा उनके साथ चलने वाले श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के समस्त सेवाभावी सुन्दरसाथ के अथक परिश्रम और महान जागनी कार्य को मेरा शत-शत नमन।

श्री राज श्यामा जी , Zoom परिवार तथा समस्त सुन्दरसाथ के तन, मन और आर्थिक सहयोग के लिये हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद।

आप सभी के चरणों में कोटि-कोटि सादर प्रेम प्रणाम।

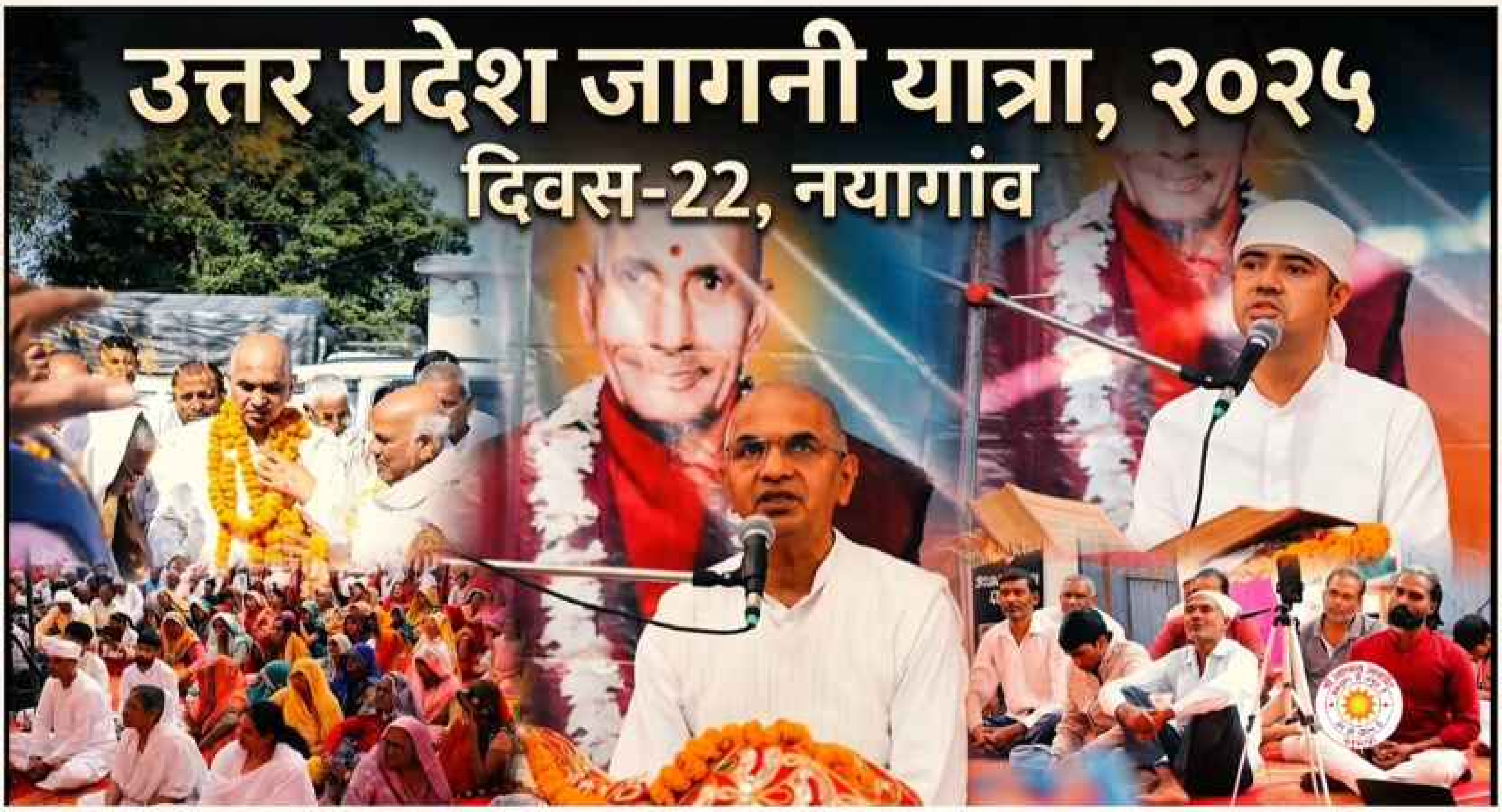

"खोजी खोजे बाहर भीतर, ओ अंतर बैठा आप"

एक साधक का मन दो दिशाओं में भागता है। कभी बाहर संसार के देवालय में परमात्मा को तलाशता है तो कभी भीतर मन के गर्भ में। लेकिन मन के भीतर और बाहर—एक ही वृत्त के दो पहलू हैं। परम सत्य उस वृत्त के बाहर बैठा है, अपने अनन्त घर में। इस अस्तित्व का एक आयाम ऐसा है जिसे हम खुली आँख से देख सकते है। दूसरे आयाम का अनुभव बंद आँख से होता है। लेकिन एक तीसरा आयाम है जो समय और स्थान की सीमा से परे है। वही परम व्योम, परम आकाश अथवा परमधाम है, और वही ब्रह्मानंद का वास्तविक स्वरूप है।

शिखा वर्मा

साठ दिन साठ रातें सेवा और समर्पण की गाथा

साठ दिन साठ रातें, न थकन का नाम न विश्राम की बातें ।
ठण्डी हवायें कांपता तन, पर जलता रहा रास्ते का दीप अनवरत मन।
न कोई कर्मकाण्ड न बाहरी दिखावा, बस वाणी में बहता सत्य का प्रवाह।
शब्द शब्द में तत्व की पहचान,चर्चा में प्रकट हुआ परम प्रमाण।
ठण्ड ने परखा देह का बल, पर डिगा नहीं श्रद्धा का संबल ।
रातें लम्बी, नहीं भी दूर,पर सुमिरन में ही मिला सच्चा नूर।
गुरु की आज्ञा ईश्वर का पथ,सेवा ही बनी सबसे बड़ा रथ।
न कोई दिखावा न कोई अभिमान,बस समर्पण प्रेम और सच्चा ज्ञान।
धन्य हैं वे हाथ जो सेवा में लगे,धन्य हैं वे चरण जो नहीं थके ।
धन्य है वह हृदय जो कष्ट में भी मुस्कुराया,जिसने परमात्मा को ही सब कुछ बताया।
साठ दिन बीते, पर बना अमिट निशान,सेवा की गाथा ठानी पहचान।
ऐसे सुन्दरसाथ को शत-शत प्रणाम,जिनकी तपस्या से जीवन्त है, परमात्मा का नाम।

ममता वर्मा

जागनी यात्रा भूले हुए वचन की पुनः स्मृति

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ये ब्रह्मरूपिणः । उत्पन्ना ये कलौयुगे प्रधान पुरुषाश्रयाः ।।
कथायोगेन तान्सर्वान्पुजयिष्यन्ति मानवाः ।
यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टिः उद्धारणं ।।
(हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अ. 4 श्लोक 20-21-22)

सुन्दरसाथ जी, प्रेम प्रणाम।

इन 60 दिनों की कठिन जागनी यात्रा ने वास्तव में यह अनुभव कराया कि जब ज्ञान, प्रेम और समर्पण एक साथ चलें तो सोयी हुई चेतना पुनः जाग सकती है। श्री देवचन्द्र जी और महामति श्री प्राणनाथ जी ने राज जी महाराज की आज्ञा से सुन्दरसाथ को अपने वास्तविक घर और आत्मिक पहचान की स्मृति करायी थी। आज लगभग चार शताब्दियों बाद वही जागनी की पुकार पूज्य श्री राजन स्वामी जी के माध्यम से पुनः सुनायी दी।

श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी में सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान समाहित है, किन्तु समय के साथ उसका गम्भीर अध्ययन और जीवन में उसका आचरण कहीं-कहीं कम होता गया तथा बाहरी परम्पराएँ अधिक प्रमुख होने लगी। ऐसे समय में यह जागनी यात्रा एक नयी लहर बनकर आयी, जिसने हमें पुनः वाणी-मन्थन, आत्म-जागृति और अपने प्रियतम से वास्तविक सम्बन्ध की ओर लौटने का सन्देश दिया।

पूज्य स्वामी जी ने अपने जीवन से यह भी दिखाया कि संसार में रहते हुए, परिस्थितियों के बीच रहकर भी मनुष्य अपने धनी के प्रति प्रेम, सात्त्विकता और समर्पण बनाये रख सकता है। यही जागनी का सबसे बड़ा व्यावहारिक सन्देश है।

आज ब्रह्मवाणी की वह चर्चा, जो कभी सीमित स्थानों तक सुनाई देती थी, अनेक नगरों और घरों तक पहुँच रही है। इसके लिये हृदय से कृतज्ञता का भाव उठता है। ऐसा लगता है मानो किसी सखी ने हमारा पुराना वचन फिर याद दिला दिया हो-

> ***"तुम भूलोगी तो हम तुम्हें याद दिलाएँगे,***
> ***और हम भूलें तो तुम हमें जगाना ।"***

श्री तारतम वाणी की पुकार है -

याद करो सोई साइत, जो हँसने माँग्या खेल ।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि ।।

अब प्रश्न यह नहीं कि हमें कितना जगाया गया बल्कि यह है कि हमने कितना जागना स्वीकार किया। इतने प्रयासों के बाद भी यदि हम फिर माया, मोह और विस्मृति में ही खोये रहें तो जागनी का उद्देश्य अधूरा रह जायेगा।

आइये, एक बार अपने हृदय पर हाथ रखकर अपने प्रियतम से कहें, 'हे मेरे धामधनी! अब हमें अपनी ओर खींच लीजिये। हम इस माया के खेल में बहुत भटक चुके, अब हमें अपने वास्तविक स्वरूप और अपने घर की स्मृति दे दीजिये।

यदि हम सब मिलकर भीतर से यह पुकार करें और अपने जीवन में प्रेम, वाणी, चितवन तथा सेवा को स्थान दें तो यही इस जागनी यात्रा की सच्ची सफलता होगी।

प्रेम प्रणाम जी।

पवनसिंह पुंडीर
नन्हेड़ा कलां, बहेड़ा, सहारनपुर

धाम चबूतरा से जागनी यात्रा का प्रथम अनुभव

उत्तर भारत जागनी यात्रा का अनुभव शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिये कठिन है, फिर भी 18 अक्टूबर 2025 का वह दिन आज भी हृदय में जीवित है।

13 अक्टूबर को धाम चबूतरा के पुजारी श्री राजेन्द्र जी का फोन आया कि श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के कुछ पदाधिकारी कार्यक्रम की तैयारियों के निरीक्षण हेतु आने वाले हैं। अगले दिन बहन छवि त्यागी जी एवं राजेन्द्र चैहान जी सहित ज्ञानपीठ से आये सेवाभावी सुन्दरसाथ ने यात्रा की रूपरेखा और व्यवस्थाओं पर कार्य किया।

मैं उस समय तक पूज्य श्री राजन स्वामी जी से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं था। इससे पहले मेरी पत्नी सुनीता पुंडीर सरसावा ज्ञानपीठ होकर आयी थी और उसने वहाँ की वाणी-चर्चा, ध्यान केन्द्र, स्वच्छता, भोजन तथा गुरुकुल की व्यवस्था की बहुत प्रशंसा की थी।

18 अक्टूबर को उत्तर भारत जागनी यात्रा का प्रथम कार्यक्रम परमहंस श्री रामरतन दास जी की पावन तपोभूमि शेरपुर से प्रारम्भ हुआ। समाधि-स्थल से धाम चबूतरा 'ऐतिहासिक पाण्डव तालाब' तक सुन्दरसाथ पैदल जयकारे लगाते हुए पहुँचे। इसी अवसर पर मुझे पहली बार पूज्य श्री राजन स्वामी जी के दर्शन हुए। उनका एवं पन्ना से पधारे संतजनों का पुष्प और चन्दन से स्वागत करते समय मन अत्यन्त आनन्दित हुआ।

विशाल सत्संग पण्डाल में हजारों सुन्दरसाथ उपस्थित थे। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों के वाणी-गायन ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

पूज्य स्वामी जी ने प्रश्नोत्तर और चर्चा के माध्यम से श्री कृष्ण जी, श्री राज जी एवं श्री प्राणनाथ जी से सम्बन्धित अनेक जिज्ञासाओं को सरलता से स्पष्ट किया।

उनकी एक बात विशेष रूप से हृदय में उतर गयी कि दया और मेहर अन्दर से प्रकट होती हैं। जितना हम ध्यान को भीतर की ओर मोड़ेंगे और वाणी के शब्दों पर मनन करेंगे उतनी ही आत्मिक अनुभूति गहरी होगी।

हमारी प्रार्थना है कि ऐसी वाणी-चर्चाएँ समय-समय पर होती रहें। साथ ही सभी सुन्दरसाथ से विनम्र आग्रह है कि श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य और ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन करें क्योंकि अनेक आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर उनमें सहज रूप से प्राप्त हो सकते हैं।

मैं और मेरी पत्नी सुनीता पुंडीर पूज्य श्री राजन स्वामी जी, समस्त आचार्यगण, गुरुकुल के विद्यार्थियों तथा सभी सेवाभावी सुन्दरसाथ के हृदय से आभारी हैं जिनके सान्निध्य में हमें इस जागनी यात्रा में सेवा का अवसर मिला।

सभी सुन्दरसाथ के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

निर्मल,
सहारनपुर

जागनी यात्रा आत्म जागृति का महाअभियान

समस्त सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी सज्जनों को प्रेम प्रणाम जी।

उत्तर भारत में पूज्य श्री राजन स्वामी जी के नेतृत्व में चल रही जागनी यात्रा एक विशेष आध्यात्मिक चेतना का माध्यम बनी है। यह केवल स्थान-स्थान पर होने वाली धार्मिक यात्रा नहीं बल्कि सुन्दरसाथ की आत्म जागृति, ज्ञानवृद्धि और निज धर्म की वास्तविक पहचान का अभियान है।

आज भौतिक जीवन की व्यस्तता में मनुष्य कहीं न कहीं धर्म और अध्यात्म के मूल उद्देश्य से दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में यह यात्रा जीवन के वास्तविक लक्ष्य पर पुनः विचार करने की प्रेरणा देती है। पूज्य स्वामी जी एवं ज्ञानपीठ के आचार्यगण सरल भाषा में आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का ब्रह्मवाणी और शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं।

यात्रा में केवल प्रवचन और सत्संग ही नहीं बल्कि विचार-मन्थन, संवाद और प्रश्नोत्तर भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहे। इनके माध्यम से जिज्ञासुओं को अपनी शंकाएँ रखने और आध्यात्मिक विषयों को गहराई से समझने का अवसर मिला। जिन सुन्दरसाथ को इस यात्रा में सहभागी होने का सौभाग्य मिला, उनके लिये यह केवल दर्शन का अवसर नहीं बल्कि ज्ञान प्राप्त करने, संशयों का समाधान करने और अपने जीवन को सही दिशा देने का माध्यम बना। यही जागनी की सार्थकता है- स्वयं जागें, सत्य को समझें और प्राप्त ज्ञान को जीवन में उतारें।

प्रेम प्रणाम जी।

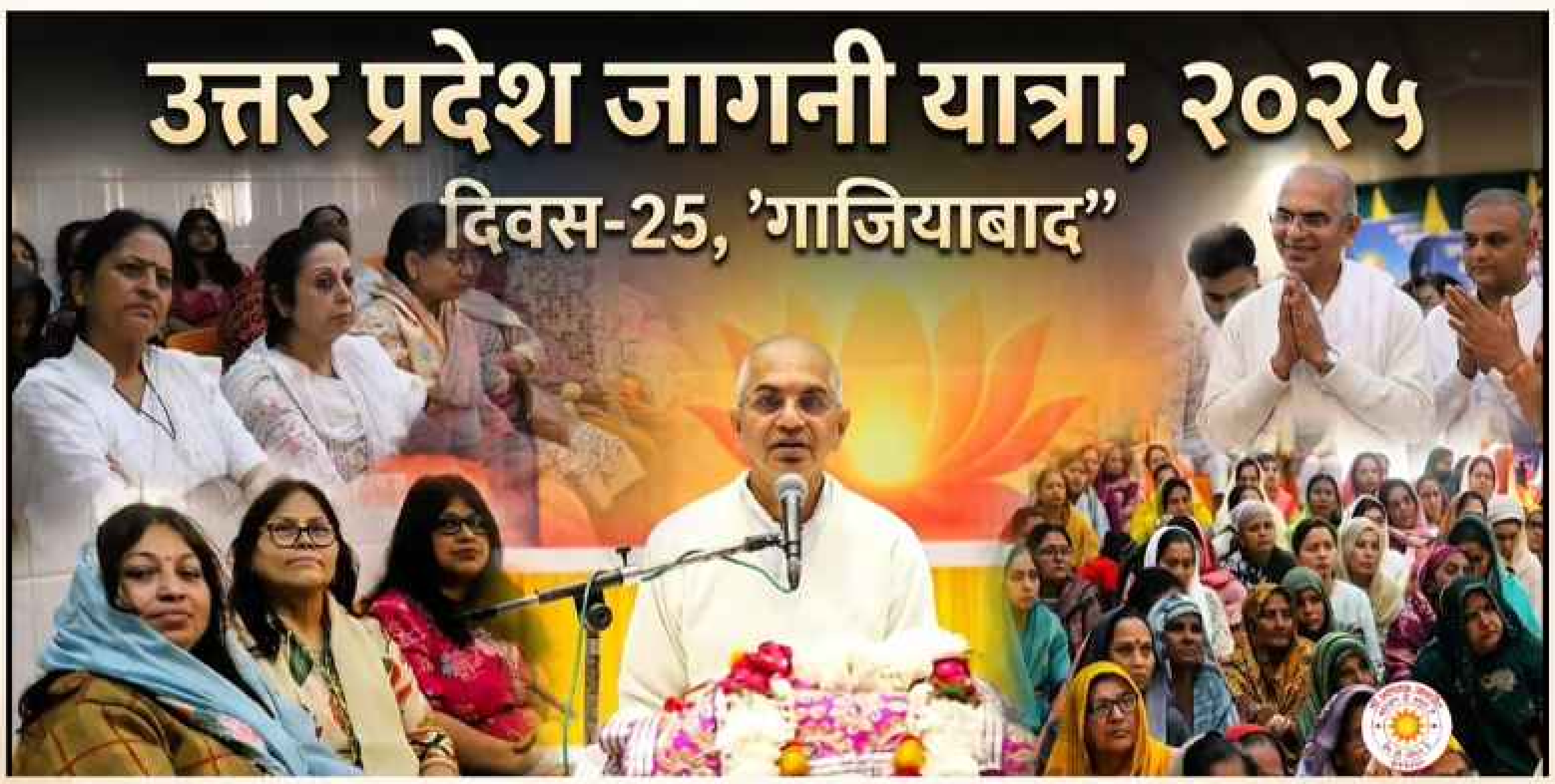

अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकाश जी।

जो लोग ज्ञान के शाब्दिक अर्थों पर वाद-विवाद में उलझे रहते हैं और उसे केवल क्रियाकाण्डों तक ही सीमित समझते हैं, वे किसी महान उपलब्धि को प्राप्त नहीं कर पाते। परन्तु जब वही ज्ञान सरल और निर्मल हृदय से उसके सूक्ष्म संदेश सहित हृदयंगम किया जाता है, तब वह केवल बौद्धिक विषय नहीं रहता, बल्कि जीवन-परिवर्तन का सशक्त साधन बन जाता है। यही ज्ञान की वास्तविक सार्थकता है और यही उसका सच्चा फल है।

रवि-प्रीति कुशवाहा, मुम्बई

जागनी यात्रा मेरे जीवन का पहला आत्मिक कदम

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 हमारे पति-पत्नी के जीवन में अनेक आत्मिक परिवर्तन लेकर आयी। चर्चा में सुना था कि जब धनी पुकारें, तब घर बैठकर नहीं रहना चाहिये। इसी भाव से 30 नवम्बर को हम मुम्बई से बिना किसी पूर्व योजना के यात्रा में सम्मिलित होने निकल पड़े। मन में ऐसा अनुभव था मानो धामधनी हमें इस यात्रा के माध्यम से पुनः प्रेम, सेवा और व्रज के भाव की स्मृति दिलाना चाहते हों।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी के आगमन की प्रतीक्षा में मन अत्यन्त उत्साहित था। कार्यक्रम से पूर्व डॉक्टर सोलंकी जी एवं अन्य सुन्दरसाथ के साथ लोगों को पैम्फलेट बाँटकर आमंत्रित करने और जागनी का सन्देश पहुँचाने की सेवा मिली। रात्रि में जब पूज्य स्वामी जी से भेंट हुई तो उनकी सहज मुस्कान और प्रेमपूर्ण व्यवहार ने भीतर तक प्रभावित किया। गाँव-गाँव, नगर-नगर, कठिन ठंड और निरन्तर यात्रा के बावजूद वे सुन्दरसाथ को जगाने के भाव से आगे बढ़ते रहे। उन्हें देखकर लगा कि सेवा का जो भी अवसर मिले उसे कभी खोना नहीं चाहिये।

यात्रा में विभिन्न स्थानों से आये सुन्दरसाथ से मिलकर ऐसा लगा मानो सभी अपने ही परिवार के हों। कभी पुस्तक-स्टॉल पर, कभी आगन्तुकों के बीच जिज्ञासुओं को जानकारी देना और उनके प्रश्न सुनना आदि छोटी-छोटी सेवाओं ने भी बहुत आनन्द दिया। अनेक लोग YouTube के माध्यम से पहले से स्वामी जी को सुनते थे और अपने प्रश्नों के समाधान के लिये कार्यक्रम में आये थे।

मेरे लिये सबसे भावपूर्ण अनुभव पूज्य स्वामी जी के जन्मस्थान और बचपन से जुड़े स्थानों पर जाना रहा। उनके विद्यालय में रात्रि बिताने, पूज्य माताजी के दर्शन करने तथा उस कक्ष को देखने का अवसर मिला जहाँ स्वामी जी ध्यान-साधना किया करते थे। माताजी से उनके बचपन की सादगी, सात्त्विक भोजन, अनुशासन और तपपूर्ण जीवन के प्रसंग सुनकर मन अत्यन्त प्रभावित हुआ।

मैं पहले आर्य समाज से जुड़ा रहा था। बाद में सरकार श्री की प्रेरणा से ब्रह्मवाणी का मन्थन प्रारम्भ किया। मन में उठने वाले अनेक प्रश्नों के उत्तर समय-समय पर पूज्य स्वामी जी की चर्चाओं और भावार्थ सहित वाणी अध्ययन से मिलने लगे। धीरे-धीरे वेदों के मर्म, आत्म जागृति और रहनी के महत्व को समझने की दिशा मिली।

इस यात्रा से मेरे भीतर सबसे बड़ा भाव यही जागा कि केवल ज्ञान सुनना पर्याप्त नहीं, जीवन और रहनी को भी शुद्ध करना आवश्यक है। जब हम स्वयं भीतर से जागेंगे तभी अपने हृदय में विराजमान धामधनी की उपस्थिति को अनुभव करने की दिशा में बढ़ सकेंगे।

मैं इस जागनी यात्रा को अपने आध्यात्मिक जीवन का पहला सच्चा कदम मानती हूँ। धामधनी से यही प्रार्थना है कि आगे भी सेवा और जागनी के अवसर मिलते रहें।

अब जो घड़ी रहो साथ चरने,
होए रहियो तुम रेनु समान ।।

यदि लेखन में कोई भूल हुई हो तो क्षमा कीजिएगा।
आप सभी सुन्दरसाथ के चरणरज ।

परशुराम, कुशीनगर

जागनी यात्रा का 53वाँ दिन जीवन का अविस्मरणीय प्रसंग

उत्तर भारत जागनी यात्रा का 53वाँ दिन मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण और भावपूर्ण दिनों में से एक रहा। कई वर्षों से मेरे हृदय में अपने सद्गुरु के सम्मुख बैठकर जी भरकर दर्शन करने और उनसे बात करने की अभिलाषा थी। उस दिन ऐसा अनुभव हुआ मानो राज जी ने मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली हो।

तुम एक कदम चलो तो मैं दस कदम चलूँगा।

उस दिन की प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। पूज्य सद्गुरु श्री राजन स्वामी जी अकेले नहीं बल्कि पूरी जागनी जमात के साथ पधारे। सीमित साधनों के बावजूद उनकी मेहर से सेवा और स्वागत की जो भी व्यवस्था सम्भव हुई, उसने हृदय को अपार सन्तोष दिया। कार्यक्रम के दौरान कुछ व्यवस्थागत कठिनाइयाँ भी आयी जिसके कारण थोड़े समय के लिये ऑनलाइन जुड़े सुन्दरसाथ को चर्चा सुनने में बाधा हुई। फिर भी राज जी की मेहर से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और जो आत्मिक आनन्द प्राप्त हुआ, वह हमारे लिये अमूल्य है।
कार्यक्रम के प्रारम्भ में विदुषी दीप्ति जी ने भीतर और बाहर की निर्मलता पर सुन्दर चर्चा की। आचार्य विजय जी ने मानव जीवन की सार्थकता, विराट स्वरूप तथा प्रलय के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डाला। वाणी-गायन के पश्चात् पूज्य श्री राजन स्वामी जी के आशीर्वचनों और ब्रह्मवाणी-चर्चा का लाभ मिला।

मेरे लिये यह जागनी यात्रा केवल एक कार्यक्रम नहीं थी। ऐसा लगा जैसे यह तो एक माध्यम था वास्तविक उद्देश्य हमारे भीतर की उस प्यास को शान्त करना था जो अपने प्रियतम और सद्गुरु के दर्शन तथा सान्निध्य के लिये वर्षों से बनी हुई थी।
इस अनुपम अवसर के लिये सद्गुरु महाराज के चरणों में जितनी बार भी कृतज्ञता और समर्पण व्यक्त करूँ, कम है।

प्रेम प्रणाम जी।

ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार।

सरोज सलूजा,
रुद्रपुर (उत्तराखण्ड)

60 दिवसीय जागनी यात्रा आत्म जागरण का दिव्य अभियान

पूज्य श्री राजन स्वामी जी द्वारा आयोजित 60 दिवसीय जागनी यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं बल्कि जन-जन में आध्यात्मिक चेतना जगाने का प्रेरक अभियान रही। इस यात्रा के दौरान उनका रुद्रपुर आगमन और हमारे निवास पर पधारना हमारे परिवार के लिये अत्यन्त सौभाग्य और आनन्द का अवसर रहा। उनके दर्शन, सान्निध्य और प्रेरणादायी वचनों ने हमारे हृदय में अमिट छाप छोड़ी।

पूज्य स्वामी जी ने यात्रा के माध्यम से यह सन्देश दिया कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल सांसारिक सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं है बल्कि अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना और उस एक परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करना है। उन्होंने एक परमात्मा की भक्ति, आत्मचिन्तन और आत्म-जागृति की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने धर्म के वास्तविक स्वरूप को भी सरलता से समझाया कि धर्म केवल बाहरी कर्मकाण्ड या आडम्बर नहीं किन्तु धैर्य, क्षमा, संयम, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध जैसे गुणों को जीवन में धारण करना है। इन मूल्यों से ही जीवन में प्रेम, सद्भाव और शान्ति का विकास होता है।

यात्रा में क्षर, अक्षर और अक्षरातीत जैसे गूढ़ आध्यात्मिक विषयों को भी सहज भाषा में समझाया गया। पूज्य स्वामी जी ने ब्रह्मRRRवाणी और शास्त्रों के आधार पर नश्वर संसार, अविनाशी सत्ता तथा अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान पर प्रकाश डाला। इससे अनेक जिज्ञासुओं को आध्यात्मिक विषयों को समझने की नयी दिशा मिली। सत्संग और चर्चाओं ने लोगों को अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य पर विचार करने, आत्मज्ञान की ओर बढ़ने और सत्य, प्रेम तथा सेवा को जीवन में स्थान देने की प्रेरणा दी।

मेरे लिये इस यात्रा की सबसे सुखद स्मृति पूज्य स्वामी जी का रुद्रपुर आगमन और हमारे घर पधारना रहा। उनका आशीर्वाद और सान्निध्य हमारे परिवार के लिये एक अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर है।

हम स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं कि हम इस जागनी यात्रा के साक्षी बने और पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य का लाभ प्राप्त किया।

प्रेम प्रणाम जी।

**बेहद वाट देखावहीं,
पिउ आए के पास।**

सुन्दर लता,
अम्बाला कैंट

जागनी यात्रा मेरे घर का अविस्मरणीय सौभाग्य

आत्म-सम्बन्धी सुन्दरसाथ जी, प्रेम प्रणाम।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से पूज्य श्री राजन स्वामी जी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुई जागनी यात्रा का अनुभव मेरे लिये अत्यन्त भावपूर्ण रहा। यात्रा का शुभारम्भ 18 अक्टूबर को शेरपुर धाम चबूतरे से हुआ। मुझे भी अनेक सुन्दरसाथ के साथ वहाँ सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। बड़ी संख्या में उपस्थित सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी सज्जनों ने ब्रह्मवाणी-चर्चा का रसपान कर आत्मिक आनन्द प्राप्त किया।

विभिन्न स्थानों से होती हुई यह जागनी यात्रा 5 नवम्बर, बुधवार को अम्बाला कैंट पहुँची। पूज्य श्री राजन स्वामी जी, आचार्यगण और सुन्दरसाथ का हमारे घर पधारना मेरे लिये जीवन का अत्यन्त सुखद और अविस्मरणीय क्षण था।

उनके आगमन से मन और आत्मा प्रेम तथा आनन्द से भर उठे। ऐसा अनुभव हुआ मानो वर्षों बाद जागनी की वही दिव्य धारा पुनः हमारे द्वार तक आ पहुँची हो। कार्यक्रम में उपस्थित सुन्दरसाथ और धर्मप्रेमी सज्जनों ने पूज्य स्वामी जी एवं आचार्यगण की ब्रह्मवाणी-चर्चा का लाभ लिया। पूरे वातावरण में प्रेम, ज्ञान और आत्मिक आनन्द की अनुभूति रही। यह जागनी यात्रा राज जी की मेहर, पूज्य स्वामी जी के अटूट संकल्प एवं परिश्रम और समस्त सुन्दरसाथ के सहयोग से अत्यन्त प्रेरणादायक बनी। इस सौभाग्य के लिये हृदय से कृतज्ञ हूँ।

सभी सुन्दरसाथ को प्रेम प्रणाम जी।

एही रस तारतम का, चढ़या जेहेर उतारे।
निरविख काया करे, जीव जागे करारे।।

श्रीमती नीलम पुंडीर

एक परमात्मा की पहचान जागनी से मिला समाधान

समस्त सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी सज्जनों को प्रेम प्रणाम जी।

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 में पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं ज्ञानपीठ के आचार्यगण की चर्चाओं से मन में उठने वाली अनेक आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान मिला। विशेष रूप से परमात्मा कौन है? पूजा और भक्ति किसकी करनी चाहिये? जैसे प्रश्नों पर सरल और स्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

चर्चा से यह भाव दृढ़ हुआ कि परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास रखते हुए मनुष्य को एक परमात्मा की भक्ति और उसके ध्यान की ओर बढ़ना चाहिये।
इन गहन विषयों को सहज भाषा में समझाने और अनेक शंकाओं को दूर करने के लिये हम पूज्य श्री राजन स्वामी जी के हृदय से आभारी हैं।

प्रेम प्रणाम जी।

गोविन्द पुंडीर एवं ब्रजपाल पुंडीर,
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

जागनी यात्रा जिज्ञासाओं से आत्मिक स्पष्टता तक

पूज्य स्वामी जी के चरणों में सादर प्रणाम।

उत्तर भारत जागनी यात्रा में सम्मिलित होना हमारे लिये अत्यन्त सौभाग्य का अवसर रहा। पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं आचार्यगण की चर्चाओं के माध्यम से समाज में प्रचलित अनेक प्रश्नों पर विचार करने का अवसर मिला- भक्ति और पूजा में क्या अन्तर है? परमात्मा कौन है? देवता और परमेश्वर में क्या अन्तर है?

पूज्य स्वामी जी ने **'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'** के भाव को समझाते हुए बताया कि महापुरुषों के श्रेष्ठ आचरण से हमें प्रेरणा लेनी चाहिये किन्तु अपनी आत्मिक साधना को एक परमात्मा की पहचान और उसके ध्यान की ओर केन्द्रित करना चाहिये।
इस यात्रा ने हमारे भीतर ज्ञान को समझने और जीवन में उतारने की नयी प्रेरणा उत्पन्न की।
पूज्य श्री राजन स्वामी जी, ज्ञानपीठ परिवार एवं जागनी यात्रा से जुड़े समस्त सुन्दरसाथ का हृदय से आभार।

प्रेम प्रणाम जी।

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-30. ''सिकन्दराबाद''

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा,2025
दिवस-31, भिवानी (हरियाणा)
उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा,2025
दिवस-32, रोहिणी (दिल्ली)

मंजू जी,

उनिया (उत्तर प्रदेश)

'सुख शीतल करूँ संसार' जागनी का सार

श्री मुखवाणी में महामति जी के हृदय का भाव है- सुख शीतल करूँ संसार। पूज्य श्री राजन स्वामी जी जागनी यात्रा के माध्यम से इसी भाव को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं।

धामधनी की मेहर से मुझे भी उनके मुखारविन्द से ब्रह्मवाणी की चर्चा सुनने का सौभाग्य मिला। इस अनुभव से एक बात विशेष रूप से हृदय में उतरी कि केवल वाणी सुनना पर्याप्त नहीं है। वाणी मन्थन, चितवनी, सेवा और रहनी को जीवन में स्थान देना आवश्यक है।

संसार के कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए भी हमें अपने समय और मन का एक महत्वपूर्ण भाग राज-श्यामा जी की चितवन में लगाना चाहिये। यही जागनी के सन्देश को जीवन में उतारने की दिशा है।

प्रेम प्रणाम जी।

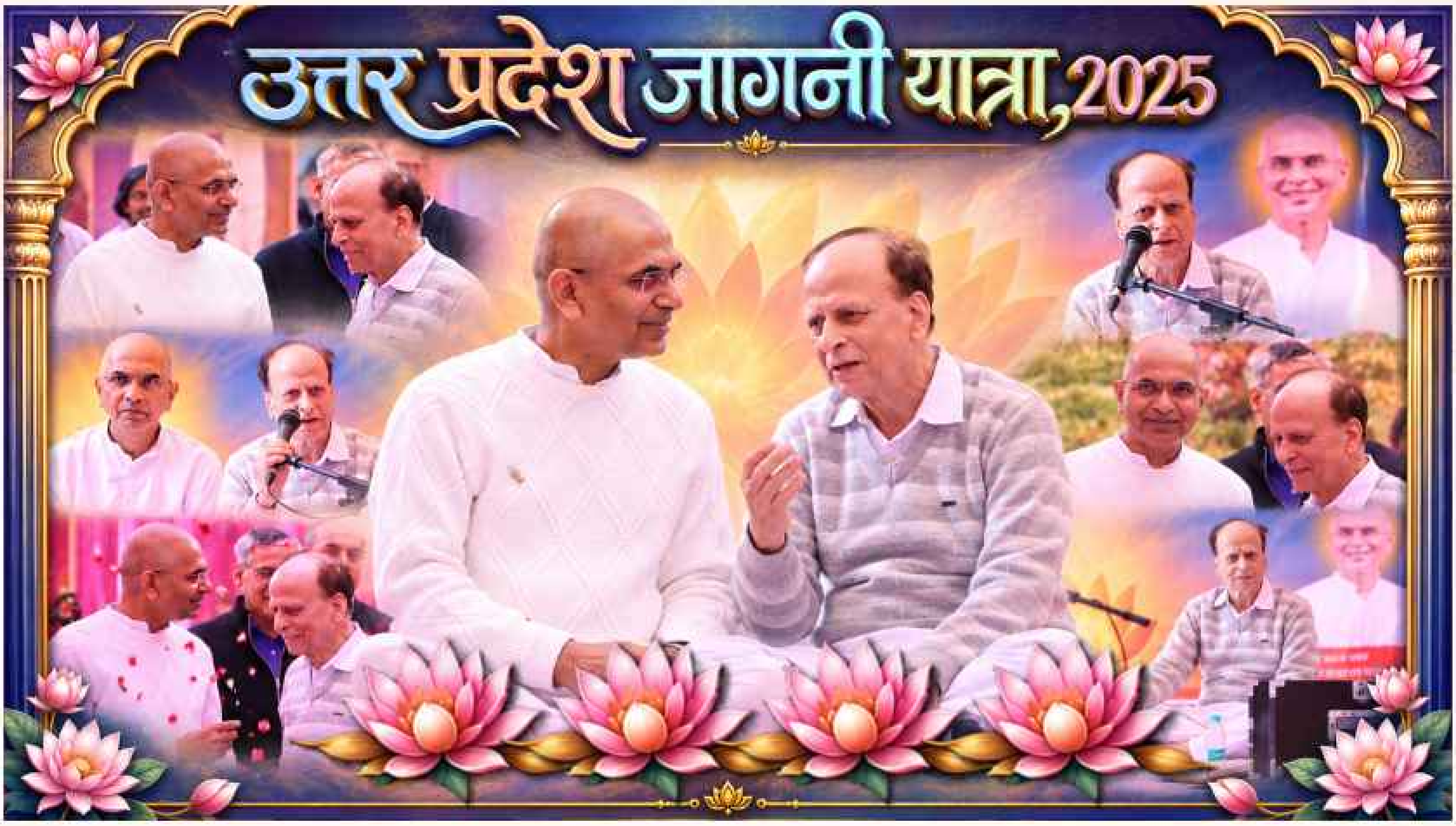

हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए ।

सागर की सतह पर उठती लहरें जीवन का एक सूक्ष्म दर्शन दिखाती है। कोई लहर उभरती है, कोई ऊँचाइयाँ छूती है, कोई ढलती हुई क्षितिज में खो जाती है। देखने में इनका स्वरूप, इनकी गति भिन्न है। परंतु यह केवल दृष्टि भ्रम है। वास्तविकता तो यही है कि लहरों का उद्गम और अंतिम परिणति सागर ही है। वही उठाता है, वही बहाता है और अंत में वही अपने आँचल में समेट लेता है।

आत्मा और परमात्मा का संबंध भी कुछ भिन्न नहीं। चमड़ी की आँख से देखें तो भेद दिखेगा, पर यदि आत्मदृष्टि से देखें तो यह संबंध लहर और सागर का वही अद्वैत रहस्य है।हम सब उसी अनन्त, शब्दातीत महासागर की तरंगें है। भेद का अनुभव केवल क्षणिक है। जैसे लहर अपने उत्थान में स्वतंत्र दिखती है, पर उसके प्राण में सागर की ही धड़कन चलती है, उसी प्रकार हम भी उसी मूल से उठे हैं और एक दिन उसी में लौट जायेंगे। तरंग का मूल सागर है, और आत्मा का मूल परब्रह्म। बाक़ी सब लहरों का खेल है- सुंदर, क्षणभंगुर, पर अंततः उस एक की क्रीड़ा।

बंटी सोनी, जिला श्रावस्ती

बेलभरिया में वाणी की गूँज एक प्रेमपूर्ण अनुभव

मुझे पूज्य श्री राजन स्वामी जी के साथ जागनी यात्रा में बेलभरिया, जिला बहराइच जाने का सौभाग्य मिला। वहाँ वाणी-चर्चा का रसपान करने के साथ स्थानीय सुन्दरसाथ का अत्यन्त प्रेम प्राप्त हुआ।

पूज्य स्वामी जी के साथ आये आचार्यगण और ज्ञानवान सुन्दरसाथ की सरलता तथा प्रेम ने विशेष रूप से प्रभावित किया। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत वाणी-गायन भी मेरे लिये अद्भुत अनुभव रहा क्योंकि हमारे क्षेत्र में सामान्यतः भजन अधिक सुनने को मिलते हैं, वाणी-गायन अपेक्षाकृत कम होता है।

आचार्य अशोक जी तथा अन्य सेवाभावी सुन्दरसाथ की रहनी और व्यवहार देखकर ऐसा अनुभव हुआ कि ब्रह्मज्ञान केवल कहा नहीं जा रहा बल्कि जीवन में भी दिखायी दे रहा है।

पूज्य स्वामी जी से मिलते ही मन भावुक हो उठा। उनके साथ चलने वाले सुन्दरसाथ में शान्ति, प्रेम और सहजता देखकर यह यात्रा मेरे लिये अविस्मरणीय बन गयी।

प्रेम प्रणाम जी।

धर्मदत्त चौरसिया
ग्राम बेलभरिया, जिला बहराईच

एक दिन का आयोजन जीवनभर की प्रेरणा

अक्षरातीत श्री राज जी की कृपा से उत्तर भारत जागनी यात्रा का एक दिवसीय कार्यक्रम अपने घर पर आयोजित कराने का सौभाग्य मिला। बेलभरिया-बहराइच में पहली बार पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं ज्ञानपीठ के आचार्यगण की चर्चा हुई, जिसका विशेष रूप से युवा पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

कार्यक्रम के बाद लगभग 16 वर्ष के एक युवक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा,

"क्या मैं भी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा के गुरुकुल में पढ़ने जा सकता हूँ?" हमने उसे गुरुकुल के नियम बताये तो उसने वहाँ अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की।

यह मेरे लिये जागनी कार्यक्रम की सबसे प्रेरक उपलब्धियों में से एक रही।

ब्रह्मवाणी का कथन है-

ए सुख देऊँ ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार ।।

इस वाणी में प्रेम, ज्ञान, आनन्द और परमधाम के सुख को दूसरों तक पहुँचाने का भाव निहित है। मैंने भी यही अनुभव किया कि हम स्वयं प्राप्त ज्ञान और आनन्द को अन्य जिज्ञासुओं तक पहुँचायें तभी जागनी का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा।

कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

आरती त्यागी,
रुड़की

रुड़की में जागनी आत्मिक सुख का अनुभव

सभी सुन्दरसाथ को प्रणाम।

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 के दौरान मुझे अनेक स्थानों पर सम्मिलित होने का अवसर मिला। प्रत्येक स्थान का अनुभव अपने आप में विशेष था, किन्तु रुड़की का कार्यक्रम मेरे लिये अत्यन्त आत्मिक और सुखद रहा।

यहाँ बड़ी संख्या में सुन्दरसाथ और अन्य धर्मप्रेमी जिज्ञासुओं ने पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा को प्रेम और एकाग्रता से सुना। स्वामी जी ने कर्म और उसके आध्यात्मिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

चर्चा समाप्त होने के बाद कई श्रोता अपने प्रश्न लेकर आये। उनके चेहरों और भावों से यह अनुभव हुआ कि कार्यक्रम ने उनके भीतर किसी नयी जिज्ञासा और आत्मिक शान्ति को जन्म दिया है।

मुझे इस यात्रा में बार-बार ऐसा अनुभव हुआ मानो राज जी अपनी सखियों को माया की निद्रा से जगाने का प्रयास कर रहे हों।

मेरी यही प्रार्थना है कि भविष्य में भी ऐसी जागनी यात्राएँ और वाणी-चर्चाएँ होती रहें, ताकि अधिक से अधिक लोगों को ज्ञान और आत्मिक आनन्द का लाभ मिल सके।

प्रणाम जी।

आशुतोष चैहान एवं समस्त परिवार,
अम्बाला कैंट

जब जागनी यात्रा हमारे घर पहुँची

5 नवम्बर 2025 का दिन हमारे परिवार के लिये सदैव स्मरणीय रहेगा। इस दिन पूज्य श्री राजन स्वामी जी तथा श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से पधारे सुन्दरसाथ का हमारे निवास पर शुभ आगमन हुआ।

एक-एक करके हुई वाणी-चर्चाओं और सत्संग ने हमारे घर के साथ पूरे आसपास के वातावरण को आध्यात्मिक आनन्द से भर दिया। परिवार के साथ-साथ हमारे मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी इस अवसर का लाभ प्राप्त हुआ।

हम इसे श्री राज जी की विशेष कृपा मानते हैं और प्रार्थना करते हैं कि ऐसे अवसर बार-बार प्राप्त हों तथा हम सभी पुनः वाणी, सत्संग और सेवा के इस सुख का अनुभव कर सकें।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी एवं श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ परिवार का हृदय से कोटि-कोटि धन्यवाद।

प्रणाम जी।

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-38. ”जगीपुर”

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-39. ”कतौली

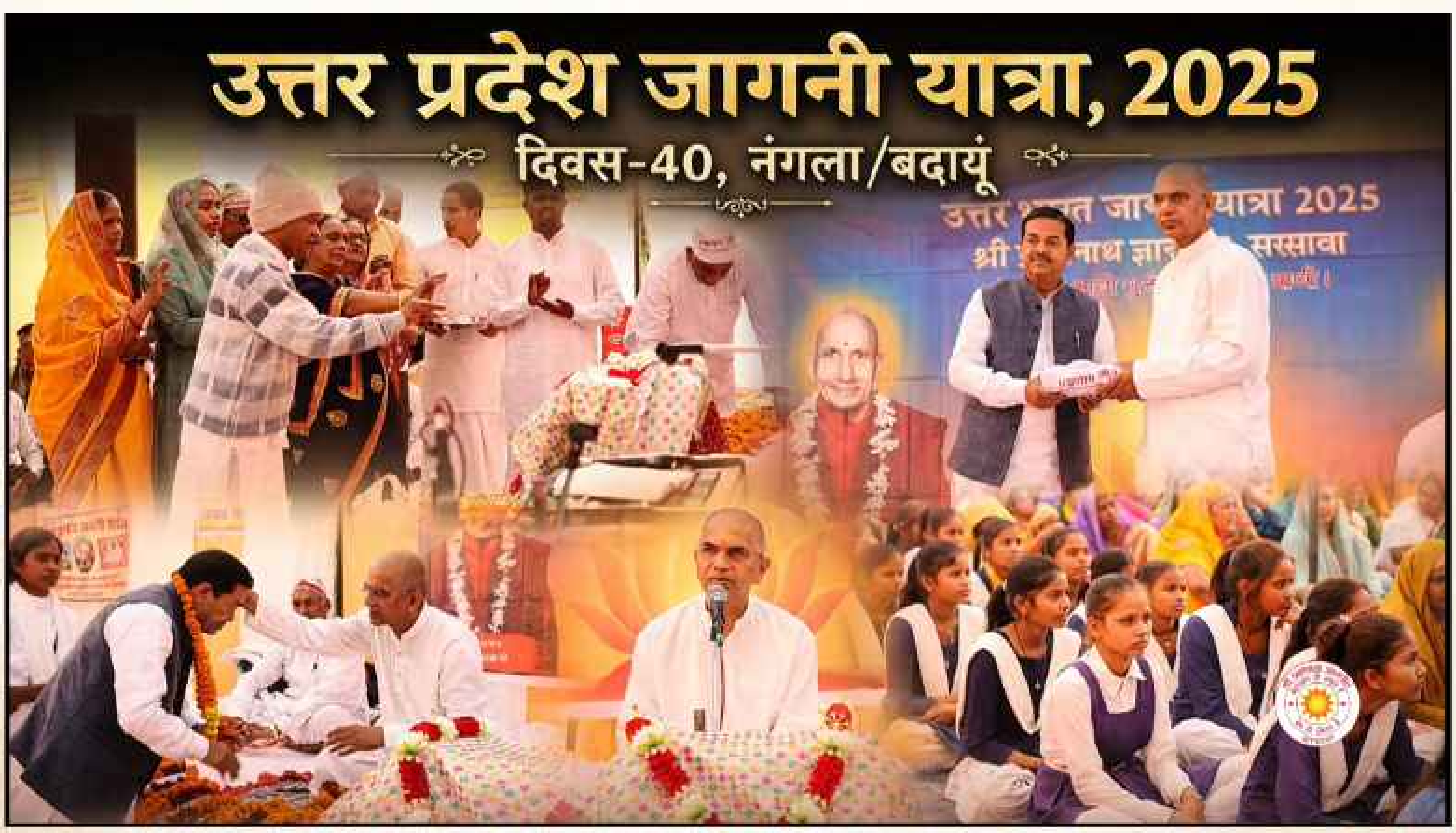
उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, 2025
दिवस-40, नंगला/बदायूं

राजेश एवं परिवार,
बिंजलपुर, अम्बाला

एक संकल्प का साकार रूप बिंजलपुर जागनी

प्रेम प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

हमारे समस्त परिवार की ओर से पूज्य श्री राजन स्वामी जी, आचार्यगण, माताओं एवं ज्ञानपीठ के विद्यार्थियों को कोटि-कोटि प्रणाम।

राजजी की मेहर से 1 नवम्बर 2025 को हमारे निवास, ग्राम बिंजलपुर में जागनी यात्रा का कार्यक्रम आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुजरात की पूर्व जागनी यात्रा से जुड़ने के समय से ही मन में इच्छा थी कि हमारे क्षेत्र में भी ऐसा कार्यक्रम हो। उस इच्छा को साकार होता देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कार्यक्रम का प्रमुख विषय था एकमात्र पूर्णब्रह्म परमात्मा की पहचान कराना। पूज्य श्री राजन स्वामी जी, चन्द्र गुरु जी, किरण माताजी तथा आचार्य अशोक जी ने इस विषय से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं को सहज भाषा में समझाया। दूर-दूर से आये सुन्दरसाथ, रिश्तेदारों और ग्रामवासियों ने ध्यानपूर्वक चर्चा सुनी और कार्यक्रम का आनन्द लिया।

प्रियतम श्री राज जी से यही प्रार्थना है कि उनकी दया-दृष्टि सभी पर बनी रहे, ऐसे अवसर हमें पुनः मिलते रहें और हमारा ध्यान सदैव राज-श्यामा जी के चरणों में लगा रहे।

प्रेम प्रणाम जी।

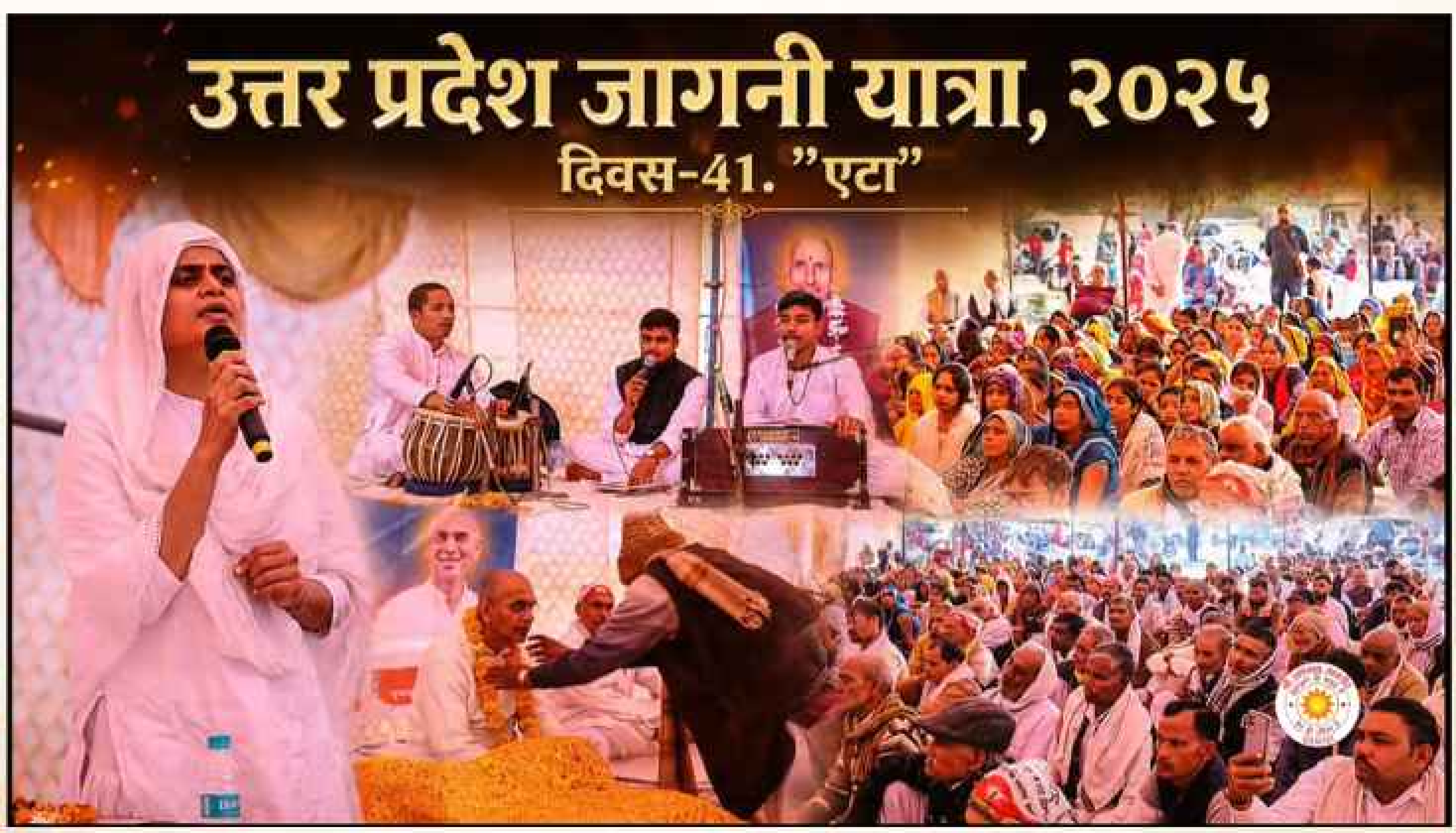

रामशरण पुजारी,नयागाँव फैजाबाद,
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

नयागाँव की पहली जागनी श्रद्धा से नया जुड़ाव

परम आदरणीय सुन्दरसाथ जी,

पूज्य श्री राजन स्वामी जी की प्रेरणा से 11 नवम्बर 2025 को हमारे ग्राम नयागाँव फैजाबाद स्थित श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर में जागनी यात्रा का कार्यक्रम अत्यन्त श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

हमारे गाँव में इस प्रकार का जागनी कार्यक्रम पहली बार आयोजित हुआ था। स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियाँ और बुजुर्ग बड़ी संख्या में उपस्थित हुए तथा सत्संग, दर्शन और तारतम वाणी के श्रवण का लाभ लिया। कार्यक्रम का ग्रामीणों पर अत्यन्त सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कुछ नए जिज्ञासुओं के भीतर भी तारतम ज्ञान को और अधिक समझने की प्रेरणा जागी।

इस आयोजन की सफलता में महिपाल प्रणामी जी, नरेश प्रणामी जी एवं समस्त स्थानीय सुन्दरसाथ की निःस्वार्थ सेवा और सहयोग विशेष रूप से सराहनीय रहा।

सभी सुन्दरसाथ को कोटि-कोटि सादर प्रणाम।

अतुल/अनुज शर्मा,
पटाड़ी

माताजी की इच्छा का साकार होना पटाड़ी जागनी

श्री राज-श्यामा जी सदा सहाय।

15 नवम्बर 2025 का दिन हमारे परिवार के लिये अत्यन्त भावपूर्ण और अविस्मरणीय रहा। हमारी माताजी श्रीमती भगवती शर्मा जिनका 29 सितम्बर 2024 को धामगमन हो गया था, उनकी हार्दिक इच्छा थी कि पूज्य श्री राजन स्वामी जी की जागनी यात्रा का कार्यक्रम हमारे निवास पर भी हो।

माताजी के धामगमन के पश्चात् राजेन्द्र चैहान जी, सोनू भैया जी और बबीता दीदी सहित अनेक सुन्दरसाथ के सहयोग से उनकी यह इच्छा साकार हुई।

पूज्य स्वामी जी एवं पूरी जागनी टोली का गाँव पटाड़ी में आगमन हमारे लिये किसी स्वप्न के पूर्ण होने जैसा था। बड़ी दीदी सुषमा शर्मा जी और सरिता शर्मा जी के मार्गदर्शन में पूरे परिवार ने मिलकर सभी का स्वागत और सेवा की।

पूज्य स्वामी जी की वाणी-चर्चा से ग्रामीणों और परिवारजनों को विशेष आनन्द प्राप्त हुआ। पूरी जागनी टोली का रात्रि-प्रवास ऐसा अनुभव करा रहा था मानो सभी सखियाँ प्रेमपूर्वक, बिना किसी भेदभाव के एक परिवार की तरह एकत्र हों।
श्री तारतम वाणी की यह चौपाई हृदय में गूंजती रही-

ज्यारे धणी धनवट करे,
त्यारे बल वेरी न हरे ।
वली गया काम सराडे चढ़े,
मन चितव्या कारज सरे ।।

माताजी की इच्छा को पूर्ण करने वाले इस अवसर के लिये पूज्य स्वामी जी एवं समस्त सुन्दरसाथ के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम।

आपकी चरणरज।

सोनिया पुंडीर,
भायला

जीवन का सबसे सुखमय क्षण

प्रेम प्रणाम जी, प्राणाधार सुन्दरसाथ जी।

हमारे यहाँ जागनी यात्रा का कार्यक्रम आयोजित हुआ और पूज्य श्री राजन स्वामी जी के आगमन से घर तथा मन दोनों आनन्द से भर गये। उनकी वाणी-चर्चा सुनने का अवसर मिला और अनेक लोग उनके सरल एवं प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। मेरे जीवन के अत्यन्त सुखद क्षणों में यह अवसर सदैव स्मरणीय रहेगा।
राजजी के चरणों में मेरी यही प्रार्थना है कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम होते रहें और हमें पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य एवं सेवा का अवसर मिलता रहे।
मेरा जीवन सदैव ऐसे ही सद्गुरु के चरणों की शरण में बीते।

पूज्य स्वामी जी एवं आप सभी के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम।

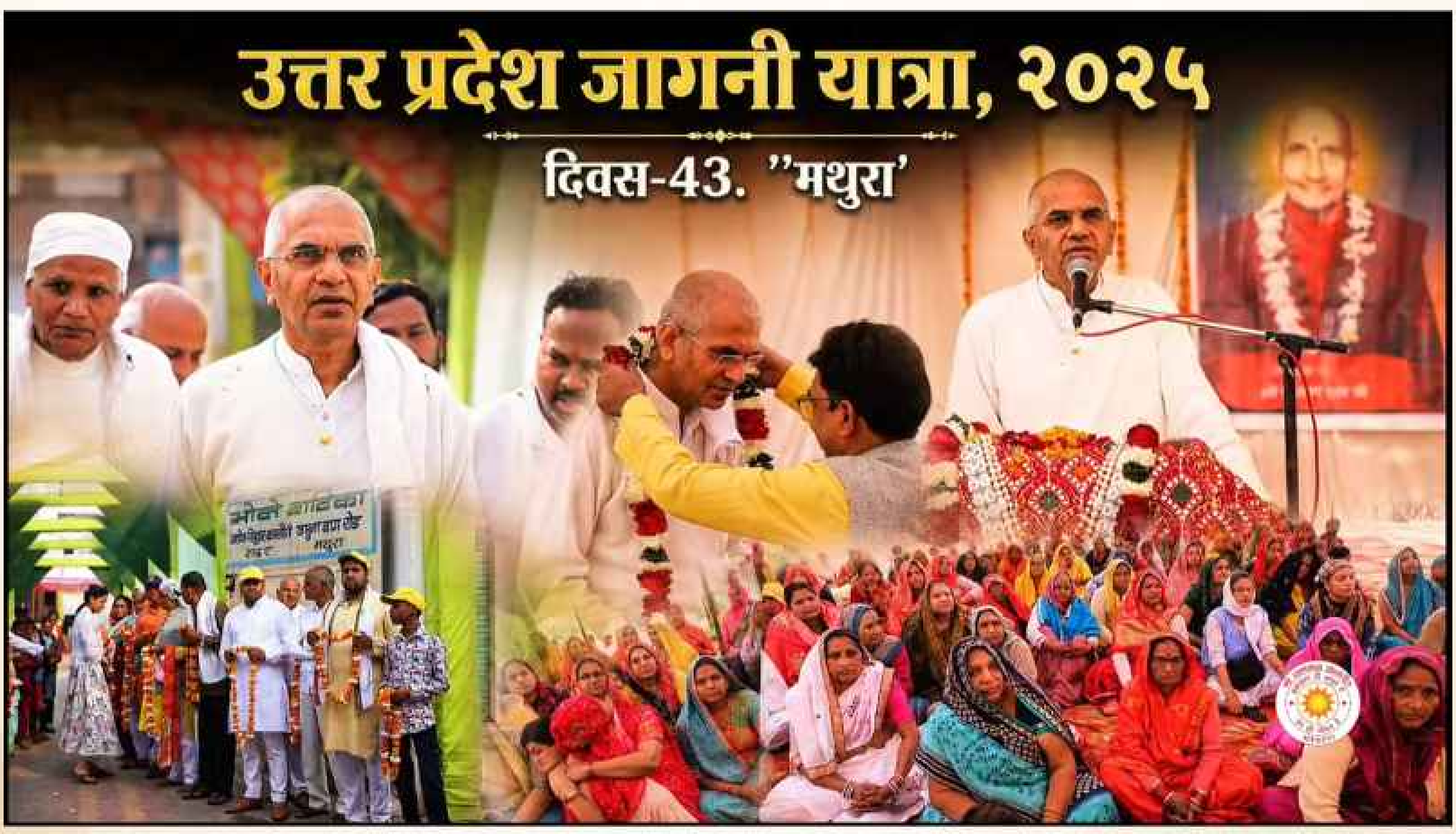

वीनस हसीजा,
दिल्ली

जागनी यात्रा अपने वास्तविक घर की याद

जागनी यात्रा का अर्थ है माया में अपने वास्तविक स्वरूप को भूल चुकी आत्माओं को जगाना, उन्हें निजधाम की स्मृति कराना और श्री प्राणनाथ जी की अमूल्य ब्रह्मवाणी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाना।

मैं दिल्ली में रहती हूँ और कुछ परिस्थितियों के कारण पूरी जागनी यात्रा में सम्मिलित नहीं हो सकी। फिर भी जितना सुनने, समझने और जुड़ने का अवसर मिला, उससे मुझे बहुत प्रेरणा और आत्मिक बल प्राप्त हुआ। इस यात्रा से मैंने विशेष रूप से सीखा कि प्रत्येक परिस्थिति में निराश होने के स्थान पर स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करते रहना चाहिये। राजजी की मेहर के योग्य बनने के लिये आवश्यक है कि हम प्रेम, समर्पण और निरन्तर स्मरण के साथ आगे बढ़ें।

हम जितनी पात्रता विकसित करेंगे, उतना ही ज्ञान और आत्मिक आनन्द ग्रहण कर पायेंगे।

प्रेम प्रणाम जी।

मलयागिरी की भीलनी चन्दन से चूल्हा जलाती है। यह मनुष्य की गहरी मूर्छा का प्रतीक है। चन्दन—जिसमें उसकी दरिद्रता को रूपांतरित करने की शक्ति है, उसी को वह आग में झोंक देती है और कोयला बना लेती है।मनुष्य भी अपने चन्दन जैसे जीवन को पहचान नहीं पाता और उसे तुच्छ इच्छाओं, आदतों और प्रमाद की आग में जला देता है।

श्री जी चेताते हैं

'जासो पाइये प्राण को आधार, सो क्यो सोए गमावे रे गमार।'

मनुष्य जीवन वह द्वार है जिससे अस्तित्व के मूल प्राण, आत्मतत्त्व के स्रोत, और परम के संग मिलन संभव है। लेकिन मन वहीं सोया है—निद्रा में, मोह में, महत्वहीन बातों के भार में।मनुष्य को अपनी नींद ही परम प्रिय है। यही गवारपन है। हम उस भीलनी जैसे ही हैं हाथ में चन्दन है, पर उसकी कीमत नहीं जानते; और जो अनमोल है, उसे क्षणिक सुखों के लिए जला देते हैं।

सुषमा,
बदायूँ

प्रेम और ज्ञान की गंगा जागनी का सन्देश

प्यारे सुन्दरसाथ एवं धर्मप्रेमी सज्जनों को प्रणाम।

उत्तर भारत जागनी यात्रा 2025 का उद्देश्य यही रहा कि लोगों के हृदय में प्रेम और ज्ञान की धारा बहे तथा विभिन्न स्थानों के लोग एक मंच पर जुड़कर आत्म-जागृति की दिशा में आगे बढ़ें।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें अन्धकार को दूर करती हैं, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञान का प्रकाश भी मनुष्य के भीतर की शंकाओं और अज्ञान को दूर करने की क्षमता रखता है। अनेक लोगों ने पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा सुनकर एक परमात्मा की पहचान और भक्ति के विषय में नयी दृष्टि प्राप्त की। स्वामी जी की सादगी और निःस्वार्थ भाव ने भी अनेक श्रोताओं को प्रभावित किया। लोगों ने अनुभव किया कि उनके लिये सम्मान, धन या बाहरी प्रदर्शन से अधिक महत्वपूर्ण है मानव को ज्ञान, प्रेम और एकता के सूत्र में जोड़ना।

मेरी विनम्र प्रार्थना है कि भविष्य में छोटे-छोटे तीन या पाँच दिवसीय कार्यक्रम भी आयोजित हों, जिनमें सुन्दरसाथ को अधिक सेवा का अवसर मिले और जिज्ञासुओं को पर्याप्त समय देकर उनके प्रश्नों का समाधान किया जा सके।

महामत कहें सैयन को, ए सेवा के कहे साथ।
इहाँ तेही खड़े रहे, जाके धनिएं पकड़े हाथ।।

जागनी का सच्चा फल तभी है जब हम ज्ञान सुनने के साथ सेवा, प्रेम और रहनी में भी आगे बढ़ें।

प्रेम प्रणाम जी।

जयशंकर चैबीसा, उसमानिया,
आसपुर (राजस्थान)

मेरी आत्मिक यात्रा सरकार श्री से राजन स्वामी जी तक

मेरे जीवन का अनुभव यही रहा है कि जब धनी किसी आत्मा को जगाना चाहते हैं तो किसी न किसी माध्यम से उसके लिये सही मार्ग खोल देते हैं।

मैं राजस्थान के ऐसे क्षेत्र से हूँ जहाँ आध्यात्मिक ज्ञान के विशेष अवसर सहज उपलब्ध नहीं थे। तारतम ग्रहण करने और पाठ-पारायण करने के बाद भी भीतर कुछ प्रश्न बने हुए थे। धनी की मेहर से रतनपुरी आश्रम में 21 दिवसीय चितवन शिविर में जाने का अवसर मिला। वहाँ सरकार श्री की हृदयस्पर्शी चर्चाएँ, चितवन और अमृत पाठ-पारायण ने मेरे भीतर नयी चेतना जगायी। परमधाम और अखण्ड लीला के भाव को समझने की दिशा वहीं से स्पष्ट हुई।

सरकार श्री के अन्तर्ध्यान के पश्चात् वही ज्ञान-ज्योति मुझे पूज्य श्री राजन स्वामी जी के माध्यम से आगे बढ़ती दिखायी दी। उनकी चर्चाओं, अर्थ-भावार्थ और वाणी-मन्थन से अनेक गूढ़ विषयों को समझने का अवसर मिला और चितवन मेरे जीवन का आवश्यक अंग बनती गयी।

गुजरात-मध्यप्रदेश की पूर्व जागनी यात्रा के समय प्रतिदिन Live चर्चा सुनना मेरी दिनचर्या बन गयी थी। धीरे-धीरे पूज्य स्वामी जी के प्रति आत्मिक निकटता बढ़ती गयी।

इसके बाद उत्तर भारत में 60 दिवसीय जागनी यात्रा हुई। कठिन ठंड और लगातार कार्यक्रमों के बावजूद पूज्य स्वामी जी ने बिना विश्राम ब्रह्मज्ञान की चर्चा जारी रखी। कभी विरोध या कठिन परिस्थितियाँ भी आयी किन्तु उनका शान्त और शीतल व्यवहार मेरे लिये स्वयं एक शिक्षा रहा।

मीडिया के माध्यम से दूर बैठे सुन्दरसाथ तक भी वाणी-चर्चाएँ पहुँचीं। मैं इसे धनी की विशेष मेहर मानता हूँ कि जीवन में सही समय पर ऐसा मार्गदर्शन मिला।

आज मेरे भीतर यही विश्वास है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, चितवन, वाणी-मन्थन और सद्गुरु के मार्गदर्शन से हमें अपने आत्मिक लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहना चाहिये।

पूज्य श्री राजन स्वामी जी के चरणों में बारम्बार शत-शत, कोटान-कोट प्रेम प्रणाम।

ज्योति,
बैंगलोर

सत्य की खोज, साधना और वाणी मन्थन की प्रेरणा

प्रेम प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

इन दिनों श्री देवचन्द्र जी की बीतक पढ़ते-सुनते हुए उनके जीवन की खोज और साधना के प्रसंगों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। कम आयु से ही उनके भीतर यह प्रश्न जागा था - हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? वास्तविक परमात्मा कौन है?

इन्हीं प्रसंगों को पढ़ते हुए मुझे पूज्य श्री राजन स्वामी जी के जीवन की साधना और खोज की भी स्मृति हुई। उनके जीवन से जुड़े अनुभवों को सुनकर मैंने जाना कि उन्होंने भी किसी बात को केवल सुनकर स्वीकार नहीं किया बल्कि परमात्मा की पहचान के लिये अध्ययन, खोज और कठोर साधना का मार्ग अपनाया।

हिमालय की यात्राएँ, कठिन साधना, अत्यन्त सादा जीवन और सत्य की खोज से जुड़े अनेक प्रसंग उनके दृढ़ संकल्प को दर्शाते हैं। बाद में जागनी रत्न सरकार श्री के सान्निध्य में आने पर भी उन्होंने ज्ञान को समझने के लिये वेद, दर्शन और विभिन्न धर्मग्रन्थों का गहराई से अध्ययन किया।

मुझे विशेष रूप से यह बात प्रेरित करती है कि उन्होंने ब्रह्मवाणी को केवल पढ़ा नहीं बल्कि एक-एक चैपाई का मन्थन कर उसे जीवन में उतारने का प्रयास किया।

हममें से अनेक लोग वाणी का नियमित पाठ करते हैं, किन्तु यह जीवन हमें प्रेरणा देता है कि पाठ से आगे बढ़कर उसके अर्थ, भाव और रहनी को भी समझें।

ऐसे पूज्य सद्गुरु श्री राजन स्वामी जी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

प्रेम प्रणाम जी।

ऐह प्रकास देख के,
जगाओ अपनी आतम ।।

स्तुति

कुरड़ी गाँव का जागनी कार्यक्रम मेरी आध्यात्मिक यात्रा का नया अध्याय

सादर प्रणाम।

हाल ही में कुरड़ी गाँव में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित जागनी कार्यक्रम में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। कुछ ही घंटों का यह कार्यक्रम मेरे लिये अत्यन्त मूल्यवान अनुभव बन गया। पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चा से परमात्मा की प्राप्ति, ध्यान और आत्मिक साधना के विषय में नयी समझ मिली। मुझे उनसे कुछ प्रश्न पूछने का अवसर भी मिला, जिनका उन्होंने सरलता से समाधान किया। उन्होंने प्रारम्भिक रूप से ध्यान करने की विधि भी समझायी, जिसे मैंने अपनी दिनचर्या में अपनाने का प्रयास प्रारम्भ किया है। कार्यक्रम में दीप्ति जी से भी बातचीत हुई। उन्होंने आत्मिक उन्नति के लिये ध्यान, संयम, संतुलित आहार, श्रेष्ठ कर्म और सकारात्मक विचारों के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम ने मुझे अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य पर पुनः विचार करने और आध्यात्मिक दिशा में कुछ ठोस कदम उठाने की प्रेरणा दी।

मेरे लिये यह जागनी कार्यक्रम निःसन्देह मेरी आत्मिक यात्रा का एक नया अध्याय बन गया है।

सादर प्रणाम।

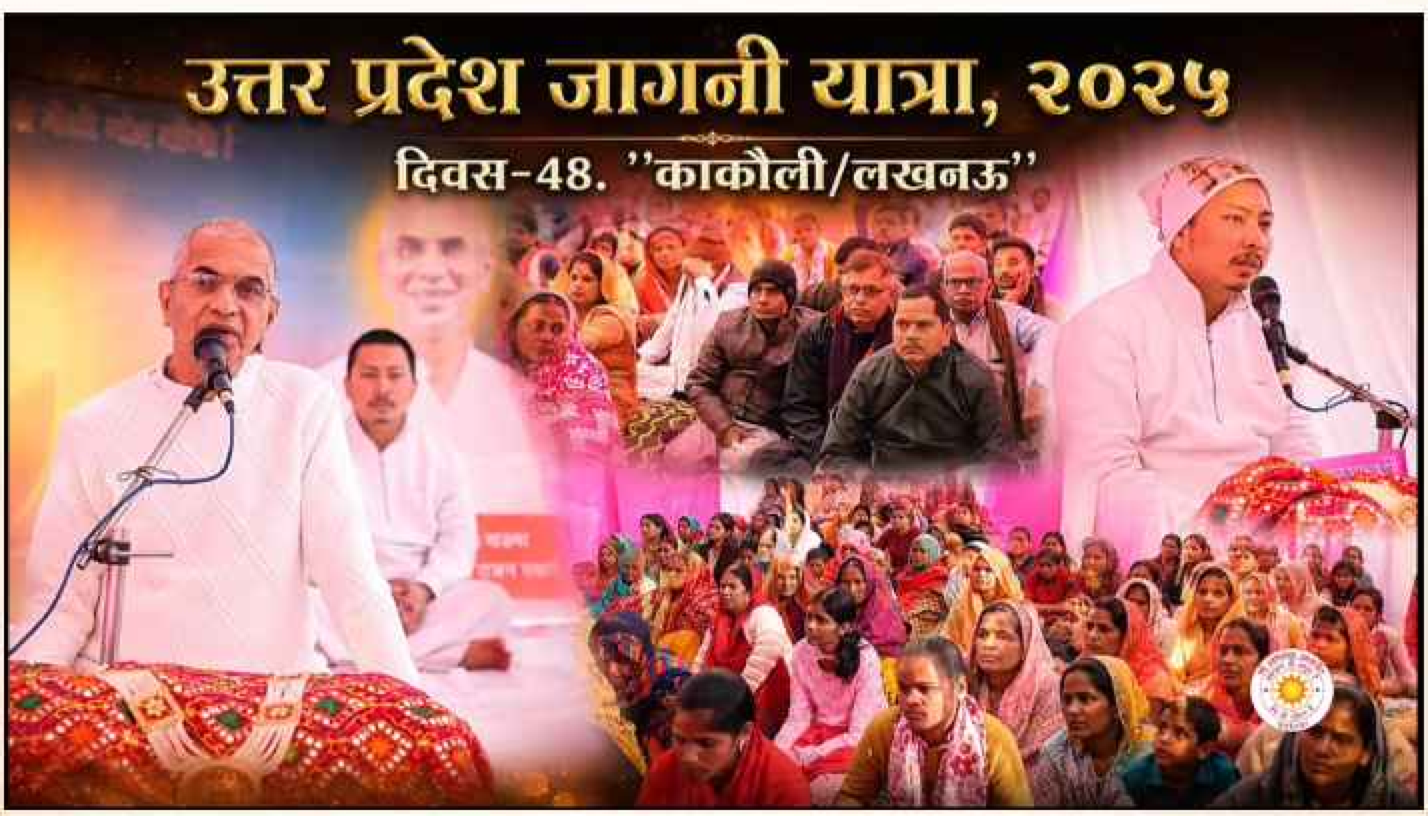

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-49. ''बैलभरिया/बहराईच''

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-50, 51.''बभनान''

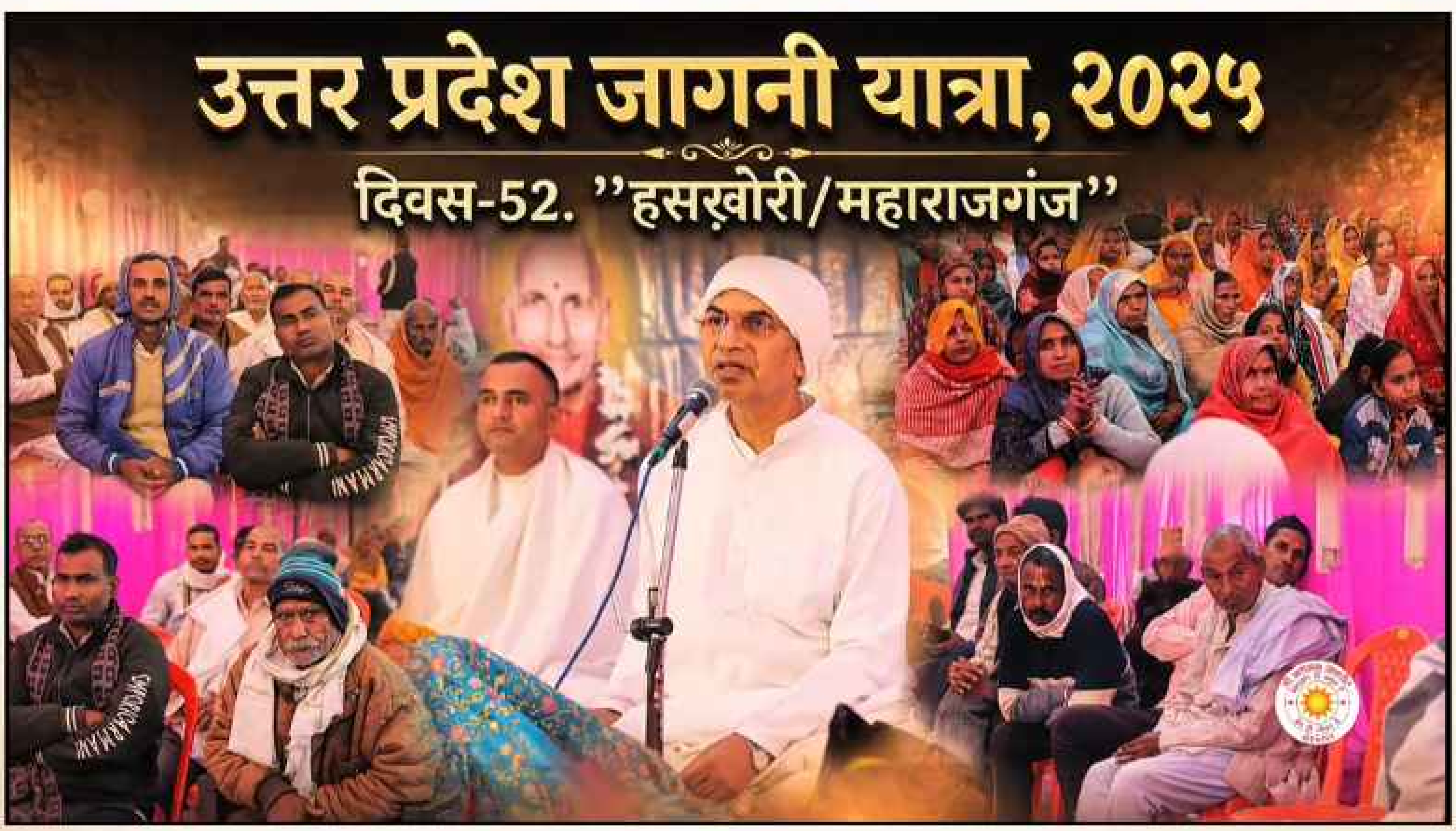
उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-52. ''हसख़ोरी/महाराजगंज''

आरती होत आनंद सों, करत अति घने प्यार

प्रत्येक सुन्दर साथ के लिए तारतम वाणी केवल एक ग्रंथ नहीं, अपितु परब्रह्म परमात्मा की सजीव वाङ्मय उपस्थिति है। उसकी आरती उतारना कोई परम्परागत कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि स्वयं को विसर्जित कर देने की एक अंतरघोषणा है। किन्तु प्राय: हम इसे मात्र एक बाहरी क्रिया के रूप में करते चले जाते हैं। वास्तविक आरती तभी घटित होती है, जब हम अपने तन को दीपक बना लें, मन को उसकी लौ, और उस लौ में प्रेम का घृत उँडेल दें। अर्थात् जहाँ देह साधन बन जाती है और प्रेम के घृत में मन की समस्त सांसारिक कामनाएँ दग्ध हो जाती हैं, उसी शुद्ध प्रकाश में परमात्मा की कृपा का आविर्भाव होता है।

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-56. ''सिसोटार, बलिया''

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-57. ''सलेमपुर, बलिया''

उत्तर प्रदेश जागनी यात्रा, २०२५
दिवस-58. ''जंगीपुर''

'जिनको पहुँचे तारतम, सोई प्रकाश करें'

श्रीजी का यह वाक्य केवल एक संदेश नहीं, बल्कि एक नये युग की घोषणा थी। इस कथन ने उस जड़ सोच को चुनौती दी, जिसने सदियों तक ज्ञान और आत्मिक उन्नति को जन्म, जाति और वर्ण की दीवारों में कैद कर रखा था। श्रीजी इस घोषणा में एक अनंत स्वतंत्रता देते हैं—कि कोई भी व्यक्ति, जिसने तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपना मार्ग पहचाना है, वह किसी भी सामाजिक पहचान का हो, दूसरों की राह को आलोकित करने का समान अधिकार और पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

श्रीजी की दृष्टि में न कोई ऊँचा है, न कोई नीचा—यहाँ सब आत्माएँ एक समान हैं। जिस हृदय में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित होता है, वही हृदय स्वाभाविक रूप से भेदभाव से परे उठकर पूरे संसार को प्रकाश देने के योग्य हो जाता है।

महामत कहें सैयन को, ए सेवा के कहे साथ।
इहां तेही खड़े रहे, जाके धनीएं पकड़े हाथ ।।

जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो।।

नींद निगोड़ी रे छोड़ो आत्म-जागृति किसी त्वरित समाधान या किसी प्रेरक वाक्य से नहीं आती। इसके लिए भीतर की जड़ता को पहचानना पड़ता है, आलस्य के मीठे बहानों को तोड़ना पड़ता है और स्वयं से सच्चा संवाद स्थापित करना पड़ता है। यह मार्ग कठिन अवश्य है, पर यही वह पथ है जहाँ जीवन अर्थ पाता है।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ की विशेष उपलब्धियाँ

4+

लाख कि.मी. की यात्रा

249
60+

भाषाओं में पुस्तकों का अनुवाद

4200+

कार्यक्रमों का सफल आयोजन

130+

पुस्तकें प्रकाशित

25 लाख+

लोगों तक निजानंद दर्शन का प्रसार

1800+

घंटे प्रवचन व कीर्तन

Zoom सेवाओं से जुड़ें

साप्ताहिक ई-गोष्ठी

पूज्य श्री राजन स्वामी जी
ज्ञानपीठ के विद्वानों द्वारा
सत्संग-प्रवचन

ई-गुरुकुलम्

बच्चों को
आध्यात्मिक
संस्कार देने हेतु
संपर्क: 9810399480

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है
प्रेम ही जीवन है
सरसावा

ई-योग कक्षा

शारीरिक एवं
मानसिक
स्वास्थ्य हेतु
संपर्क: 9927260752

ई-संगीत कक्षा

शास्त्रीय संगीत के
सुर साधने हेतु
संपर्क: 9451376349

ज्ञान • संस्कार • स्वास्थ्य • संगीत

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, 2 कि.मी,
नकुड़ रोड, सरसावा, माजरी कलां,
उत्तर प्रदेश -(मो) +91 7088120381

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुकराना ल्याओ बजाए।

यह स्मारिका केवल कुछ पृष्ठों का संकलन नहीं,
बल्कि स्मृतियों, अनुभवों, भावनाओं और ज्ञान की
एक सुंदर यात्रा है।
इन पृष्ठों में संजोया प्रत्येक शब्द सुन्दरसाथ के
स्नेह, समर्पण और आत्मीय भावों की एक सुंदर झलक है।
इन पन्नों में जागनी यात्रा के सुंदर पलों की स्मृतियाँ हैं,
अनुभूतियों की मिठास है और
साथ मिलकर किए गए प्रयासों की सुगंध है।
आप सभी सुन्दरसाथ के इन भावों के लिए हृदय से सुकराना

यह अंत नहीं...
एक सुंदर प्रारंभ है।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ की परनाम कोटान कोट डंडवत
साथ सबको अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यार से।